राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

Www.gauravshalibharat.com

गौरवशाली भारत

वर्ष : 13 , अंक : 113, पृष्ठ : 08, नई दिल्ली बुधवार 08 नवंबर 2023, मूल्य : 1.50/-

नई दिल्ली से प्रकाशित

RNI No .DELHIN/2011/38334

मुख्य अपडेट

अखिल भारतीय साहित्य परिषद, महानगर इकाई, गाज़ियाबाद एवं देवप्रभा प्रकाशन का सम्मान
.... पेज 03

डायल-112 की लड़कियों को पुलिस ने खींच-खींचकर वैन में डाला
.... पेज 05

श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड को बर्खास्त करने का फैसला रद्द हुआ: कोर्ट करेगा मामले की सुनवाई
.... पेज 07

छत्तीसगढ़ में पहले चरण की 20 सीटों पर मतदान खत्म

शाम 5 बजे तक 70.87 प्रतिशत मतदान; तीन जगह नक्सलियों से मुठभेड़

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के लिए पहले चरण की 20 सीटों पर मतदान मंगलवार शाम 5 बजे खत्म हो गया है। शाम 5 बजे तक 70.87 प्रतिशत मतदान हो चुका था। वहीं मतदान के बीच नक्सलियों ने जमकर आतंक मचाया। कांकेर, नारायणपुर, बीजापुर, दंतेवाड़ा और सुकमा में नक्सली वारदातें और मुठभेड़ की घटनाएं सामने आई हैं।

सुकमा में दो अलग-अलग आईईडी ब्लास्ट में 2 जवान घायल हुए हैं। अभी मीनपा इलाके में सुरक्षाबलों और नक्सलियों में मुठभेड़ जारी है। सूत्रों के

मुताबिक, 3 जवान घायल हुए हैं। इसके अलावा कांकेर में हुई मुठभेड़ में गोली लगने से एक किसान घायल हुआ है। बीजापुर में कई नक्सलियों के घायल होने का दावा किया जा रहा है। नारायणपुर में मुठभेड़ के बाद नक्सली भाग निकले।

सबसे ज्यादा खैरागढ़ में 76.31 प्रतिशत, सबसे कम वोटिंग बीजापुर में 40.98 प्रतिशत

जिन 20 सीटों पर मतदान हो रहा है, उनमें से 19 सीटें कांग्रेस के कब्जे में हैं। केवल एक राजनांदगांव सीट भाजपा के पास है। 2018 के चुनाव में दंतेवाड़ा सीट भाजपा के पास थी, लेकिन नक्सली हमले में विधायक की मौत के बाद हुए उप चुनाव में ये सीट कांग्रेस के खाते में चली गई। ऐसे ही खैरागढ़ सीट जेसीसीजे के पास थी, लेकिन उप चुनाव में इस पर भी कांग्रेस का कब्जा हो गया। कवर्धा और मोहला-मानपुर सीट पर भी अभी कांग्रेस विधायक हैं।

233 प्रत्याशियों की किस्मत ईवीएम में बंद

इन 20 सीटों पर 233 प्रत्याशी मैदान में हैं। इनमें पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह, कैबिनेट मंत्री मोहम्मद अकबर, मंत्री कवासी लखमा और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज शामिल हैं। इनके अलावा 198 पुरुष, 25 महिला प्रत्याशी चुनाव लड़ेंगे।

भारत ने कम दूरी की प्रलय मिसाइल का सफल परीक्षण किया

नयी दिल्ली। भारत ने मंगलवार को कम दूरी की सतह से सतह पर मार करने वाली बैलिस्टिक मिसाइल (एसआरबीएम) प्रलय का सफल परीक्षण किया। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) द्वारा विकसित, मिसाइल की मारक क्षमता 350-500 किलोमीटर है और इसकी भार क्षमता 500-1,000 किलोग्राम है। अधिकारियों ने बताया कि परीक्षण सुबह करीब 09.50 बजे ओडिशा तट के पास अब्दुल कलाम द्वीप से किया गया और सभी मिशन उद्देश्यों को पूरा किया।

विधानसभा चुनाव

सूरजपुर जिले के बिश्रामपुर में छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के लिए एक सार्वजनिक बैठक के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का अभिनंदन किया गया।

मिजोरम में शाम चार बजे तक 74.82 प्रतिशत मतदान हुआ

एजेंसी

आइजोल। मिजोरम में 40 सीटों वाले विधानसभा के चुनाव के लिए मंगलवार को शाम चार बजे तक 74.82 फीसदी मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। मिजोरम में एक ही चरण में चुनाव हुआ। हालांकि मतदान केंद्र शाम चार बजे तक बंद हो जाने चाहिए थे, लेकिन मतदान केंद्र बंद होने के समय के बाद

भी कई मतदान केंद्रों के अंदर मतदाताओं की कतारें लगी हुई थीं। राज्य के अतिरिक्त मुख्य निर्वाचन अधिकारी एच. लियानजेला ने कहा कि अंतिम मतदान 80 प्रतिशत से अधिक हो सकता है क्योंकि कई मतदान केंद्रों पर मतदान अभी भी जारी है। लियानजेला, मीडिया सेल के नोडल अधिकारी भी हैं। उन्होंने कहा कि चुनाव शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ और राज्य भर के 1,276 मतदान केंद्रों में से किसी से भी कोई अप्रिय घटना की सूचना नहीं मिली। मतदान प्रक्रिया सुबह सात बजे बड़े उत्साह के साथ शुरू हुई।

मोदी ने डी.बी. चंद्रेगौड़ा के निधन पर जताया शोक

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कर्नाटक के वायोवृद्ध राजनीतिज्ञ और राज्य विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष दारादाहल्ली बायरेगौड़ा (डी.बी.) चंद्रेगौड़ा के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर पोस्ट में कहा,'' श्री डी.बी. चंद्रेगौड़ा जी के निधन से बहुत दुः ख हुआ है। जनसेवा के प्रति निष्ठावान और एक सांसद, विधायक तथा कर्नाटक में मंत्री के रूप में उनके व्यापक अनुभव ने एक अमिट छाप छोड़ी है।

बिहार में 75 प्रतिशत आरक्षण का प्रस्ताव पास

बिहार में देश का पहला जातिगत आर्थिक सर्वे जारी, यादव-भूमिहार सबसे गरीब, कायस्थ सबसे संपन्न

एजेंसी

पटना। नीतीश कुमार की कैबिनेट ने राज्य में आरक्षण का दायरा 60 प्रतिशत से बढ़ाकर 75 प्रतिशत करने का प्रस्ताव पास कर दिया है। सीएम नीतीश कुमार ने बिहार विधानसभा में मंगलवार को ही आरक्षण बढ़ाने का सुझाव दिया था, इसके ढाई घंटे बाद ही कैबिनेट ने इस पर मुहर लगा दी। अब आरक्षण बिल को 9 नंबर को सदन के सदन के पटल रखा जाएगा। सदन से बिल पारित होने के बाद राज्यपाल को भेजा जाएगा।

इससे पहले बिहार में मंगलवार को देश का पहला जातिगत आर्थिक सर्वे पेश किया गया है। इस रिपोर्ट के मुताबिक बिहार में पिछड़ा वर्ग के 33.16 प्रतिशत, सामान्य वर्ग में 25.09 प्रतिशत, अत्यंत पिछड़ा वर्ग में 33.58 प्रतिशत, सुप्रीम कोर्ट के 42.93 प्रतिशत और एसटी 42.7 प्रतिशत गरीब परिवार हैं। सबसे ज्यादा गरीब यादव और भूमिहार हैं और सबसे संपन्न कायस्थ हैं।

सीएम ने कहा कि राज्य में 94 लाख गरीब परिवार हैं। इन गरीब परिवार को 2 लाख रुपए राज्य सरकार की तरफ से मदद किया जाएगा। इसमें सभी जाति के गरीबों को मदद पहुंचाई जाएगी। जमीन खरीदने के लिए 1 लाख दिया जाएगा। इस पर 2 लाख 50 हजार करोड़ रुपए की जरूरत होगी। उन्होंने कहा कि इस लक्ष्य को 5 साल में पूरा करेंगे। अगर विशेष राज्य क दर्जा मिल जाए तो 2 साल मे ही पूरा करेंगे।

सीएम नीतीश कुमार ने कहा कि जातीय जनगणना को लेकर केंद्र से हम लोग मिले थे, तब उन्होंने मौखिक रूप से कह दिया गया कि आप अपने राज्य में करा लीजिए। इसके बाद निर्णय हुआ कि जनगणना केंद्र करेगा और हम लोग जातीय गणना करेंगे।

उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री वीपी सिंह से देश में जातीय जनगणना कराने की मांग की थी, लेकिन नहीं हुआ। कुछ लोग बोल रहे हैं कि इस जाति की आबादी बढ़ा दिया और जाति को घटा दिया। कैसे कोई ये बोलता है..जब देश में जातीय जनगणना हुआ ही नहीं है। ये पूरा बोगस बात लोग बोल रहे हैं। अगर किसी को दिक्कत है तो केंद्र जातीय जनगणना करा लें।

सवर्ण में हिन्दू-मुसलमान की 7 जातियां शामिल

बिहार सरकार ने जिन जातियों को सवर्णों में शामिल किया है, उसमें हिन्दू और मुसलमान धर्म की 7 जातियां हैं। सामान्य वर्ग में भूमिहार सबसे ज्यादा 25.32 प्रतिशत गरीब हैं। कायस्थ 13.83 प्रतिशत गरीब आबादी के साथ सबसे संपन्न हैं। वहीं पिछड़ा वर्ग में यादव जाति के लोग सबसे गरीब हैं। बिहार विधानसभा के शीतकालीन सत्र के दूसरे दिन मंगलवार को जातीय गणना की आर्थिक रिपोर्ट की कॉपी विधायकों को बांटी गई। 2 अक्टूबर को सरकार ने जातीय गणना की रिपोर्ट जारी की थी।आबादी की शैक्षणिक स्थिति की बात करें तो 7 फीसदी लोग ग्रेजुएट हैं। इधर प्रवासी बिहारियों को लेकर चौंकाने वाला आंकड़ा सामने आया है। महज 1.22 फीसदी आबादी ही राज्य से बाहर रहती है।

प्रदर्शन

तिरुवनंतपुरम में राज्य सचिवालय के सामने पुलिस लाठीचार्ज के खिलाफ प्रदर्शन के दौरान केरल छात्र संघ के कार्यकर्ताओं को तितर-बितर करने के लिए पुलिस ने पानी की बौछारें कीं।

भेदभाव रहित,समावेशी व्यापार प्रणाली की जरूरत पर जोर

नयी दिल्ली। नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी बी.वी.आर. सुब्रमण्यम एक भेदभाव रहित और समावेशी व्यापार प्रणाली की जरूरत पर जोर देते हुए कहा है कि यह विकास और समृद्धि के इंजन के रूप में व्यापार को सुविधाजनक बनाती है।

नीति आयोग की मंगलवार को यहां आयोजित 'विकास और समृद्धि के लिए समावेशी व्यापार' को संबोधित करते हुए श्री सुब्रमणयम ने कहा कि समावेशी व्यापार तथा लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं के क्षेत्र में सभी के विकास और समृद्धि के लिए मजबूत, टिकाऊ, संतुलित तथा समावेशी व्यापार अपनाया जाना चाहिए।

इस अवसर पर नीति आयोग के सदस्य डॉ. अरविंद विरमानी ने 'मैपिंग ग्लोबल वैल्यू चेन' सत्र को संबोधित करते हुए श्रम-गहन आपूर्ति श्रृंखलाओं, नीति निर्धारण के लिए संस्थागत कारकों और कराधान प्रणाली को सरल बनाया जाना चाहिए।

दिल्ली-प्रदूषण : पांच राज्यों को पराली जलाने को रोकने का आदेश

प्रदूषण के मद्देनजर पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और दिल्ली को आदेश

नयी दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में 'जानलेवा' प्रदूषण के मद्देनजर मंगलवार को पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और दिल्ली सरकारों को पराली जलाने पर तत्काल रोक लगाने का निर्देश दिया।

न्यायमूर्ति संजय किशन कौल और सुधांशु धूलिया की पीठ ने संबंधित सरकारों से कहा कि उसे या तो बलपूर्वक कार्रवाई करके या प्रोत्साहन के जरिए पराली जलाने से रोकना होगा।

पीठ ने पराली जलाने पर रोक के अमल के लिए स्थानीय थाना प्रमुख को पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) और मुख्य सचिव की निगरानी में निर्देश को लागू करने के लिए जिम्मेदार बनाया।

पीठ ने सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता, वरिष्ठ अधिवक्ता विकास सिंह, गोपाल शंकरनारायणन और न्याय मित्र वरिष्ठ अधिवक्ता अपराजिता सिंह तथा अन्य की दलीलें सुनने के बाद यह आदेश पारित किया।

पीठ ने अपने आदेश में कहा,पराली जलाना प्रदूषण का बड़ा हिस्सा है। इसे रोकना चाहिए। यह एक प्रमुख मुद्दा और प्रदूषण के लिए जिम्मेवार है। धान की खेती एक समस्या है। तुरंत कुछ किया जाना चाहिए। यह फसल राज्य के जल स्तर को भी नष्ट कर रही है। न्यूनतम समर्थन मूल्य की वजह से दूसरे राज्यों से अनाज की तस्करी हो रही है।

शीर्ष अदालत ने कहा,हम चाहते हैं कि इस मुद्दे को कल सुलझा लिया जाए, ताकि अगले साल इसकी पुनरावृत्ति न हो।

पीठ ने यह भी कहा कि पराली जलाने और वाहन प्रदूषण के अलावा समस्या के कई महत्वपूर्ण बिंदु हैं। शीर्ष अदालत ने बुधवार को सभी हितधारकों की एक बैठक बुलाने का आदेश दिया। वजह यह कि अदालत ने इस मामले में अगली सुनवाई शुक्रवार को करने का निर्णय लिया है।

पीठ ने कहा,दिल्ली के निवासी पीड़ित हैं क्योंकि हम इस अवधि में गंभीर समस्या का समाधान ढूंढने में विफल रहे हैं।

दूसरी भारत जोड़ो यात्रा दिसंबर-फरवरी के बीच

यह गुजरात से मेघालय तक होगी, पहली यात्रा 145 दिन चली थी

नई दिल्ली। कांग्रेस की दूसरी भारत जोड़ो यात्रा दिसंबर 2023 से फरवरी 2024 के बीच हो सकती है। राहुल गांधी गुजरात से मेघालय तक यात्रा करेंगे। इस बार यात्रा सिर्फ पैदल नहीं होगी, कुछ दूरी वाहनों से भी तय की जाएगी।

रूट का ऐलान महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष नाना पटोले ने 8 अगस्त को किया था। कांग्रेस नेता पी. चिदंबरम ने सितंबर में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा था कि पार्टी भारत जोड़ो यात्रा के दूसरे चरण की योजना बना रही है।

राहुल गांधी की पहली भारत जोड़ो यात्रा तमिलनाडु के कन्याकुमारी से 7 सितंबर को शुरू हुई थी। 30 जनवरी को जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में इसका समापन हुआ था। 145 दिन चली इस यात्रा ने करीब 3570 किमी का सफर तय किया था।

इस यात्रा ने 14 राज्यों की सीमाओं को छुआ। इनमें तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, यूपी, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब और जम्मू-कश्मीर शामिल हैं।

श्रीनगर में यात्रा के समापन के मौके पर शेर-ए-कश्मीर क्रिकेट स्टेडियम में राहुल ने कहा था- मैंने यह यात्रा अपने लिए या कांग्रेस के लिए नहीं बल्कि देश की जनता के लिए की है। हमारा उद्देश्य उस विचारधारा के खिलाफ खड़ा होना है जो इस देश की नींव को नष्ट करना चाहती है।

राहुल ने 12 जनसभाओं को संबोधित किया था

यात्रा के दौरान राहुल गांधी ने 12 सभाओं को संबोधित किया था, 100 से ज्यादा बैठकें और 13 प्रेस कॉन्फ्रेंस की थीं। उन्होंने चलते हुए 275 से ज्यादा चर्चाओं में हिस्सा लिया, जबकि कहीं रुककर 100 के करीब चर्चाएं कीं।

बदायूं में संदिग्ध परिस्थितियों में मिले मां बेटी के शव

बदायूँ। उत्तर प्रदेश में बदायूं जिले के बिल्सी क्षेत्र में फांसी के एक फंदे से लटके मिले मां बेटी के शव मिलने से सनसनी फैल गयी। मृतका का पुत्र तीन दिन पहले गांव की एक लड़की के साथ भाग गया था।

पुलिस सूत्रों ने मंगलवार को बताया कि बिल्सी कोतवाली क्षेत्र के बैरमई बुजुर्ग गांव निवासी कुसुम (52) और उनकी बेटी मौनी (20) के शव अपने ही घर में छत की कड़ी से फांसी के फंदे पर झूलते मिले। पुलिस के मुताबिक मृतका व उसकी अविवाहित बेटी अत्यंत ग़रीब घर से हैं और गांव में अकेले ही रहते हैं। मृतका का बेटा गांव से ही तीन दिन पूर्व एक लड़की को लेकर फरार हो गया था, जिसके संबंध में बिल्सी कोतवाली में मुकदमा दर्ज है। ऐसे में पुलिस विभिन्न बिन्दुओं पर जांच पड़ताल में जुटी हुई है। फिलहाल दोनों शवों को पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉक्टर ओपी सिंह ने बताया कि कुसुमा का बेटा अनिल उर्फ पप्पू तीन दिन पहले गांव से पड़ोस की रहने वाली एक लड़की को भगा कर लेकर गया है जिसका अभियोग बिल्सी कोतवाली में पंजीकृत है। अब सूचना मिली है कि लडके की मां और बहन ने सीढ़ी लगाकर छत पर फंदा बनाकर फांसी लगा ली है। गांव वालों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। फिलहाल पंचनामा की कार्रवाई कर चौक जिला अस्पताल की मोर्चरी में रखवा दिए गए हैं । मामले की जांच पड़ताल की जा रही है। पोस्टमार्टम के आधार पर आगे की कार्रवाई की जायेगी।

हरियाणा के 7 जिलों में 5वीं तक स्कूल बंद

चंडीगढ़। हरियाणा में बढ़ते वायु प्रदूषण को देख 7 जिलों में प्राइमरी स्कूल बंद कर दिए हैं। मंगलवार को जींद और कैथल के बाद पानीपत व रोहतक में भी 5वीं क्लास यानी प्राइमरी स्कूल तक छुट्टियां कर दी गई हैं। इससे पहले गुरुग्राम, फरीदाबाद और झज्जर में नर्सरी से प्राइमरी तक स्कूल बंद किए जा चुके हैं। दिल्ली एनसीआर से सटे जिलों के डीसी को शिक्षा निदेशालय ने स्कूलों में छुट्टी करने के अधिकार दिए थे। हरियाणा के 14 जिले एनसीआर में आते हैं। इनमें करनाल, जींद, पानीपत, सोनीपत, रोहतक, भिवानी, चरखी दादरी, झज्जर, गुरुग्राम, फरीदाबाद, रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, नूंह और पलवल हैं। इनमें से गुरुग्राम, फरीदाबाद, झज्जर, रोहतक पानीपत और जींद में स्कूल बंद किए जा चुके हैं। बाकी जिलों को लेकर भी जल्द फैसला हो सकता है।

मांगे

सरकारी कर्मचारी का दर्जा और मानदेय 5 गुना बढ़ाने की मांग, विधानसभा घेरने निकली थीं

पटना में 10 हजार आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं पर बल प्रयोग

पटना। बिहार विधानसभा का घेराव करने निकलीं आंगनबाड़ी सेविकाओं को पुलिस ने बल प्रयोग कर हटाया। पुलिस ने वाटर कैनन का भी इस्तेमाल किया है। इसमें कई लोगों को चोटें आई हैं। सेविकाओं के साथ पहुंचे उनके परिवार के लोगों पर भी पुलिस ने बल प्रयोग किया है। घायलों को पुलिस ने अपनी गाड़ी से अस्पताल पहुंचाया है।

बिहार में अपनी मांगों को लेकर करीब 5 हजार आंगनबाड़ी केंद्रों की 10 हजार सेविकाएं 29 सितंबर से अनिश्चितकालीन हड़ताल पर हैं। मानदेय की जगह वेतन और सरकारी कर्मचारी का दर्जा देने की मांग को लेकर आंगनबाड़ी सेविकाएं विधानसभा का घेराव करने निकली थीं।

सेविकाओं का कहना है कि तेजस्वी यादव ने कहा था कि हमारी सरकार बनेगी तो मानदेय डबल कर देंगे। हमने कोरोना काल में मौत को सामने देखकर काम किया गया है। अभी 5,900 रुपए मिल रहे हैं। इससे परिवार नहीं चलेगा। तेजस्वी यादव ने धोखा दिया है। प्रदर्शन करने पर लाठीचार्ज किया गया है। यह पूरी तरह से गलत है।

अभी बिहार में आंगनबाड़ी सेविकाओं को 5 हजार 950 सैलरी दी जाती है। वो 25 हजार रुपए की मांग कर रही हैं। वहीं, आंगनबाड़ी सहायिका की सैलरी 2,700 है। वो 18 हजार की मांग कर रही हैं।

आज भी जारी रहेगा प्रदर्शन

आंगनबाड़ी सेविका संघ के महासचिव कुमार विंदेश्वर सिंह ने विन्देश्वर सिंह कहा कि देर शाम धरना-प्रदर्शन खत्म कर दिया गया। हालांकि, सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि हमारी मांग पूरी नहीं हुई तो कल भी आंदोलन जारी रहेगा। सात घंटे धरना-प्रदर्शन करने के बाद डाक बंगला चौराहा खाली कर दिए हैं।

महिला पुलिस की लाठी से मुजफ्फरपुर के औराई से आई आंगनबाड़ी सेविका संघ की उपाध्यक्ष प्रतिमा देवी का सिर फट गया है। वो घायल हो गई हैं। बेहोश हैं। उनका काफी खून निकला है। इधर, एसएसपी राजीव मिश्रा का कहना है कि प्रदर्शनकारियों की खुद की चलाई ईंट से ही वो घायल हुए हैं। हमने कोई बल प्रयोग नहीं किया है।

विधानसभा के पास से पुलिस ने सेविकाओं को हटा दिया, लेकिन साढ़े 11 बजे से वो डाकबंगला चौराहे पर जुटी हुई हैं। इसके चलते स्टेशन और गांधी मैदान आने-जाने वाले रास्ते पर जाम लग गया है। मौके पर भारी पुलिस बल मौजूद है। समझाने की कोशिश भी जारी है।

शार्ट न्यूज

राजस्थान विधानसभा चुनाव के लिए 2605 उम्मीदवारों ने किए नामांकन पत्र दाखिल

जयपुर। राजस्थान में आगामी 25 नवंबर को होने वाले विधानसभा चुनाव में राज्य के सभी दो सौ विधानसभा क्षेत्रों के लिए 2605 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किए हैं जिनमें करीब तीन सौ महिला प्रत्याशी शामिल है। राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी प्रवीण गुप्ता ने बताया कि सोमवार को नामांकन के अंतिम दिन 1543 उम्मीदवारों ने 1974 नामांकन पत्र दाखिल किए गए। प्रदेश में चुनाव के लिए गत 30 अक्टूबर को नामांकन भरना शुरू किया गया और इसके आखिरी दिन छह नवंबर तक कुल 2605 उम्मीदवारों ने 3436 नामांकन पत्र भरे। इस दौरान 299 महिला उम्मीदवारों ने अपने नामांकन पर्चा भरा। गुप्ता ने बताया कि प्रदेश में सबसे अधिक 31 उम्मीदवारों ने आदर्श नगर विधानसभा क्षेत्र में नामांकन भरे। इसके बाद कामां में 28, आहोर और भीलवाड़ा में 27-27 और अजमेर उत्तर, साँगानेर और सूरसागर में 26 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र भरे। सबसे कम 4-4 उम्मीदवारों ने दूदू और लालसोट में, चोहटन में पांच उम्मीदवारों ने और रेवदर एवं चाकसू विधानसभा क्षेत्रों में 6-6 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र भरे। उन्होंने बताया कि नामांकन पत्रों की जांच सात नवम्बर को पूर्वाह्न 11 बजे से रिटर्निंग अधिकारी के कार्यालय में ऑब्ज़र्वर की उपस्थिति में होगी और नामांकन वापसी की अंतिम तारीख नौ नवम्बर है।

राजावत की निर्दलीय चुनाव लड़ने की घोषणा

कोटा। राजस्थान के कोटा में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता भवानी सिंह राजावत ने आगामी विधानसभा आम चुनाव में उन्हें पार्टी का टिकट नहीं मिलने पर पार्टी से बगावत कर निर्दलीय के रूप में चुनाव लड़ने की सोमवार को घोषणा कर दी। राजावत ने पार्टी से अपना चार दशकों पुराना नाता छूटने पर गहरा अफसोस तो जताया लेकिन कहा कि कार्यकर्ताओं और जनता के मान सम्मान के लिए यह उनकी अपनी लड़ाई है और इसीलिए वह चुनाव मैदान में उतरे हैं। वह जनप्रतिनिधि है और जनता से जुड़े रहकर ही जनता की समस्याओं को समझ कर उन्हें हर मंच से उठाना चाहते हैं। इसलिए एक बार फिर जनता के बीच हैं। राजावत ने नामांकन के आखिरी दिन निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में कोटा जिले की लाडपुरा विधानसभा सीट से अपना दूसरा नामांकन पर्चा भरा। इसके पहले वह शनिवार को भाजपा के प्रत्याशी के रूप में अपना नामांकन पर्चा दाखिल किया था। तब राजावत ने शनिवार को जारी एक बयान में कहा था कि यदि रविवार शाम तक भाजपा नेतृत्व ने लाडपुरा विधानसभा सीट से प्रत्याशी को नहीं बदला तो वे सोमवार को निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में अपना नामांकन दाखिल करेंगे।

दीपोत्सव मेले में ग्रीन पटाखों में 75 प्रतिशत तक छूट

जयपुर। राजस्थान की राजधानी जयपुर में उपभोक्ता संघ द्वारा आयोजित उपहार सहकार दीपोत्सव मेले में शिवकाशी (तमिलनाडु) के ग्रीन पटाखों में 60 से 75 प्रतिशत तक की छूट दी जा रही है। उपभोक्ता संघ के महाप्रबंधक राजेन्द्र सिंह ने बताया कि भवानी सिंह रोड़ स्थित नवजीवन सहकारी बाजार में आयोजित यह मेला 11 नवम्बर तक पूर्वाह्न ग्यारह से रात नौ बजे तक आयोजित किया जायेगा। मेले का मुख्य आकर्षण शिवकाशी (तमिलनाडु) के ग्रीन पटाखे हैं। जिन पर 60 से 75 प्रतिशत तक की छूट दी जा रही है। मेले में एमएमटीसी-पैम्प के सोने एवं चांदी के सिक्के उचित मूल्य पर उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराये जा रहे हैं। मेले के माध्यम से दीपावली सीजन पर उपभोक्ताओं को एक ही छत के नीचे आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है। उन्होंने बताया कि उपहार दीपोत्सव मेलों में जयपुरवासियों के लिए खुले व गिफ्ट पैक में ग्रीन पटाखों, बर्तन, सजावटी फ्लावर, लाइट्स, डिजाइनदार कैन्डल्स, बेडशीट्स के साथ ही पूजन सामग्री भी उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा सूखे मेवे के उपहार पैक, नमकीन, परिधान और हाउस होल्ड सामान भी उपलब्ध है।

आंगनबाड़ी सेविकाओं के मुद्दों को लेकर भाजपा का विधानसभा में हंगामा

पटना । बिहार विधान मंडल के शीतकालीन सत्र के दूसरे दिन मंगलवार को दोनों सदनों में आंगनबाड़ी सेविकाओं के मुद्दे को लेकर विपक्ष के सदस्यों ने जोरदार हंगामा किया । विधानसभा में पूर्वाहन 11:00 बजे कार्यवाही शुरू होते ही भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और भारत की कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी लेनिनवादी (भाकपा माले) के सदस्यों ने विधानसभा का घेराव करने आई आंगनबाड़ी सेविकाओं पर लाठीचार्ज और पानी का बौछार के इस्तेमाल की निंदा करते हुए हंगामा शुरू कर दिया । भाजपा के सदस्य आंगनबाड़ी सेविकाओं के समर्थन में नारे लगाते हुए सदन के बीच में आ गए । बाद में सभा अध्यक्ष की अनुमति मिलने पर नेता प्रतिपक्ष विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि आंगनबाड़ी सेविकाओं को राज्य सरकार की ओर से मात्र 1450 रुपये मानदेय मिलता है, शेष राशि केंद्र सरकार देती है । उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश, तमिलनाडु और केरल समेत कई राज्यों में बिहार से ज्यादा राशि आंगनबाड़ी सेविकाओं को दी जाती है । बिहार सरकार भी आंगनबाड़ी सेविकाओं को दी जाने वाली मानदेय राशि में वृद्धि क्यों नहीं करती है । सरकार इसका जवाब दे । इसके बाद सभाध्यक्ष अवध बिहारी चौधरी ने जैसे ही प्रश्नोत्तर काल शुरू किया, भाजपा के सदस्य एक बार फिर सदन के बीच में आकर शोरगुल करने लगे । शोरगुल के बीच ही शिक्षा मंत्री प्रोफेसर चंद्रशेखर ने कुछ प्रश्नों के उत्तर दिए।

हवा-हवाई घोषणाएं करने वाली पार्टियां सत्ता में काबिज होते ही सब भूल जाती हैं: मायावती

दमोह। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) सुप्रीमो मायावती ने आज भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और कांग्रेस पर आरोप लगाते हुए कहा कि हवा हवाई घोषणाएं करने वाली पार्टियां सत्ता में काबिज होने के बाद सब भूल जाती हैं। मायावती ने जिले की पथरिया में आमसभा को संबोधित किया। उन्होंने भाजपा-कांग्रेस पर तंज कसते हुए कहा कि आने वाले चुनाव में सभी विरोधी पार्टियों के नेता साम-दाम दंड-भेद की राजनीति कर आपको भ्रमित करने का काम करेंगे, लेकिन आपको सावधान रहना है। उन्होंने कहा कि हवा-हवाई, प्रलोभन भरे घोषणा पत्रों के भ्रमजाल में बिल्कुल न फंसे। हवा हवाई घोषणा करने वाली पार्टियां सत्ता के सिंहासन पर बैठते ही सब भूल जाती हैं। बसपा सुप्रीमो ने कहा कि हम इस बार पूरी दम के साथ विधानसभा का चुनाव लड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि चुनाव प्रचार के दौरान कांग्रेस के बड़े नेता कहते हैं कि अति पिछड़े वर्ग को पूरा लाभ दिलाने के लिए जातिगत जनगणना होना जरूरी है, लेकिन इन्हें ये मालूम होना चाहिए कि जब अंग्रेजों के जाने के बाद लंबे समय तक कांग्रेस पार्टी सत्ता में रही, तब कांग्रेस की सत्ता के दौरान सबसे पहले पिछड़े वर्ग के लोगों को आरक्षण देने के लिए जो सर्वे हुआ था, उसे कांग्रेस पार्टी की सरकार लागू नहीं कर पाई।

मोदी धान खरीद को लेकर किसानों को कर रहे हैं गुमराह : प्रियंका गांधी

कुरूद(छत्तीसगढ़) । कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने समर्थन मूल्य पर धान खरीद को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर किसानों को गुमराह करने का आरोप लगाया है। गांधी ने आज यहां एक बड़ी चुनावी सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मोदी छत्तीसगढ़ में समर्थन मूल्य पर धान खरीद केन्द्र सरकार द्वारा करने के बयान दे रहे है। अगर केन्द्र सरकार धान की खरीद कर रही है तो उत्तरप्रदेश और दूसरे भाजपा शासित राज्यों में क्यों किसानों को बारह सौ - चौदह सौ में धान बेचना पड़ रहा है। स्वयं मोदी के चुनाव क्षेत्र वाराणसी में फिर क्यों किसान बारह सौ - चौदह सौ में धान बेचने को मजबूर है।उन्होने कहा कि सच यह हैं कि छत्तीसगढ़ में धान की खरीद राज्य की कांग्रेस सरकार कर रही है। उन्होने लोगो से धर्म एवं जाति के नाम से गुमराह करने वालों से सावधान रहने की अपील करते हुए कहा कि चुनाव के समय जज्बात को उभार कर वोट लेने वाले आपका भला नही कर सकते है। देश में सबसे ज्यादा धान की कीमत देने वाला राज्य छत्तीसगढ़ हैं तो सबसे कम बेरोजगारी दर यहां पर है। भाजपा शासित राज्यों का बहुत बुरा हाल है ।मध्यप्रदेश में इनकी सरकार ने साढ़े तीन वर्ष में महज 21 रोजगार दिए है।

नोएडा-गाजियाबाद में भी बंद रहेंगे स्कूल, 10 नवंबर तक की गई छुट्टी

ग्रेड 6-12 के लिए स्कूलों को ऑनलाइन कक्षाओं में शिफ्ट होने का विकल्प दिया गया

नोएडा। देश की राजधानी दिल्ली समेत एनसीआर में प्रदूषण चरम पर है। ऐसे में दिल्ली सरकार ने पहले ही स्कूलों में छुट्टी का एलान कर दिया। अब गौतमबुद्ध नगर और गाजियाबाद प्रशासन ने भी स्कूलों को बंद कर दिया है। प्रदूषण के कारण तीन दिन स्कूल बंद रहेंगे। आठ से लेकर 10 नवंबर तक जिले में स्कूलों की छुट्टी रहेगी। यह आदेश 9वीं कक्षा तक के लिए लागू होगा।

दिल्ली में स्कूल 10 तक बंद

दिल्ली में भी प्राइमरी स्कूलों को 10 नवंबर तक बंद करने का फैसला लिया गया। दिल्ली में पांचवीं तक के सभी स्कूल बंद रहेंगे। दिल्ली सरकार ने बढ़ते प्रदूषण को लेकर निर्णय लिया है। दिल्ली की शिक्षा मंत्री आतिशी ने एक्स पर लिखा था कि प्रदूषण का स्तर लगातार ऊंचा बना हुआ है, इसलिए दिल्ली में प्राथमिक स्कूल 10 नवंबर तक बंद रहेंगे।

ग्रेड 6-12 के लिए स्कूलों को ऑनलाइन कक्षाओं में शिफ्ट होने का विकल्प दिया गया है। दिल्ली में सभी स्कूलों की छुट्टी है। मंगलवार को दिल्ली में वायु गुणवत्ता सूचकांक यानी एक्यूआई 421 दर्ज किया गया। हालांकि, सोमवार के मुकाबले 33 अंकों की गिरावट दर्ज की गई। जहांगीरपुरी और वजीरपुर समेत 24 इलाकों में हवा गंभीर श्रेणी में दर्ज की गई।

सुबह से ही स्मॉग की चादर छाई रही। ऐसे में यही स्थिति बृहस्पतिवार तक बने रहने का अनुमान है। एनसीआर में दिल्ली के बाद ग्रेटर नोएडा की हवा अधिक प्रदूषित रही। दिल्ली में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रैप) का चौथा चरण लागू कर दिया गया है। दिल्ली में मंगलवार को 24 इलाकों में एक्यूआई गंभीर श्रेणी में दर्ज किया गया। जबकि रविवार के मुकाबले चार इलाकों में गिरावट दर्ज की गई। पांच इलाकों में हवा बेहद खराब रही। इसमें जहांगीरपुरी में 458, वजीरपुर में 455, पटपड़गंज में 453, पंजाबी बाग में 450, आरके पुरम में 447, रोहिणी में 445 एक्यूआई दर्ज किया गया। मुंडका में 439, आनंद विहार में 433 समेत कई इलाकों में एक्यूआई गंभीर श्रेणी में दर्ज किया गया। डीटीयू में 398 व जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में 362 समेत छह इलाकों में एक्यूआई बेहद खराब श्रेणी में रहा।

एसजीपीसी के वार्षिक चुनाव आज, हरजिंदर सिंह धामी शिअद उम्मीदवार

अमृतसर। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति (एसजीपीसी) के अध्यक्ष पद का वार्षिक चुनाव बुधवार को तेजा सिंह समुद्री हाल में आयोजित होने जा रही एसजीपीसी की आम सभा में किया जायेगा। शीर्ष पद के अलावा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, कनिष्ठ उपाध्यक्ष और महासचिव के अलावा एसजीपीसी की 11 सदस्यीय कार्यकारी समिति के चुनाव भी एक साथ होंगे।

शिरोमणि अकाली दल ने एसजीपीसी के निवर्तमान अध्यक्ष हरजिंदर सिंह धामी को इस बार भी गुरुद्वारा निकाय के शीर्ष पद के लिए शिरोमणि अकाली दल (शिअद) का उम्मीदवार घोषित किया है। यह तीसरी बार है जब सुखबीर ने इस पद के लिए उनका समर्थन किया है। हरजिंदर सिंह धामी पहले ही एसजीपीसी अध्यक्ष के रूप में दो साल पूरे कर चुके हैं।

शिरोमणि अकाली दल के प्रवक्ता दलजीत सिंह चीमा ने सुखबीर की ओर से सोशल नेटवर्किंग साइट एक्स पर यह घोषणा की। शिअद अध्यक्ष का हवाला देते हुए चीमा ने लिखा, मेरी पार्टी के एसजीपीसी के सभी सदस्यों ने उनके साथ मेरी एक-एक बैठक में उनके (धामी के) कामकाज पर पूरा भरोसा जताया है। इसलिये, वह वर्तमान चुनाव के लिये हमारी पसंद बने रहेंगे।

इस घोषणा के बाद, धामी ने ट्वीट किया, गुरु के आशीर्वाद से, शिअद ने एक बार फिर मुझे शीर्ष सिख निकाय एसजीपीसी के प्रमुख पद के लिये अपने प्रतियोगी के रूप में चुना है। मैं शिअद अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल, पार्टी के अन्य पदाधिकारियों और सभी एसजीपीसी सदस्यों को दिल से धन्यवाद देता हूं।

पंजाब में पराली जलाने के मामलों में 70 प्रतिशत की कमी

चंडीगढ़। आम आदमी पार्टी(आप) पंजाब के प्रवक्ता मलविंदर सिंह कंग ने मंगलवार को कहा कि पिछले दो वर्षों में पंजाब सरकार द्वारा किए गये प्रयासों के कारण पंजाब में पराली जलाने के मामलों में 70 प्रतिशत कमी आई है।

कंग ने उच्चतम न्यायालय की टिप्पणी पर प्रतिक्रिया देते हुये कहा कि मान सरकार राज्य में पराली जलाने को रोकने के लिए लगातार ठोस कदम उठा रही है। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने संकेत दिया है कि दिल्ली में प्रदूषण की भयावह स्थिति के लिए केवल पंजाब के किसान जिम्मेदार नहीं हैं। अदालत ने यूपी, हरियाणा, राजस्थान और केंद्र सरकार को भी इस समस्या पर अंकुश लगाने के लिए आवश्यक कदम उठाने को कहा है।

कंग ने कहा कि पराली जलाना किसानों की मजबूरी रही है लेकिन हमारी सरकार ने जैव ईंधन कारखानों जैसे विकल्प प्रदान किए जो किसानों से धान की पराली खरीदते हैं। इससे किसानों को मदद मिलती है क्योंकि उन्हें पराली नहीं जलानी पड़ती और इसके बदले उन्हें अच्छा पैसा भी मिलता है। कंग ने कहा कि आज दिल्ली जिस प्रदूषण का सामना कर रही है, उसके लिए केवल किसान ही जिम्मेदार नहीं हैं। इसपर केंद्र सरकार को अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करनी चाहिए और राष्ट्रीय राजधानी में सभी प्रकार के प्रदूषण पर अंकुश लगाने के लिए कदम उठाने चाहिए।

कंग ने कहा कि पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने हरियाणा सरकार और मोदी सरकार से इस समस्या से निपटने के लिये एक निधि स्थापित करने को कहा है लेकिन केंद्र सरकार ने हमारे प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

एल्विश यादव को नोएडा पुलिस ने भेजा नोटिस, जल्द होगी पूछताछ

इस मामले में गिरफ्तार पांचों आरोपियों की पुलिस कस्टडी रिमांड की सुनवाई कोर्ट में जारी है

नोएडा। रेव पार्टी में सांपों का जहर सप्लाई करने के मामले में घिरे एल्विश यादव की मुसीबत अब बढ़ गई है। नोएडा पुलिस ने एलविश यादव को नोटिस भेज कर पूछताछ के लिए बुलाया है। इस मामले में गिरफ्तार पांचों आरोपियों की पुलिस कस्टडी रिमांड की सुनवाई कोर्ट में जारी है। इस मामले में पुलिस की सा टीम में जांच में जुटी हुई है।

नोएडा कमिश्नरेट के डीसीपी हरीश चंदर ने बताया कि रेव पार्टी में सांपों का जहर सप्लाई करने के मामले में आरोपी एल्विस यादव को नोटिस भेज कर पूछताछ के लिए बुलाया गया है। अब पुलिस की टीम इस प्रकरण में एल्विस यादव से पूछताछ करेगी और इसके बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। वही सूरजपुर स्थित कोर्ट में इस मामले में गिरफ्तार पांचो आरोपियों की 14 दिन की डिमांड पर सुनवाई चल रही है। आरोपियों की पुलिस कस्टडी रिमांड मिलते ही अलग-अलग टीम इनसे पूछताछ करेंगी।

हाईप्रोफाइल मामले की जांच कोतवाली सेक्टर-49 से हटाकर कोतवाली सेक्टर-20 को सौंप दी गई है। पीपुल फॉर एनिमल (पीएफए) की ओर से शुक्रवार को कोतवाली सेक्टर-49 में सांपों का जहर सप्लाई करने के मामले में एल्विश यादव समेत छह के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी।

मामले में पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया गया था हालांकि एल्विश पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। अब पुलिस एल्विश पर कार्रवाई की तैयारी में जुटी है। पुलिस कमिश्नर लक्ष्मी सिंह ने बताया कि एल्विश को नोटिस देकर पूछताछ के लिए बुलाया जाएगा।

वहीं इस जांच को आगे बढ़ाने व साक्ष्य जुटाने के लिए पुलिस ने सोमवार को कोर्ट में अर्जी देकर गिरफ्तार राहुल, टीटूनाथ, जयकरण, नारायण और रविनाथ की 14 दिन की पुलिस कस्टडी रिमांड मांगी है। रिमांड मिलने के बाद पुलिस पांचों से पूछताछ करेगी।

पुलिस पांचों आरोपियों की कॉल रिकार्ड खंगाल रही है। इससे स्पष्ट हो जाएगा कि आरोपियों की एल्विश से बात होती थी या नहीं। वहीं एल्विश के खिलाफ केस दर्ज करने वाले सेक्टर-49 थाना प्रभारी को लाइन हाजिर करने के बाद अब मामले की जांच भी सेक्टर-49 से हटाकर सेक्टर-20 थाने को ट्रांसफर कर दी गई है। इससे पहले मामले के जांच अधिकारी सब इंस्पेक्टर दीपक थे। अब जांच का जिम्मा इंस्पेक्टर कैलाशनाथ को सौंपा गया है।

रेव पार्टी का इनपुट मिला

पुलिस की जांच में दिल्ली, हरियाणा और राजस्थान में रेव पार्टी के आयोजन की बात सामने आई है। फिलहाल इसकी जांच की जा रही है कि इन पार्टियों में सांपों के जहर की सप्लाई की जाती थी या नहीं। इसके साथ ही नोएडा में रेव पार्टी के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है। इस प्रकरण में एल्विश यादव पर रेव पार्टी आयोजित कराने, पार्टी में सांपों का जहर सप्लाई करने और विदेशी लड़कियों को बुलाने के आरोप लगे हैं।

पुलिस एल्विश के सोशल मीडिया अकाउंट समेत नाइजीरियन एप खंगाल रही है। आशंका है कि सोशल मीडिया व नाइजीरियन एप के माध्यम से सापों के जहर को लेकर सौदा किया गया था।

जिस तरह डार्क बेव पर ड्रग्स की डील होती है। उसी तरह सांपों के जहर की सप्लाई की आशंका जताई जा रही है। पुलिस कई साइट, विदेशी एप समेत अन्य अकाउंट खंगाल रही है।

केंद्र सिंगरेनी का निजीकरण करने का प्रयास कर रही है : केसीआर

एजेंसी

आदिलाबाद। तेलंगाना के मुख्यमंत्री और भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के अध्यक्ष चंद्रशेखर राव (केसीआर) ने मंगलवार को आरोप लगाया केंद्र सिंगरेनी कोलियरीज कंपनी लिमिटेड (एससीसीएल) का निजीकरण करने का प्रयास कर रहा है।

केसीआर ने बताया कि कांग्रेस शासन के तहत तेलंगाना का आंध्र प्रदेश में विलय हो गया। तेलंगाना को अलग राज्य का दर्जा प्राप्त करने से पहले एससीसीएल को घाटा हुआ था, लेकिन बीआरएस शासन के तहत यह लाभदायक हो गया और 2,184 करोड़ रुपये का मुनाफा दर्ज किया। उन्होंने कहा कि दशहरा और दीपावली के मौके पर एससीसीएल एक हजार करोड़ रुपये बोनस के तौर पर बांट रही है। उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस शासन के दौरान, एससीसीएल श्रमिकों को केवल 18 प्रतिशत लाभ मिला, जबकि बीआरएस के शासन के दौरान यह बढ़कर 32 प्रतिशत हो गया।

केसीआर ने राज्य की जनता से आग्रह किया है कि किसी के कहने पर या जोश में आकर वोट न दें। मतदान सोच-समझकर करें।

केसीआर ने जनता से कहा कि राज्य में कांग्रेस की सरकार की तुलना में बीआरएस पार्टी ने सबसे अधिक विकास किया है।

कांग्रेस की अजमेर में दस नवंबर को निकलेगी गारंटी यात्रा

अजमेर। राजस्थान के अजमेर में कांग्रेस की कांग्रेस गारंटी यात्रा दस नवम्बर को धनतेरस के दिन निकलेगी। अजमेर शहर कांग्रेस कमेटी गांरटी यात्रा की अगवानी करेगी। उसके बाद अजमेर उत्तर क्षेत्र में दरगाह मार्ग स्थित देहलीगेट से रवाना होकर महावीर सर्किल पहुंचेगी जहां महिला संवाद कार्यक्रम होगा। फिर बजरंगगढ़ चौराहा से अम्बेडकर सर्किल होते हुए यहां ठहराव लेगी और यहां जनता संवाद आयोजित होगा। अजमेर शहर अध्यक्ष विजय जैन ने बताया कि यह यात्रा उत्तर क्षेत्र में घूमने के बाद अजमेर दक्षिण क्षेत्र के केसरगंज, अलवरगेट पहुंचेगी जहां सेंट पाल स्कूल चौराहे पर युवा संवाद कार्यक्रम होगा।

पेंगुइन पुस्तक उत्पादन में सौ फीसदी पुनर्चक्रित कागज का कर रहा है उपयोग

कोलकाता। पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया (पीआरएचआई) पुस्तक के लिए सौ फीसदी पुनर्चक्रित कागज का उपयोग कर रहा है। पीआरएचआई ने यह पर्यावरणीय जिम्मेदारी के प्रति भारतीय प्रकाशन उद्योग के दृष्टिकोण में एक दूरदर्शी पहल की घोषणा की है।

पेंगुइन ने अपने पुस्तक उत्पादन को 100 प्रतिशत पुनर्चक्रित कागज का उपयोग करने के लिए प्रतिबद्ध किया है। यह बदलाव चरणबद्ध तरीके से होगा और इस पर्यावरण-अनुकूल कागज पर पुस्तकों में पाठ्य सामग्री की छपाई के साथ इसकी शुरुआत हो चुकी है।

यह निर्णय अपने पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए पेंगुइन के समर्पण का एक प्रमाण है।

पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया के सीओओ, संजीव गुप्ता इस निर्णय पर टिप्पणी करते हुए कहा,हम प्रकाशन में कागज के उपयोग से जुड़ी पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करने की तत्काल आवश्यकता को पहचानते हैं। हम पिछले कुछ समय से 100 फीसदी पुनर्चक्रित सामग्री पेपर का परीक्षण कर रहे हैं, और हम न केवल इसके जैविक स्रोत और पारिस्थितिक उत्पादन प्रक्रिया के बारे में आश्वस्त हैं बल्कि यह भी सुनिश्चित किया है कि यह पढ़ने के अनुभव को कम न करे।

गहलोत को हर जगह नजर आती है लाल डायरी : शाह

डीडवाना-कुचामन। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कांग्रेस सरकार पर भ्रष्टाचार एवं तुष्टिकरण की राजनीति करने का आरोप लगाते हुए कहा है कि यह राजस्थान की सबसे भ्रष्ट सरकार रही है और अब तो मुख्यमंत्री अशोक गहलोत लाल रंग देखकर ही भड़क जाते हैं और उन्हें हर जगह लाल डायरी नजर आती है।

शाह मंगलवार को प्रदेश में नावां, मकराना, बिदियाद एवं परबतसर में भाजपा प्रत्याशियों की जनसभाओं को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने केन्द्र सरकार की उपलब्धियां भी गिनाई और कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा कि दिल्ली में श्रीमती सोनिया गांधी अपने बेटे राहुल गांधी, राजस्थान में श्री गहलोत अपने बेटे वैभव गहलोत को लांच करने की कोशिश में ही लगे रहे वहीं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चन्द्रयान लांच कर तिरंगे को चांद पर लहरा दिया।

उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि राजस्थान की भूमि सालों से सम्मान और गौरव की रही है जहां लोगों ने मुगलों की आंधी का भी डटकर सामना किया था लेकिन पिछले पांच सालों में गहलोत सरकार ने वीरभूमि को तबाह करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

यह राजस्थान की सबसे भ्रष्ट सरकार रही है और अब तो हालात ऐसे हैं कि लाल रंग देखकर ही गहलोत साहब भड़क जाते हैं चाहे कुछ भी लाल हो गहलोत जी को हर जगह लाल डायरी नजर आती है।

उन्होंने कहा कि खनन विभाग में 66 हजार करोड़ का घोटाला हुआ, उदयसागर झील में दो हजार करोड़ का घोटाला और सचिवालय में दो किलो सोना मिला लेकिन मुख्यमंत्री की नींद नहीं उडी।

चेन्नई में घर में देशी बम जमा करने के आरोप में एक व्यक्ति गिरफ्तार

चेन्नई। तमिलनाडु में चेन्नई शहर के विल्लीवक्कम इलाके में अपने घर पर देशी बम जमा करने के आरोप में पुलिस ने मंगलवार को एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया। पुलिस सूत्रों ने कहा कि एक विशेष टीम को आरोपी के घर पर बम मिले। आरोपी के घर की तलाशी एक जबरन वसूली मामले में शिकायत के बाद की गई थी। पुलिस ने कहा कि रानीपेट के मूल निवासी कार्तिक (27) ने सोमवार रात को विल्लीवक्कम में एक छोटी सी दुकान के मालिक विजयकुमार (43) को चाकू की नोक पर धमकाया और उससे 800 रुपये छीन लिए। पुलिस ने विजय कुमार की शिकायत पर कार्रवाई करते हुए मामला दर्ज किया और कार्तिक के घर की तलाशी ली। तलाशी में पाया गया कि वह अपने घर में देशी बम जमा कर रहा है। पुलिस ने आरोपियों के पास से दो देशी बम, एक चाकू और 500 रुपये बरामद किये हैं। जांच से पता चला कि गिरफ्तार कार्तिक के खिलाफ पहले से ही चार मामले लंबित हैं और उसे गुंडा अधिनियम के तहत भी हिरासत में लिया गया था।

हाईकोर्ट ने लोकायुक्त कार्यालय में तैनात कर्मियों को बकाया वेतन की अनुमति दी

एजेंसी

नैनीताल। उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने राज्य सरकार को राहत देते हुए लोकायुक्त कार्यालय में तैनात कर्मचारियों को बकाया वेतन का भुगतान करने और चालू वित्तीय वर्ष तक सभी बिलों का भुगतान के निर्देश दे दिये हैं।

सरकार के प्रार्थना पत्र पर कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनोज कुमार तिवारी और न्यायमूर्ति राकेश थपलियाल की युगलपीठ में सुनवाई हुई। सरकार की ओर से प्रार्थना पत्र दायर कर पुराने आदेश में संशोधन की मांग की गयी थी।

उच्च न्यायालय ने इसी साल 27 जून और 25 अगस्त को एक आदेश जारी कर प्रदेश सरकार को प्रदेश में लोकायुक्त की नियुक्ति करने और तब तक लोकायुक्त कार्यालय में तैनात कर्मचारियों के वेतन भुगतान पर रोक लगा दी थी।

आज सरकार की ओर से अदालत को बताया गया कि लोकायुक्त की नियुक्ति की प्रक्रिया चल रही है। लोकायुक्त कार्यालय में 16 नियमित कर्मचारी तैनात हैं।

उन्हें अदालत के आदेश के चलते चार महीने से वेतन का भुगतान नहीं हो पाया है और न ही कार्यालय के पानी, बिजली आदि बिलों का भुगतान पाया है।

दूसरी ओर याचिकाकर्ता के अधिवक्ता कार्तिक जय शंकर की ओर से विरोध करते हुए कहा गया कि वर्ष 2013 से लोकायुक्त कार्यालय बिना लोकायुक्त के संचालित हो रहा है। इससे सरकार पर वित्तीय बोझ पड़ रहा है।

अदालत ने बिना लोकायुक्त की नियुक्ति के कार्यालय संचालन को गंभीरता से लिया और सरकार से कई सवाल किये। अदालत ने नियमित कर्मचारियों को भी अन्यत्र स्थानांतरित करने को कहा।

अदालत में पेश लोकायुक्त कार्यालय के सचिव की ओर से कहा गया कि लोकायुक्त कार्यालय के संचालन में इन कर्मचारियों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

अंत में अदालत ने सरकार के प्रार्थना पत्र को स्वीकार कर लिया और अपने पुराने आदेश में संशोधन कर चालू वित्तीय वर्ष तक वेतन और बिलों के भुगतान के निर्देश जारी कर दिये।

प्रदेश में लोकायुक्त की नियुक्ति को हल्द्वानी निवासी रविशंकर जोशी की ओर से एक जनहित याचिका के माध्यम से चुनौती दी गयी है। याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि प्रदेश सरकार प्रदेश में लोकायुक्त की नियुक्ति नहीं कर रही है। इससे कई मामलों की जांच उपयुक्त तरीके से नहीं हो पा रही है।

शार्ट न्यूज

दिल्ली में दो युवकों की नाले में डूबने से मौत

नई दिल्ली। दिल्ली के शाहदरा जिले के फर्श बाजार इलाके में दो लोगों की नाले में डूबकर मौत हो गई। बताया जा रहा है कि दोनों युवकों की चप्पल निकालने के दौरान मौत हुई है जबकि बचाने गया एक युवक बाल-बाल बच गया। मृतकों की शिनाख्त बब्लू (18) और सागर (32) के तौर पर हुई है। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस टीम ने दोनों शवों का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया है। फिलहाल पुलिस इस घटना की छानबीन में जुटी है। नाले के पास बैठकर शराब पी रहे थे चार दोस्त पुलिस ने बताया कि चार युवक गंदे नाले के पास बैठकर शराब पी रहे थे। इस बीच एक शख्स की चप्पल नाले में गिर जाती है। बब्लू और सागर दलदल में धंस गए। बचाने के दौरान इनका तीसरा साथी गोलू बाल-बाल बच गया। पुलिस ने दमकल कर्मियों की मदद से देर रात दोनों शवों को नाले से बाहर निकाल लिया।

पेट्रोल पंप कर्मियों से 9.56 लाख की लूट

गाजियाबाद। गाजियाबाद के इंदिरापुरम क्षेत्र में बदमाशों ने पेट्रोल पंप कर्मचारियों से मंगलवार को दिनदहाड़े 9.56 लाख रुपए लूट लिए। वो ये कैश जमा करने के लिए बैंक जा रहे थे। बैंक के बाहर बदमाश बाइक पर आए और रुपयों से भरा बैग लूटकर फरार हो गए। डीसीपी शुभम पटेल मौके पर पहुंच गए हैं। वे पीड़ित से बातचीत कर रहे हैं। वहीं पुलिस की एक टीम घटनास्थल के आसपास सभी सीसीटीवी कैमरों की फुटेज चेक कर रही है। इंदिरापुरम क्षेत्र में काला पत्थर के पास पेट्रोल पंप है। यहां तैनात कर्मचारी अजब सिंह सोमवार का कैश एक बैग में रखकर उसे स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में जमा कराने जा रहा था। नीति खंड चौकी क्षेत्र में ये बैंक है। जैसे ही वो बैंक के सामने पहुंचा तो एक बाइक पर कुछ बदमाश आए। वो नकाबपोश थे। उन्होंने गन पॉइंट पर अजब सिंह को लिया और बैग छीनकर बड़े आराम से भाग निकले। पीड़ित कर्मचारी ने शोर मचाया, तब तक बदमाश जा चुके थे। बैंककर्मी अजब सिंह ने बताया, बैग में 9 लाख 56 हजार 580 रुपए रखे हुए थे। मैं गाड़ी से उतरा ही था। तभी बाइक सवार दो बदमाश आए और झपट्टा मारकर बैग छीनकर ले गए। अजब सिंह के साथ पेट्रोल पंप के दूसरे कर्मचारी दीपक कुमार भी साथ थे।

बिना ड्रेस के पहुंची 15 छात्राओं को कॉलेज से लौटाया

मोदीनगर। मोदीनगर के गिन्नी देवी मोदी महाविद्यालय में ड्रेस कोड विवाद का मामला थमने का नाम नहीं ले रहा है। बिना ड्रेस पहनकर पहुंची 15 छात्राओं को कॉलेज में प्रवेश नहीं मिला। इससे नाराज छात्राओं ने जमकर हंगामा किया। गिन्नी देवी मोदी महिला महाविद्यालय में ड्रेस कोड बदलने का माला तूल पकड़ता जा रहा है। ड्रेस कोड बदलने की मांग को लेकर छात्राएं दो बार कॉलेज परिसर में हंगामा कर चुकी हैं। इसके अलावा कॉलेज के कई शिक्षिकाओं ने भी प्राचार्य के खिलाफ मोर्चा खोल रखा है। गिन्नी देवी मोदी महिला महाविद्यालय में अब ड्रेस में आने वाली छात्राओं को ही प्रवेश दिया जा रहा है। बताया जा रहा है कि 15 छात्राएं बिना ड्रेस के कॉलेज में पहुंची। बिना ड्रेस पहुंची छात्राओं को गेट पर रोक लिया गया और कॉलेज में प्रवेश नहीं दिया गया। इस बात से नाराज होकर छात्राओं ने हंगामा करना शुरू कर दिया। छात्राओं की हंगामे की सूचना कॉलेज से मोदीनगर थाने को दी गई। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने छात्राओं को समझा बुझाकर शांत किया। बिना ड्रेस पहनकर कॉलेज पहुंची छात्राओं को पुलिस ने वापस भेज दिया। गिन्नी देवी मोदी महाविद्यालय कॉलेज में ड्रेस कोड बदलने ,कैंटीन खोलने व पीने के पानी की सुविधा सहित अन्य मांगों को लेकर छात्राएं काफी समय से आंदोलन करती आ रही हैं। छात्राएं कॉलेज परिसर में एक माह के अंदर दो माह धरना प्रदर्शन करके हंगामा कर चुकी हैं। छात्राओं का आरोप है कि प्राचार्य अपनी मनमानी चला रही हैं।

दोस्त ने की युवक की बलकटी से हमलाकर हत्या

गाजियाबाद। गाजियाबाद के थाना वेव सिटी में शराब पीते समय दो दोस्तों में विवाद हो गया। विवाद के बाद एक दोस्त ने गन्ना काटने वाली बलकटी से अपने दोस्त पर हमला करके हत्या कर दी। इतना ही नहीं हमला करने के बाद आरोपी ने एंबुलेंस और पुलिस को भी फोन किया। लेकिन पुलिस जब मौके पर पहुंची तब तक युवक की जान जा चुकी थी। थाना वेव सिटी के ग्राम महरौली में दीपक चौधरी और सत्येंद्र चौधरी दोस्त हैं। दोनों एक ही गांव के रहने वाले हैं। दोनों अक्सर शराब पीते हैं। सोमवार की रात भी दोनों एक साथ बैठकर शराब पी रहे थे। बताया जा रहा है कि इसी दौरान सत्येंद्र ने दीपक की पत्नी को लेकर टिप्पणी कर दी। दरअसल दीपक की पत्नी कुछ दिन पहले उसे छोड़कर जा चुकी है। इस टिप्पणी से सत्येंद्र और दीपक में विवाद हो गया। इसके बाद दीपक ने पास में रखी बलकटी से सत्येंद्र पर हमला कर दिया। हमला करने के बाद दीपक ने एंबुलेंस और पुलिस को फोन किया। पुलिस जब मौके पर पहुंची तब तक सत्येंद्र की मौत हो चुकी थी। डीसीपी ग्रामीण विवेक यादव ने बताया कि इसके बाद आरोपी दीपक को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है। साथ ही जिस हथियार से हत्या की है उसको भी बरामद कर लिया है।

दिल्ली में ऑड-ईवन पर संशय

सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अध्ययन के बाद लेंगे फैसला : गोपाल राय

नई दिल्ली। दिल्ली में ऑड-ईवन लागू करने पर अभी संशय है। पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने मंगलवार को कहा कि सुप्रीम कोर्ट के आब्जर्वेशन का अध्ययन करने के बाद ही ऑड-ईवन लागू करने पर फैसला लिया जाएगा। हमने ऑड-ईवन लागू करने के मसले पर परिवहन आयुक्त, यातायात पुलिस और पर्यावरण अधिकारियों के साथ बैठक की। हमें आपको ऑड-ईवन वाहन योजना के लिए नियमों के बारे में जानकारी देनी थी लेकिन इसी बीच हमने मीडिया में ऑड-ईवन वाहन योजना के संबंध में सुप्रीम कोर्ट की कुछ टिप्पणियां देखीं। अब हमने तय किया है कि हम पहले सुप्रीम कोर्ट के आदेश का अध्ययन करेंगे।

पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने कहा कि अब दिल्ली में प्रदूषण और उसकी रोकथाम के लिए ऑड-ईवन योजना के मसले पर सुप्रीम कोर्ट के जो भी सुझाव और आदेश होंगे, हम उन्हें शामिल करेंगे। उसी के अनुरूप हम नीति बनाएंगे। हम सुप्रीम कोर्ट के

लिखित आदेश का अध्ययन करने के बाद ही ऑड-ईवन पर सारी जानकारी आपके सामने रखेंगे।

प्रदूषण की समस्या पर सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली में पराली जलाने, पटाखे और वायु प्रदूषण को लेकर अपनी टिप्पणी दे दी है।

हमारी सरकार सुप्रीम के आदेश को लागू करेगी। प्रदूषण की समस्या पूरे उत्तर भारत की समस्या है। मेरा सभी सरकारों से अनुरोध है कि यदि हम प्रदूषण कम करने के लिए सभी कदम लागू करेंगे तो जरूर सफल होंगे...

गोपाल राय ने कहा कि ऑड-ईवन लागू करने का निर्णय इसलिए लिया गया है क्योंकि दिवाली के बाद प्रदूषण और बढ़ सकता है। ऑड-ईवन दिवाली के एक दिन बाद यानी 13 नवंबर से 20 नवंबर तक एक हफ्ते के लिए लागू होगा। उसके बाद दिल्ली में प्रदूषण के स्तर के आधार पर आगे के फैसले लिए जा सकते हैं। उन्होंने आगे कहा- दिल्ली सरकार ऑड-ईवन कार योजना पर नियमों को अंतिम रूप देने से पहले सुप्रीम कोर्ट के प्रदूषण के मसले पर जारी निर्देशों को उसमें शामिल करेगी।

उल्लेखनीय है कि सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण की समस्या पर पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान को पराली जलाने पर तत्काल रोक सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। कोर्ट ने कहा कि राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली साल-दर-साल इस स्थिति से नहीं जूझ सकती है।

सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को दिल्ली में ऑड-ईवन योजना लागू करने पर सवाल उठाते हुए यह भी पूछा कि क्या यह पहले कभी सफल रही है। जस्टिस एसके कौल और जस्टिस सुधांशु धूलिया की पीठ ने दिल्ली में प्रदूषण पर सुनवाई के दौरान कहा कि ऑड-ईवन को दिल्ली में लागू किया गया है, लेकिन क्या यह कभी सफल हुआ है? यह सब दिखावा है।

समाचार एजेंसी पीटीआई भाषा की रिपोर्ट के मुताबिक, सर्वोच्च अदालत ने दिल्ली सरकार को भी यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि नगर निगम का ठोस कचरा खुले में नहीं जलाया जाना चाहिए।

शीर्ष अदालत ने सुनवाई के दौरान पराली जलाने, वाहन प्रदूषण और खुले में कचरा जलाने जैसे मुद्दों पर गौर किया। सनद रहे एक दिन पहले ही केजरीवाल सरकार ने दिल्ली में 13 से 20 नवंबर तक ऑड-ईवन कार योजना लागू करने की बात कही थी। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने सोमवार को घोषणा की कि दिल्ली 13 से 20 नवंबर तक ऑड-ईवन कार योजना लागू की जाएगी।

दिल्ली में सभी निगम कर्मचारियों को मिलेगा दिवाली बोनस

शैली ओबेरॉय ने की घोषणा

नई दिल्ली। दिल्ली के सरकारी कर्मचारियों के बाद अब एमसीडी कर्मचारियों के लिए भी दिवाली बोनस का ऐलान किया गया है। बोनस और सैलरी का पैसा दिवाली से पहले कर्मचारियों के खाते में पहुंच जाएगा। यह ऐलान मंगलवार को एमसीडी दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल ने किया है। उन्होंने बताया कि एमसीडी कर्मचारियों को 6900 रुपए का दिवाली बोनस दिया जाएगा। बीते दिनों दिल्ली सरकार ने ग्रुप बी और ग्रुप सी कर्मचारियों के लिए 7 हजार रुपए दिवाली बोनस देने का ऐलान किया था। एमसीडी कर्चमारियों को बोनस देने में 62 करोड़ का खर्च आएगा।

किसे-किसे मिलेगा दिवाली बोनस

मंगवाल को एमसीडी कर्मचारियों के लिए दिवाली बोनस का ऐलान करते हुए दिल्ली के सीएम केजरीवाल ने बताया कि दिल्ली सरकार द्वारा एमसीडी के नॉन गैजेटेड ग्रुप-बी, ग्रुप-सी और ग्रुप-डी कर्मचारियों को बोनस दिया जाएगा। इनके कर्मचारियों को

6900 रुपए का दिवाली बोनस दिया जाएगा। इसके साथ ही एमसीडी के दैनिक आधार पर काम करने वाले डेली वेज वर्कर, जिन्हेंने पिछले तीन सालों में 240 दिन काम किया है, उन्हें भी बोनस देने का ऐलान किया गया है। इन कर्मचारियों को 1184 रुपए का दिवाली बोनस दिया जाएगा।

दिल्ली के सीएम ने एमसीडी कर्चारियों के लिए दिवाली बोनस का ऐलान करते हुए बताया कि दिवाली से पहले सभी कर्मचारियों के खाते में पैसे पहुंच जाएंगे। इस दौरान उन्होंने बताया कि ग्रुप-बी के अंतर्गत सीनियर स्टेनो, पीएस, ट्रांसलेटर, टीचर आते हैं। इसके अलावा ग्रुप-सी में जेएसए, एसएसए, स्टेनो टाईपिंग कर्मचारी आते हैं। ग्रुप-डी में तमाम सफाई कर्मचारी, बेलदार, प्यून आते हैं।

केजरीवाल ने एलजी को भेजी सिफारिश

एंटी-स्मॉग टावर बंद कराया, अफसर को तुरंत सस्पेंड करें

नई दिल्ली। दिल्ली में बढ़े प्रदूषण के बीच मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने डीपीसीसी अध्यक्ष को तुरंत सस्पेंड करने की सिफारिश उपराज्यपाल को भेजी है। केजरीवाल ने उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना को भेजी गई सिफारिश में कहा है कि डीपीसीसी के चेयरमैन अश्वनी कुमार को तुरंत सस्पेंड किया जाए। दिल्ली प्रदूषण कंट्रोल कमेटी के अध्यक्ष अश्वनी कुमार को लेकर हाल ही में गोपाल राय ने आरोप लगाया था कि दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों में वायु प्रदूषण को कम करने के लिए कनॉट प्लेस में दो साल पहले लगाए गए बड़े स्मॉग टावर को मनमाने ढंग से बंद करने का आदेश दिया था। न्यूज एजेंसी पीटीआई ने सरकारी सूत्रों के हवाले से कहा है कि एक वरिष्ठ आईएएस अधिकारी और प्रिंसिपल सेक्रेटरी (होम), दिल्ली सरकार को सस्पेंड करने की सिफारिश उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना को भेज दी गई है।

गोपाल राय ने तीन दिन पहले ही अश्वनी कुमार को सस्पेंड किए जाने को लेकर केजरीवाल को खत लिखा था। गोपाल राय ने अपने खत में कहा था कि दिल्ली के कनॉट प्लेस और आनंद विहार में केंद्रीय पलुशन कंट्रोल बोर्ड और डीपीसीसी के अंतर्गत दो स्मॉग टावर लगाए गए थे। यह टावर सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर लगाए गए

थे। जिसके बाद अब अफसर अश्वनी कुमार को सस्पेंड करने की सिफारिश एलजी तक भेज दी गई है।

बता दें कि इससे पहले केजरीवाल सरकार के मंत्री गोपाल राय ने अश्वनी कुमार को लेकर कहा था कि वो डीपीसीसी की बैठक में नहीं आते हैं। केजरीवाल सरकार की योजनाओं में अड़ंगा लगाने का आरोप लगाते हुए गोपाल राय ने अक्टूबर के महीने में सीएम केजरीवाल से मांग की थी कि उनपर अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाए।

कुछ समय पहले गोपाल राय ने अश्वनी कुमार पर आरोप लगाते हुए कहा था कि दिल्ली में प्रदूषण के स्त्रोतों की पहचान करने के लिए दिल्ली सरकार ने एक अध्ययन की पहल की थी।

अध्ययन प्रस्ताव को जुलाई 2021 में दिल्ली कैबिनेट की मंजूरी मिल गई थी। उसके बाद अक्टूबर 2022 में आईआईटी-कानपुर के साथ इसे लेकर समझौते पर हस्ताक्षर भी हुए थे।

गौतम बुद्ध नगर में मनाया गया एनटीपीसी का 49वां स्थापना-दिवस

गौतम बुद्ध नगर। गौतम बुद्ध नगर में भारत की सबसे बड़ी विद्युत उत्पादन कंपनी एनटीपीसी लिमिटेड के 49वें स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर नेशनल कैपिटल पावर स्टेशन, दादरी के प्रशासनिक भवन परिसर में एक समारोह का आयोजन 7 नवम्बर को किया गया। समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि ब्रह्माजी राव, मुख्य महाप्रबंधक (दादरी) द्वारा एनटीपीसी ध्वज फहरा कर किया गया। तत्पश्चात बी राव ने सीआईएसएफ बल सदस्यों द्वारा प्रस्तुत ''गार्ड आफ आनर'' का निरीक्षण किया। इस अवसर पर स्कूली बच्चों के साथ कर्मचारियों ने एनटीपीसी गीत का गायन किया। इस अवसर पर अपने संबोधन में बी राव ने एनटीपीसी के 48 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में सभी कर्मचारियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। बी राव ने विद्युत क्षेत्र में एनटीपीसी के बहुमूल्य योगदान का उल्लेख करते हुए एनटीपीसी दादरी विद्युत स्टेशन की विशिष्ट एवं उल्लेखनीय उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उपस्थित कर्मचारियों को संबोधित करते हुए राव ने एनटीपीसी दादरी में चल रहें पर्यावरण संरक्षण, सुरक्षा तथा कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व गतिविधियों का उल्लेख किया। इस अवसर पर बी राव एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा सद्भावना और उल्लास के प्रतीक केक कटिंग कर एनटीपीसी के रंग के गुब्बारों को आकाश में छोड़ा गया।

हनी सिंह और शालिनी तलवार हुए अलग

दिल्ली की अदालत ने मंजूर किया तलाक

नई दिल्ली। अदालत ने मंगलवार को यो यो हनी सिंह के नाम से प्रख्यात बॉलीवुड एवं पंजाबी गायक हिरदेश सिंह उर्फ हनी सिंह और उनकी पत्नी के बीच हुआ समझौते के आधार पर तलाक को मंजूरी प्रदान कर दी। तीस हजारी अदालत स्थित प्रधान न्यायाधीश पारिवारिक न्यायालय परमजीत सिंह ने सिंह और उनकी पत्नी के बीच ढाई साल पुराने मुकदमे को समाप्त करते हुए दोनों पक्षों को तलाक की डिग्री दे दी।

सिंह की पत्नी ने सिंह पर घरेलू हिंसा के आरोप लगाए थे। उसने कहा कि वह डर में जी रही है क्योंकि सिंह और उसके परिवार द्वारा उस पर मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक, यौन और आर्थिक हिंसा की गई है। पार्टियों के समझौते पर पहुंचने के बाद आरोप वापस ले लिए गए। हालांकि, निपटान की शर्तें सीलबंद लिफाफे में रखी गई थीं।

पिछले साल सितंबर में सिंह ने उन्हें एक करोड़ का डिमांड ड्राफ्ट भी सौंपा था। जज ने फैसला सुनाते हुए सिंह से पूछा कि क्या वह अब भी अपनी पत्नी के साथ रहने की कोशिश करना चाहते हैं। हालांकि गायक ने उत्तर दिया कि साथ रहने या साथ रहने का कोई और मौका नहीं है।

शालिनी ने लगाए थे हिंसा के आरोप

हनी सिंह की पत्नी शालनी तलवार

ने हनी सिंह व उनके परिवार पर घरेलू हिंसा के अलावा कई गंभीर आरोप लगाते हुए अदालत में याचिका दायर की थी। अदालत ने हनी सिंह व उनके परिवार को अगले आदेश तक याची शालिनी तलवार के साथ संयुक्त स्वामित्व वाली संपत्ति, उनकी पत्नी के स्त्रीधन आदि को किसी भी प्रकार से बेचने व न निपटाने का निर्देश दिया था।

शालनी ने याचिका में हनी सिंह के अलावा अपनी सास भूपिन्द्र कौर, ससुर सरबजीत सिंह व ननद स्नेहा सिंह को पक्ष बनाया था। याची ने आरोप लगाया है कि विवाह के बाद से ही उसे प्रताड़ित करने के अलावा मारपीट की जा रही है।

स्कूल में चढ़ा था दोनों का प्यार परवान

शालिनी तलवार, हनी सिंह की स्कूल के समय से गर्लफ्रेंड थीं। दोनों ने दिल्ली के गुरु नानक पब्लिक स्कूल से पढ़ाई की और यहीं से दोनों का इश्क परवान चढ़ा।

हनी सिंह शालिनी से पहली नजर में ही प्यार कर बैठे थे। स्कूल के दिनों से ही दोनों ने एक दूसरे को डेट करना शुरू कर दिया था, लेकिन कभी अपने रिश्ते को सार्वजनिक नहीं किया।

बहुत गुपचुप तरीके से की थी दोनों ने शादी

हनी सिंह और शालिनी तलवार ने साल 2011 में दिल्ली स्थित एक गुरुद्वारे में सिख रीति रिवाजों के साथ शादी की। दोनों परिवारों की मौजूदगी में गुपचुप तरीके से यह शादी हुई, जिसकी किसी को भनक तक नहीं लगी। शादी के तीन साल बाद दोनों के बीच अफेयर की खबरें बाहर आईं। दरअसल, हनी सिंह ने एक रिएलिटी शो के दौरान शालिनी से अपनी शादी की बात बताई, जिसे सुन हर कोई हैरान रह गया।

हनी पर पत्नी ने लगाए थे अवैध संबंध के आरोप

साल 2022 में शालिनी ने आरोप लगाते हुए कहा था कि हनी सिंह ने उनके साथ मारपीट की थी। उनकी शादी को हुए 10 साल हो गए हैं, लेकिन बदले में शालिनी को मानसिक और शारीरिक रूप से सिर्फ प्रताड़ित ही किया गया है।

इंटरनेशनल टूर पर जाने के बहाने हनी कई महिलाओं के साथ अवैध शारीरिक संबंध भी बनाते हैं। हनी ने उनके साथ जानवरों की तरह बर्ताव किया है और यही कारण है कि वह उनसे अलग होना चाहती हैं।

प्रधानमंत्री के नेट ज़ीरो इंडिया के लक्ष्य को 2070 तक प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है नागरिक सहयोग : जावड़ेकर

गैस चैंबर में तब्दील हो चुके एनसीआर में चार करोड़ लोग हैं बुरी तरह से प्रभावित: प्रो. योगेश सिंह

नई दिल्ली। सांसद और पूर्व पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा कि 2070 तक प्रधानमंत्री के नेट ज़ीरो इंडिया के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए नागरिक कार्रवाई महत्वपूर्ण है। प्रकाश जावड़ेकर दिल्ली विश्वविद्यालय में यू75: नेशनल मूवमेंट ऑफ नेट-जीरो यूनिवर्सिटी कैंपस कार्यशाला के उद्घाटन अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि अपने वीडियो संदेश के माध्यम से संबोधित कर रहे थे। उन्होंने अपने वीडियो संदेश में बताया कि तेलंगाना में चुनाव के चलते व्यवस्ता के कारण वह इस कार्यक्रम में भौतिक रूप से उपस्थित नहीं हो सके। इस अवसर पर संयुक्त राष्ट्र के पूर्व यूएसजी एरिक सोल्हेम और एआईसीटीई की सलाहकार ममता अग्रवाल विशिष्ट अतिथि रहे जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने की। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. योगेश सिंह ने कहा कि वर्तमान में यह विषय बहुत कि महत्वपूर्ण है। आज पूरा एनसीआर गैस चैंबर में तब्दील हो चुका है। करीब चार करोड़ लोग बुरी तरह से प्रभावित हैं।

जावड़ेकर ने अपने संबोधन में आगे कहा कि यू-75 अभियान यह सुनिश्चित करने के लिए है कि विश्वविद्यालय और कॉलेज परिसर नेट ज़ीरो या कार्बन न्यूट्रल बन जाएं। यह पहल बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह न केवल कैम्पस को कार्बन तटस्थ बनाएगी, बल्कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'LiFE' मिशन के अनुरूप विद्यार्थियों को पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली का महत्व भी बताएगी। उन्होंने कहा कि यह कार्यरत भावी पीढ़ी होगी। इस सार्वजनिक आंदोलन को खड़ा करने के लिए विश्वविद्यालयों, कॉलेज प्रशासन, विद्यार्थियों और गैर सरकारी संगठनों के संयुक्त प्रयास आवश्यक हैं।

पूर्व केंद्रीय मंत्री ने बताया कि बिजली और पानी की बचत व उत्पादन, वृक्षारोपण एवं वृक्षों की वृद्धि सुनिश्चित करना, उचित अपशिष्ट प्रबंधन और परिसर में ईवी गतिशीलता का उपयोग इस अभियान की मुख्य विशेषताएं हैं। ये सभी प्रयास विश्वविद्यालयों के लिए 5 वर्षों में पेबैक होंगे। उन्होंने कहा कि भारत जलवायु परिवर्तन का कारण नहीं बल्कि जलवायु परिवर्तन का भुक्तभोगी है। कार्बन उत्सर्जन में हमारा ऐतिहासिक योगदान मात्र 3 प्रतिशत है जबकि वैश्विक आबादी का 17 प्रतिशत हमारे पास है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस विषय पर वैश्विक चर्चा में अग्रणी भूमिका निभाई है। अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन, आपदा लचीलापन, बुनियादी ढांचे का गठबंधन, LiFE मिशन और पेरिस कन्वेंशन में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करना दुनिया को आगे का रास्ता दिखा रहा है। अगर इच्छाशक्ति हो तो उसे हासिल करने का रास्ता हमेशा मौजूद होता है।

कॉलेज में जय श्रीराम का नारा लगाने पर विवाद

गाजियाबाद। गाजियाबाद के थाना वेव सिटी इलाके में सुंदरदीप कॉलेज में जय श्री राम का नारा लगाने के बाद विवाद खड़ा हो गया है। नारा लगाने को लेकर छात्रों और गार्ड में बहस होने लगी। किसी तहर से मामले को शांत कराया गया। हालांकि अभी किसी तरफ से तहरीर नहीं दी गई है। पुलिस का कहना है कि तहरीर आने पर कार्रवाई होगी। बता दें कि मुताबिक सोमवार को इस कॉलेज में फ्रेशर पार्टी थी। इसके बाद ऑडिटोरियम से बाहर निकलते हुए छात्र जय श्री राम का नारा लगा रहे थे। वहां मौजूद गार्ड ने उनको ऐसा करने से रोका। विवेक यादव के मुताबिक गार्ड ने उनसे कहा कि जो नारे लगाने हैं वह कॉलेज परिसर से बाहर जाकर लगाएं, कॉलेज में लगाने की अनुमति नहीं है। इसके बाद बताया जा रहा है कि छात्र और गार्ड के बीच नोकझोंक भी हुई। फिलहाल कॉलेज की तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। वहीं डीसीपी ग्रामीण विवेक यादव का कहना है कि किसी भी पक्ष यानी छात्र, गार्ड या कॉलेज की तरफ से अभी कोई शिकायत पुलिस को नहीं मिली है। अगर शिकायत मिलती है तो इस मामले में जांच की जाएगी। आपको बता दें कुछ दिन पहले ऐसे ही एक कॉलेज का वीडियो वायरल होने पर हिंदू संगठन के लोगों ने बवाल काटा था। जिसके बाद जिन दो टीचर्स ने नारे पर रोक लगाने के लिए कहा था उनको कॉलेज ने सस्पेंड कर दिया था।

अखिल भारतीय साहित्य परिषद, महानगर इकाई, गाज़ियाबाद एवं देवप्रभा प्रकाशन का सम्मान समारोह एवं काव्य संध्या आयोजित

सुप्रसिद्ध कवयित्री डॉ. मधु चतुर्वेदी को मिला महादेवी सम्मान, प्रख्यात कवयित्री डॉ. रमा सिंह का जन्मदिन धूमधाम से मनाया

गाजियाबाद। अखिल भारतीय साहित्य परिषद, महानगर इकाई, गाज़ियाबाद एवं देवप्रभा प्रकाशन ने संयुक्त रूप से आरडीसी स्थित एक रेस्टोरेंट में भव्य सम्मान समारोह और काव्य संध्या का आयोजन किया। कार्यक्रम में विशेष रूप से सुप्रसिद्ध कवयित्री डाक्टर रमा सिंह का जन्मदिन मनाया गया। साथ ही इस साल का महादेवी सम्मान गजरौला की प्रख्यात कवयित्री डाक्टर मधु चतुर्वेदी को दिया गया। सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. अशोक मैत्रेय ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। सुप्रसिद्ध कवयित्री डाक्टर तूलिका सेठ ने माँ शारदा वंदना प्रस्तुत की। गार्गी कौशिक ने अपने प्रेम गीत 'मैं सजने लगी हूँ, संवरने लगी हूँ' रचना से काव्य गोष्ठी की शुरुआत की। सीमा सागर शर्मा ने बेटी पर अपनी रचना 'माना घर की शान बेटियाँ होती हैं, प्रस्तुत की। गरिमा आर्य ने अपने माहियों से श्रोताओं का दिल जीता। कवि अजीत श्रीवास्तव 'नवीन' ने 'फरियादी के वास्ते, खोलो घर के द्वार। दुनिया को रौशन करो, मिटा दो अंधकार' सरीखे समसामयिक विषयों पर आधारित दोहों से अपनी बात कही। श्वेता त्यागी ने 'आजकल अपनों की मेहरबानियां गुम हैं', गज़ल से श्रोताओं की तालियां

बटोरीं। बीएल बत्रा 'अमित्र' ने अपनी रचना 'दुनिया का अफ़साना लिख दो', अपने अलग अंदाज में पेश की। डाक्टर सुधीर त्यागी 'रहे महफूज ये दुनिया, जलाया सुबह तक खुद को, गज़ल सुनाकर समां बाँध दिया। कवि राजीव सिंघल ने अपनी चर्चित गज़ल 'दिल से कैसी शरारत हुई है', के माध्यम से खूब रंग जमाया। फिल्मी गीतकार व शायर प्रमोद कुमार कुश 'तन्हा' ने 'चलो देखें मोहब्बत का सलीका कौन रखता है', बेहद खूबसूरत गज़ल से कार्यक्रम को और ऊंचाइयां दीं। अखिल भारतीय साहित्य परिषद उत्तर प्रदेश के सचिव अरविंद भाटी ने 'जीने की असली उमर तो साठ है', रचना प्रस्तुत की। डाक्टर तूलिका सेठ ने 'नफरत का सामान नहीं होने देंगे, पुरखों का अपमान नहीं होने देंगे', गज़ल को अपने ही अनोखे अंदाज में पढ़ा। मशहूर शायर गोविंद गुलशन ने 'सुबह होती है फूलों से लिपट जाती है धूप', सरीखी एक से बढ़कर एक गज़लों से श्रोताओं का दिल जीत लिया। मशहूर शायर मासूम गाजियाबादी ने 'देर तक तेरी आँखों को नम देखता, कौन था जो भला ये सितम देखता', बेहतरीन गज़ल से सबका मन मोह लिया। कुशल मंच संचालिका और कवयित्री डाक्टर अल्पना सुहासिनी ने 'बाहर से है शांत बहुत, भीतर से आक्रांत बहुत', गज़ल सुनाकर श्रोताओं की खूब तालियां बटोरीं। प्रमुख समाजसेवी अशोक श्रीवास्तव ने भोजपुरी लोकगीत 'छुप जा रे चंदा सजन बिन नींद न आवे हो' की मनमोहक प्रस्तुति दी। सुप्रसिद्ध कवि व अखिल भारतीय साहित्य परिषद, मेरठ प्रांत के महासचिव डाक्टर चेतन आनंद ने अपने चिरपरिचित अंदाज में 'अंधियारे में दीप जलाना सबके बस की बात नहीं' गीत पेश किया, जिसे श्रोताओं का खूब प्यार मिला। डाक्टर रमा सिंह ने 'खेल नियति ने जो खिलवाए, हमने खेल लिए, प्यार में होंगे रंगीन मेले नहीं, हम अकेले हैं लेकिन अकेले नहीं' जैसे शानदार गीतों से सभी श्रोताओं को आनंदित कर दिया। महादेवी सम्मान से सम्मानित कवयित्री डाक्टर मधु चतुर्वेदी ने 'मेरे आँगन में पड़ा है एक टुकड़ा धूप का', गज़ल कहकर कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिये। उनके दोहों, मुक्तकों और प्रेमगीत पर श्रोताओं ने खूब दाद दी। प्रख्यात उपन्यासकार रवीन्द्र कांत त्यागी ने डाक्टर रमा सिंह से जुड़े अपने संस्मरण साझा किये। सीए रवि कुमार ने कई चुनिंदा शायरों के अशआर के माध्यम से अपनी बात बड़ी खूबसूरती के साथ रखा।

डाक्टर रमा सिंह की सुपुत्री ऋतु सिंह ने इस विशेष अवसर पर अपनी माताश्री के लिए मार्मिक भाव प्रकट किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. अशोक मैत्रेय ने 'इतनी नदियां पी गया फिर भी शेष तलाश' जैसे कई श्रेष्ठ दोहे सुनाकर सभी को भाव-विभोर कर दिया। कार्यक्रम का सफल संचालन डाक्टर अल्पना सुहासिनी ने किया। इस अवसर पर संगीता आनंद, सुनंदा श्रीवास्तव, राकेश सेठ आदि मौजूद थे। अंत में डॉ. चेतन आनंद ने सभी आगंतुकों का आभार प्रकट किया।

संपादकीय

जहरीली हवा में सांस लेने की बढ़ रही विवशता

अफसोस की बात यह भी है कि वायु प्रदूषण से जिस तरह खतरे पैदा होते हैं, उसके भुक्तभोगी आम लोग होते हैं, मगर जब तक सरकार कोई सख्त नियम नहीं लागू करती, तब तक अपनी ओर से लोग वैसा सुनिश्चित करने की कोशिश शायद ही करते हैं। ऐसे समय में आपात स्थिति को छोड़ कर निजी वाहनों का सीमित प्रयोग करना और सार्वजनिक वाहनों से सफर करने को तरजीह देना क्यों संभव नहीं है ?

तमाम आशंकाएं और अनुमान सामने होने के बावजूद दिल्ली की हवा ऐसी हो चुकी है जिसे बेहद घातक स्तर तक खतरनाक कहा जा सकता है। मुश्किल यह है कि न सरकार स्थिति के पूरी तरह बिगड़ने तक सक्रिय होती है, न आम लोग प्रदूषण के कारणों को दूर करने में सहयोग देना चाहते हैं। यही वजह है कि पिछले तीन-चार दिनों से स्थिति बिगड़ती चली जाने के बाद सोमवार को दिल्ली सरकार ने वाहनों के लिए सम-विषम व्यवस्था लागू करने की घोषणा की। इसके तहत फिलहाल तेरह से बीस नवंबर तक दिल्ली में यह पाबंदी लागू रहेगी। हवा में घुलते जहर के असर को कम करने के लिए पिछले दिनों उठाए गए बड़े कदमों के क्रम में यह दूसरा फैसला है।

गौरतलब है कि दिल्ली में प्राथमिक स्कूलों को दस नवंबर तक बंद रखने की घोषणा की गई है। इसके अलावा, राजधानी में इस समस्या के मद्देनजर ग्रैप-4 की पाबंदियां पहले से ही लागू हैं। हर साल ठंड की शुरुआत में हवा के घनीभूत होने के साथ ही पीएम-5 और अन्य घातक सूक्ष्म कणों के असर से जनजीवन बाधित होने लगता है। मगर मुश्किल यह है कि कारण और परिणाम के बारे में लगभग सब साफ होने के बावजूद सरकार तब कोई बड़ा फैसला करती है, जब मामला हाथ से निकलने लगता है। सम-विषम व्यवस्था के बाद दिल्ली की सड़कों पर दौड़ने वाले वाहनों की संख्या में कमी आएगी और उनकी वजह से हवा में घुलने वाले प्रदूषण में कमी आने की उम्मीद की जा सकती है।

सवाल है कि प्रदूषण में बढ़ोतरी पर काबू पाने के मामले में अगर सम-विषम सहित अन्य उपायों को इतना ही कारगर माना जाता है तो इन्हें समय रहते चरणबद्ध तरीके से लागू क्यों नहीं किया जाता ? क्या ऐसा संभव नहीं है कि इस मौसम में प्रदूषण की आम तस्वीर के संकट में तब्दील होने से पहले हवा में खतरनाक तत्त्व घोलने वाले कारकों पर लगाम लगाने के साथ-साथ आम लोगों के बीच भी जागरूकता अभियान चलाया जाए, उन्हें भी बताया जाए कि इस समस्या से लड़ने में उनकी भी कुछ जिम्मेदारी है ?

यों भी तापमान में कमी के साथ अगर हवा में ठहराव की स्थिति बनती है, तो धूल और धुआं के अलावा अन्य तत्त्व मिल कर वायु प्रदूषण की समस्या को जटिल बना देते हैं। इसकी वजह से वायु की गुणवत्ता खराब हो जाती है। पिछले महीने के आखिरी दिनों में वायु गुणवत्ता सूचकांक में दिल्ली की तस्वीर बिगड़नी शुरू हुई थी और तब से यह कमोबेश 'बहुत खराब' की श्रेणी में ही है। अब सम-विषम व्यवस्था के अलावा ग्रैप-4 लागू होने के बाद स्थिति में सुधार की संभावना है, लेकिन जब तक इस समस्या का दीर्घकालिक समाधान नहीं निकाला जाएगा, तब तक हर साल इसी तरह तात्कालिक उपायों के जरिए संकट को संभालने की कोशिश करनी पड़ेगी। अफसोस की बात यह भी है कि वायु प्रदूषण से जिस तरह खतरे पैदा होते हैं, उसके भुक्तभोगी आम लोग होते हैं, मगर जब तक सरकार कोई सख्त नियम नहीं लागू करती, तब तक अपनी ओर से लोग वैसा सुनिश्चित करने की कोशिश शायद ही करते हैं। ऐसे समय में आपात स्थिति को छोड़ कर निजी वाहनों का सीमित प्रयोग करना और सार्वजनिक वाहनों से सफर करने को तरजीह देना क्यों संभव नहीं है ? फिलहाल दिल्ली के हालात जैसे दिख रहे हैं, उसमें सरकार की प्राथमिक जिम्मेदारी बनती है, पर इसे संभालने में आम लोगों को भी अपना दायित्व समझना होगा।

कनाडा और भारत के बीच विवाद बेबुनियाद

कनाडा में सिख समुदाय के लोगों की अच्छी-खासी तादाद है और वहां की राजनीति में उनकी दखल है। इसलिए वहां की सरकार उन लोगों के खिलाफ कोई भी कड़ा कदम उठाने से पहले कई बार सोचती है। यही वजह है कि वहां खालिस्तान समर्थक संगठन मजबूत होते गए और वहीं से भारत में अलगाववादी गतिविधियां संचालित करते रहे। भारत ने अनेक बार ऐसे उपद्रवियों के बारे में कार्रवाई की अपील की, जो कनाडा में रह कर भारत में अलगाववाद को बढ़ावा देते हैं। उनमें कई लोगों को दहशतगर्दों की सूची में डाला गया था। मगर कनाडा की तरफ से उन अपीलों पर कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं आई। निज्जर भी उन्हीं सूचीबद्ध दहशतगर्दों में शामिल था। खालिस्तानी अलगाववादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या को लेकर अभी तक कनाडा और भारत के बीच तनाव समाप्त नहीं हुआ है। कनाडा में भारत के उच्चायुक्त ने फिर पूछा है कि इस मामले से जुड़े सबूत कहां हैं, जांच की रपट कहां है ? कनाडा की तरफ से यह आरोप लगाए जाने के बाद से ही कि निज्जर की हत्या में भारतीय एजंसी का हाथ है, भारत सरकार इसके सबूत मांग रही है। मगर कनाडा सरकार बिना किसी सबूत के लगातार कहती रही है कि भारत इस मामले की जांच में सहयोग करे। इस तनातनी के चलते भारत ने कनाडाई नागरिकों को वीजा देना बंद कर दिया और कनाडा में अपने राजनयिकों की संख्या कम करनी शुरू कर दी। कनाडा ने भारत से अपने राजनयिक वापस बुला लिए। इस तरह कनाडा में काम कर रहे या पढ़ाई करने गए भारतीय नागरिकों में नाहक भय का वातावरण बना। कनाडा में भारतीय उच्चायुक्त ने कहा है कि इस तरह बिना किसी पुख्ता सबूत के आरोप लगा देने की वजह से बेवजह दोनों देशों के बीच के रिश्ते खराब हुए। हालांकि भारत हर संभव प्रयास करता रहा है कि कनाडा के साथ रिश्तों को किसी भी रूप में बिगड़ने न दिया जाए। दरअसल, कनाडा में सिख समुदाय के लोगों की अच्छी-खासी तादाद है और वहां की राजनीति में उनकी दखल है। इसलिए वहां की सरकार उन लोगों के खिलाफ कोई भी कड़ा कदम उठाने से पहले कई बार सोचती है। यही वजह है कि वहां खालिस्तान समर्थक संगठन मजबूत होते गए और वहीं से भारत में अलगाववादी गतिविधियां संचालित करते रहे। भारत ने अनेक बार ऐसे उपद्रवियों के बारे में कार्रवाई की अपील की, जो कनाडा में रह कर भारत में अलगाववाद को बढ़ावा देते हैं। उनमें कई लोगों को दहशतगर्दों की सूची में डाला गया था। मगर कनाडा की तरफ से उन अपीलों पर कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं आई। निज्जर भी उन्हीं सूचीबद्ध दहशतगर्दों में शामिल था। संदिग्ध स्थितियों में उसकी हत्या हो गई थी। यह कनाडा सरकार के लिए जांच का विषय होना चाहिए कि निज्जर के हत्यारों का पता लगाए, मगर उसने जांच में कोई पुख्ता आधार जुटाए बगैर बहुत आसानी से आरोप लगा दिया कि इसमें भारतीय एजंसी का हाथ है। इस तरह बेशक वहां रह रहे सिख समुदाय के लोग कुछ संतुष्ट हो जाएं, पर भारत के साथ रिश्तों में जो खटास आई है, उसे सुधरने में वक्त लगेगा। दो देशों के बीच रिश्ते आपसी विश्वास पर टिके होते हैं। इस तरह किसी समुदाय को संतुष्ट करने या उस देश में अस्थिरता पैदा करने की कोशिश करने वालों को संरक्षण देकर नहीं टिक सकते। भारत के कनाडा से बहुत पुराने संबंध हैं और वह अच्छी तरह जानता है कि भारत किस तरह खालिस्तानी अलगाववाद की समस्या से निपटने का प्रयास कर रहा है। जिस अलगाववाद की आग वर्षों पहले शांत हो चुकी थी, उसे अगर कनाडा में बैठे कुछ लोग सुलगाने का प्रयास कर रहे हैं, तो मित्र देश होने के नाते वहां की सरकार से अपेक्षा की जाती है कि उनके खिलाफ कार्रवाई करे। मगर अनेक मौकों पर देखा गया कि खालिस्तान समर्थकों ने कनाडा में विरोध प्रदर्शन किए, भारतीय राजनयिकों को परेशान करने की कोशिश की, भारतीय उच्चायोग की सुरक्षा व्यवस्था को चुनौती दी, मगर वहां की सरकार शिथिल ही नजर आई। इस तरह बेबुनियाद आरोप लगा कर कनाडा ने खुद बेवजह भारत के साथ रिश्तों में दरार डाली है।

युद्ध कैसे रूके ,हमास-इस्त्राइल तो मानने को तैयार ही नहीं

अशोक मधुप

वरिष्ठ पत्रकार

ये यक्ष प्रश्न दुनिया में गूंजने लगा है कि हमास और इस्त्राइल युद्ध कैसे रूके ? दुनिया चाहती है कि युद्ध रूके ,शांति हो। इस युद्ध में हो रहे मानवता का विनाश बंद हो। पर प्रश्न है कि हो कैसे ?न इस्त्राइल मानने को तैयार है न हमास।इन दोनों की जंग में गाजापट्टी का आम नागरिक बच्चे और औरतें मर रही हैं।घायल और बीमार को इलाज नही मिल रहा। गाजापट्टी में हुआ विकास बड़े- बड़े भवन, व्यापारिक केंद्र अस्पताल खंडहर में तबदील होते जा रहे हैं।

हमास ने सात अक्टूबर को इज़राइल में हमला करके

इज़राइल के साथ-साथ क्षेत्र में चल रहे सामान्यीकरण और शांति के प्रयासों को बंद कर दिया। इस्त्राइल पर हमास ने औचक हमला कर सबको चौंका दिया। किया।इस हमले में 20 मिनट में पांच हजार के आसपास राकेट दागे गए।इतना ही नहीं यह इस्त्राइल का सुरक्षा घेरा और दीवार तोड़कर अपनी सुरक्षा और मारक क्षमता के लिए विख्यात इस्त्राइल में घुंस गए।उन्होंने इस्त्राइल में भारी तबाही मचाई। इस हमले में इस्त्राइल के एक हजार से ज्यादा नागरिक मारे गए। तीन हजार के आसपास घायल हुए हैं। सूचनाएं हैं कि 250 के आसपास महिला और बच्चों सहित इस्त्राइल के नागरिकों का अपहरण कर लिया।हमास के आंतकियों ने महिलाओं का निवस्त्र कर उनके सम्मान को तार- तार करने कोई कसर नही छोड़ी। हमास ने सड़कों पर महिलाओं के नग्न शव घुमाए गए थे और बच्चों को काटकर, जलाकर या अन्य क्रूर तरीकों से मार डाला गया था। इसके बाद इजराइल जवाबी कार्रवाई कर रहा है।

इस्त्राइल की सुरक्षा व्यवस्था, सेना और गुप्तचर व्यवस्था पूरी दूनिया में विख्यात हैं।इस सबके बावजूद वहां इतना बड़ा नुकसान हुआ।इस्त्राइल के पास दुनिया का आधुनिकतम सुरक्षा, प्रतिरक्षा और विश्व विख्यात सूचनातंत्र है।फिर भी वह इस हमले के सामने विफल होकर रह गया। इससे भी महत्वपूर्ण और बडी बात यह है कि इस्त्राइल की सैन्य अजेयता की प्रतिष्ठा धूमिल हो गई है। इससे इजराइल बौखलाया हुआ है। वह गुस्से में बुरी तरह तिलमिला रहा है। परिणाम स्वरूप उसका इरादा हमास को खत्म कर देने का है। एक माह से चालू युद्ध में वह गाजा पर बड़े पैमाने पर हमले कर रहा है।उसका इरादा हमास को पूरी तरह खत्म कर देने का है।इस्त्राइल गाजा पर बड़े पैमाने पर हमले का सहारा ले रहा है ताकि वह उस प्रतिरोध को बहाल करने की कोशिश कर सके जो उसे कभी मिला था, फिर भी यह निश्चित नहीं है कि अगर गाजा को नष्ट कर दिया जाता है और फिर से कब्जा कर लिया जाता है तो भी वह इसे पूरा कर पाएगा।

दरअस्ल युद्ध हमास और इस्त्राइल के बीच है।हमास फ़लस्तीन का इस्लामिक चरमपंथी समूह है, जो गाज़ा पट्टी से संचालित होता है।2007 में गाज़ा पर नियंत्रण के बाद हमास के विद्रोहियों ने इसराइल को बर्बाद करने की कसम खाई थी।तब से लेकर हालिया हमले तक ये चरमपंथी संगठन इस्त्राइल के साथ कई बार युद्ध छेड़ चुका है।दूसरा पक्ष इस्त्राइल है। हमास और इस्त्राइल के युद्ध में गाजापट्टी का आम नागरिक बच्चे पिस रहे हैं,इसका युद्ध से कोई वास्ता नही। युद्ध से कोई लेना -देना नही। हमास इन्ही गाजापट्टी नागिरिकों बीच छिपे बैठे हैं।इस्त्राइल की परेशानी है कि वह हमास लड़ाकों और आम नागरिक में भेद कैसे करे ? उसने गाजापट्टी का आम नागरिक से पिछले दिनों अपील भी की कि वह गाजा छोड जांए।काफी चले गए ,किंतु अब भी बड़ी संख्या में गाजा में रहने को मजबूर हैं। आरोप है कि हमास उन्हें नही जाने दे रहा। वह आम नागरिक की आड़ लेकर बचना चाह रहा है।

दुनिया चाहती है कि यह विनाशकारी युद्ध रूके।इस्त्राइल पर दबाव भी है,किंतु सात अक्तूबर का औचक और बड़े पैमान पर हुए हमले को इस्त्राइल भुलाने को तैयार नही। वह हमास को खत्म करके ही रूकने की बात कर रहा है। उधर इसके 250 के आसपास बंदी भी अभी रिहा नही हुए। उस पर मानसिक दबाव है कि अपने इन बंदियों को सुरक्षित रूप से छुडाए।

इसी दौरान फिलिस्तीनी आतंकी संगठन हमास के प्रवक्ता गाजी हमद ने दावा किया है कि हमास सात अक्टूबर को इज़राइल पर किए गए हमलों को बार-बार दोहराएगा। बता दें कि, इस दिन हमास ने भूमि, वायु और समुद्र के माध्यम से यहूदी राष्ट्र में एक आश्चर्यजनक घुसपैठ शुरू की थी।इसी बीच 24 अक्टूबर को लेबनानी टीवी चैनल एलबीसी के साथ एक साक्षात्कार में, हमास के प्रवक्ता गाजी हमद ने कहा कि, %हमें पूरी ताकत के साथ यह कहने में कोई शर्म नहीं है। हमें इज़राइल को सबक सिखाना होगा और हम ऐसा बार-बार करेंगे।गाजी हमद ने कहा कि इज़राइल एक ऐसा देश है जिसका हमारी भूमि पर कोई स्थान नहीं है और फिलिस्तीनी कब्जे के शिकार थे। उन्होंने कब्जा समाप्त करने का भी आह्वान किया।

उधर इसराइल के प्रधानमंत्री बिन्यामिन नेतन्याहू का कहना है कि जंग ख़त्म होने के बाद अनिश्चित काल के लिए ग़ज़ा पट्टी की पूरी सुरक्षा की जिम्मेदारी इसराइल के पास होगी।अमेरिकी चैनल एबीसी न्यूज को दिए एक इंटरव्यू में ये कहा है.इस इंटरव्यू में उन्होंने हमास के कब्ज़े से बंधकों को छुड़ाए जाने तक युद्ध रोकने की मांग को पूरी तरह ख़ारिज कर दिया।उन्होंने कहा, जहां तक समय-समय पर छोटे-छोटे विरामों की बात है - एक घंटा या दो घंटे रुकना - हम पहले भी ऐसा कर चुके हैं। मेरा मानना है कि हम परिस्थितियों को देखेंगे, ताकि सामान, मानवीय मदद अंदर आ सके।अमेरिका, फ्रांस सहित कई यूरोपीय देश इस संघर्ष को अस्थायी रूप से रोकने (पॉज़) की अपील कर रहे हैं।उधर इसराइली सरकार में मंत्री एमिचाई एलियाहू ने हमास के ख़िलाफ़ 'गज़ा पट्टी में परमाणु हथियार के इस्तेमाल' की बात की है। हालाकि इसराइल के प्रधानमंत्री बिन्यामिन नेतन्याहू ने इसका खंडन किया है,किंतु सरकार के एक मंत्री के बयान से स्पष्ट हो जाताहै कि इस्त्राइल इस समस्या से निपटने के लिए किसी भी सीमातक जा सकता है।

हमास के बारे में जानकारी रखने वाले मानते हैं कि सात अक्टूबर को जब हमास ने हमला किया तो उसकी प्लानिंग ने सबको हैरान कर दिया। सात अक्टूबर को किए गए हमले की प्लानिंग से पता चलता है कि हमास लबी अवधि के लिए जंग लड़ने की तैयारी करके बैठा है।जंग शुरू होने से पहले हमास के पास 40 हजार लड़ाके बताए जा रहे थे। इजराइल की बमबारी में नौ हजार से ज्यादा लोगों की मौत हुई है। इजराइल के पास अभी इस सवाल का जवाब नहीं है कि इनमें से कितने हमास के लड़ाके हैं और कितने आम लोग।इजराइली सेना के मुताबिक वो हमास के 50 से ज्यादा टॉप कमांडरों को खत्म कर चुकी है।जंग से पहले हमास के पास 15 हजार रॉकेट्स का जखीरा था। इसमें 8100 से ज्यादा रॉकेट्स इजराइल पर दागे जा चुके हैं। अब भी सात हजार रॉकेट्स बचे हैं। 2008 की जंग के वक्त हमास के रॉकेटों की अधिकतम सीमा 40 किमी (25 मील) थी, लेकिन 2021 तक यह बढ़कर 230 किमी हो चुकी है।गाजा में 80 फीट की गहराई में बनी सुरंगें भी हमास के लिए किसी हथियार से कम नहीं हैं। हमास का प्लान था कि वो इजराइली सैनिकों को सुरंगों के जरिए घेर कर मारेंगे, ताकि इजराइल परेशान होकर जल्द सीजफायर का ऐलान कर दे। इजराइल ने दावा किया है कि वो 100 ऐसी सुरंगों को तबाह कर चुका है। चार नवंबर को इजराइली सेना के प्रवक्ता डेनियल हागरी ने दावा किया कि अब तक की जंग में गाजा अब दो हिस्सों में बंट चुका है। उत्तरी गाजा और दक्षिणी गाजा। उत्तरी गाजा में हम हमास का सफाया कर रहे हैं और दक्षिण में घायलों की मदद। अगर हमें लगता है कि दक्षिण में भी कोई हमास लड़ाका है तो उसे भी मार गिराया जा रहा है। इससे साफ हो गया है कि जंग के 30 दिन पूरे होते-होते इजराइली सेना ने गाजा के दो टुकड़े कर दिए हैं। इतना ही नहीं, महीने भर की इस जंग ने फिलिस्तीन के नक्शे के अलावा हमास की ताकत और मुस्लिम देशों की सियासत को बदलकर रख दिया है। गाजा को हथियारों की सप्लाई ईरान और लीबिया से होती है। इस्त्राइल काप्रयास इस आपूर्ति और हमास की आर्थिक मदद रोकने का होगा ताकि वह जल्दी हथियार डाल दे।

हमास की तैयारी को देखते हुए लगता है कि वह जल्दी हार नही मानेगा। उसने हमला बहुत सोच समय कर किया होगा।उसने हमले से पूर्व उसके परिणाम पर गंभीरता के साथ सोचा होगा। जैसे उसका हमला चौकाने वाला था, हो सकता है कि हमले के बाद इस्त्राइल से निपटने की तैयारी भी चौंकाने वाली हों। ऐसे में युद्ध कितना लंबा चलेगा, यह नही कहा जा सकता।

स्वाधीनता के संघर्ष,स्वाभिमान से उपजी भारत की एकता, अखंडता

करीबन आठ सौ से हजार वर्षों की परतंत्रता के बाद अनेक जीवन का बलिदान देने और विभिन्न संघर्षों के बाद हमें स्वतंत्रता प्राप्त हुई है। इस संघर्ष से प्राप्त स्वतंत्रता को हमें देश की एकता, अखंडता एवं सामाजिक समरसता की शक्ति से चिरकाल तक स्थाई रूप से बनाए रखना है अब कभी स्वतंत्रता पर खतरा ना आए यह हमारे देश के दिग्दर्शकों को अपनी कर्मठ जिजीविषा से बनाए रखना होगा। स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद हमारी एकता, अखंडता एवं एकरूपता मजबूत हुई है, पर कतिपय राजनैतिक मंसूबों के कारण आज हम सांप्रदायिकता, क्षेत्रीयता, जातीयता और अलग-अलग भाषाओं के संघर्षों से गुजर रहे हैं। हम आज मंदिर ,मस्जिद, गुरुद्वारा और चर्च के विवाद को लेकर विवाद ग्रस्त हो जाते हैं । कभी हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, पंजाबी,मराठी,तेलगु,और कभी असमी भाषा के असमंजस में फंस कर एक दूसरे का विरोध जताना शुरू कर देते हैं। मूलत: हमें राष्ट्रीय अखंडता को बनाए रखने के लिए सांप्रदायिकता के विद्वेष, ईर्ष्या, जलन और सीमा तथा भाषाई विवाद से परे हटकर देश में अखंडता, सांप्रदायिक सद्भावना का एक शुद्ध वातावरण समाज में तैयार करना होगा, जिसके फलस्वरूप हम विकास की मुख्यधारा में अपना व्यक्तिगत योगदान राष्ट्र के प्रति दे संके। डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ने कहा था कि भारत संपूर्ण विश्व में एक अकेला ऐसा राष्ट्र है जहां मंदिरों ,मस्जिदों, गिरजाघरों और गुरुद्वारों का एक एकात्मक सह अस्तित्व कायम है।

वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर आतंकवाद शांति सद्भावना एवं किसी भी राष्ट्र की अखंडता एकता एकरूपता के लिए सबसे बड़ा खतरा है।

आतंकवादी कभी अमेरिका और कभी भारत के दिल्ली, मुंबई और अनेक प्रदेशों को अपना निशाना बनाकर आतंक फैलाने का प्रयास करते हैं और आतंकवाद ने कई राज्यों में अपार जनहानि तथा संपत्ति की क्षति पहुंचाई है। इसके अतिरिक्त अलगाववादियों ने भी राष्ट्रीय एकता अखंडता को भंग करने का पुरजोर प्रयास किया है। राजनीतिक पार्टियों के मंसूबों तथा उनकी महत्वाकांक्षाओं के कारण भी अलग-अलग जातियों संप्रदाय तथा पूजा के पवित्र स्थानों को लेकर समाज को अलग करने का बीजारोपण भी किया है। राजनीतिक पार्टियों के चंद राजनेता वोट बैंक बनाने के लिए कभी अल्पसंख्यकों में अलगाव के बीच बोलने का प्रयास करते हैं।

कभी आरक्षण के नाम पर पिछड़े वर्गों को देश की मुख्यधारा से बहकाने का प्रयास करते हैं, और कभी किसी विशेष जाति प्रांत या भाषा के हकदार बन कर देश की एकता, अखंडता को खंडित करने का पुरजोर प्रयास करते हैं।

यह अत्यंत निंदनीय एवं चिंतनीय सामाजिक पहलू है, जिस संदर्भ में हमें गहन विचार करने की आवश्यकता भी है। सामाजिक स्तर पर हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई एवं अन्य वर्ग सुचारू रूप से भाईचारे में अखंड विश्वास रखते हैं एवं सामान्य जीवन करने में विश्वास रखते हैं।

चुनावी समर के बीच महादेव एप के मुद्दे पर सियासी धमासान

राज्य सरकारों को आईटी अधिनियम के 69 ए के तहत वेबसाइट,एप को बंद करने की सिफारिश का अधिकार को जनता ने रेखांकित करना जरूरी

भारत के युवाओं को विभिन्न अवैध सट्टेबाजी कारोबारों, गेमिंग, जुआ से बचाने जीएसटी रूपी स्पीड ब्रेकर से कहीं अधिक अवैध घोषित करना जरूरी - एडवोकेट किशन समुखदास भावनानी गोंदिया

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर लोकतांत्रिक व्यवस्था वाले देशों को चूंकि ग्राम सेवक से लेकर पंचायत समिति और विधान सभा से लेकर संसद तक सीधे जनता चुनती है इसलिए इस सार्वजनिक जीवन वाले पदों के लिए प्रत्याशी को साफ सुथरा होना अति आवश्यक है, इसलिए ही पक्ष विपक्ष दोनों स्तरपर अपने प्रतियोगी के भूतपूर्व, वर्तमान जीवन के हर पहलू को गहराई से जांचते परखते हैं या किसी भी अवैध विवादापस्थ मामले में उसकी थोड़ी सी भी सलंग्नता नजर आई तो तिल का लाल और राय का पहाड़ बनाने में जरा सा भी नहीं चूकते और मुद्दे को लपक लेते हैं ऐसा अमेरिका भारतसहित अनेकों देशों में देखने को मिलता है। अमेरिकी राष्ट्रपति उसके बेटों पूर्व राष्ट्रपति उसके परिवार सहित अनेक मुद्दे अंतरराष्ट्रीय स्तरपर गूंजे हैं। वर्तमान समय में ऐसा ही एक मामला एक राज्य के तथाकथित महादेव अप के मुद्दे पर चुनावी समर के बीच महादेव ऐप के मुद्दे पर सियासी घमासान मचा हुआ है। जहां विपक्षी पार्टी इसे चुनावी मुद्दा बताते हुए राज्य के सीएम को घेर रही है, तो वहीं, सीएम अपने ऊपर लगे आरोपों को बेबुनियाद बता रहे हैं। यहां तक कि पीएम जब शनिवार को चुनाव प्रचार करने पहुंचे तो उन्होंने घेरते हुए कहा कि सरकार ने जनता का भरोसा तोड़ा है। इन्होंने तो महादेव के नाम को भी नहीं छोड़ा। दरअसल, महादेव बुक ऐप ईडी की रडार पर है। ऐप सट्टेबाजी के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराता है। इसके प्रमोटर रायपुर के रहने वाले हैं, और दोनों के दुबई में होने की आशंका है। दोनों वहीं, से ऐप को चलाते हैं,इसे भारत में बैन कर दिया गया है। ईडी एजेंसी ने कुछ महीनों पहले एक असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर समेत चार लोगों को गिरफ्तार किया था। असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर के कथित तौर पर सीएम के राजनीतिक सलाहकार के साथ संबंध की आशंका है कि अपनी अवैध गतिविधियों को नजर अंदाज करने के लिए कानून प्रवर्तन अधिकारियों, राजनेताओं और अन्य लोगों को रिश्वत में सैकड़ों करोड़ हरे गुलाबी के भ्रष्टाचार की बहू आ रही है ऐसा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और टीवी चैनलों पर बताया जा रहा है। मामले को ईडी ने हाथ में ले लिया है और इसके तार दुबई तक पहुंच गए हैं जिसे रेखांकित करना जरूरी है। मेरा मानना है कि अभी हाल ही में जीएसटी काउंसिल की 51वी बैठक में ऑनलाइन गेमिंग घुड़दौड़, क्लबों में दम पर 28 प्रतिशत जीएसटी और फिर उसको भारत सरकार की कैबिनेट ने मंजूरी दी है इसलिए हालांकि अवैध धंधों को जीएसटी वैध नहीं बनता फिर भी बैकडोर से तो आखिर समर्थन मिल ही जाता है, इसलिए जनहित और इसकी सहलग्नता से युवाओं के बढ़ते आत्महत्या मामलों को देखते हुए अब इस तरह की गेमिंग और एप्स को पूरी तरह से बैन किया जाना समय की मांग है। चूंकि अभी सिर्फ 22 एपो पर बैन लगाई गई है जबकि इसके पहले भी 100 से अधिक पर बैन लगा है इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे कि भारत में युवाओं को विभिन्न अवैध सट्टेबाजी कारोबार, गेमिंग, जुआ से बचाने जीएसटी रूपी स्पीड ब्रेकर से कहीं अधिक इनको अवैध घोषित करना जरूरी है।

साथियों बात अगर हम एक राज्य में ठीक चुनावी समर में एप पर बवंडर की करें तो, चुनाव से ठीक पहले सियासी बंवडर खड़ा हो गया है। महादेव ऐप को विपक्षी पार्टी ने चुनाव का मुद्दा बनाया है। इस मामले में सीधे-सीधेमुख्यमंत्री का नाम सामने आने के बाद तो पार्टी आक्रमक है। खुद पीएम ने तीखा हमला बोलते हुए कहा कि सत्ताधारी पार्टी की सरकार ने यहां की जनता का विश्वास तोड़ा है। इन्होंने तो महादेव को भी नहीं छोड़ा। हालांकि, सीएम ने इन आरोपों को बेबुनियाद और आधारहीन बताया है. दरअसल, केंद्र सरकार ने महादेव बेटिंग ऐप समेत अवैध सट्टेबाजी वाले 22 ऐप और वेबसाइटों को प्रतिबंध करने का आदेश जारी किया है। आईटी मंत्रालय ने अवैधसट्टेबाजी ऐप सिंडिकेट के खिलाफ चल रही जांच के बीच इन एप्स पर बैन लगाने के आदेश दिए हैं।आखिर क्या है महादेव ऐप और क्यों आया छत्तीसगढ़ में भूचाल। कैसे जुड़ा सीएम का नाम यह खोजने वाले प्रश्न हैं। सीएम ने तंज कसते हुए ऑनलाइन ऐप पर जारी सियासी घमासान के बीच कहा कि हमारे खिलाफ साजिश रची जा रही है। विपक्षी पार्टीऔर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) महादेव ऐप के मालिकों को बचा रही है। अगर इन्हें सही में कार्रवाई करनी है तो आरोपियों के खिलाफ एक्शन क्यों नहीं लेते हैं। ये पार्टी ईडी को हथियार बनाकर विपक्षी दलों के नेताओं पर कार्रवाई करवा रही है। मैं साफ कर दूं कि इस व्यक्ति को मैं नहीं जानता हूं और ना ही कभी वैसे मुलाकात हुई है जैसा कि दावा किया जा रहा है। मुझे बदनाम करने के लिए वो पार्टी ऐसा काम कर रही है, लेकिन जनता सब देख रही है। जनता ही विरोधी पार्टी को करारा जवाब देगी। आगे कहा कि पूरे देश में ऑनलाइन सट्टेबाजी बंद होनी चाहिए। ये सिर्फ इस राज्य में ही क्यों किया जा रहा है. क्योंकि यहां चुनाव है। चुनाव खत्म होने तक यह घमासान जारी रहेगा उल्लेखनीय है कि गिरफ्तार आरोपी से कड़ी पूछताछ और उसके पास से जब्त फो की जांच से कई चौंकाने वाले खुलासे हुए हैं ईमेल के मुताबिक, महादेव ऐप के प्रमोटर्स ने अब तक करीब 508 करोड़ रुपये दिए हैं। हालांकि एजेंसी ने कहा कि पैसे दिए गए या नहीं, इसकी जांच चल रही है। इस मामले के खुलासे होने के बाद सीएम ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा कि चुनाव के दौरान इससे भद्दा मजाक क्या हो सकता है।किसी को पकड़वाकर मैं पीएम का नाम कहवा दूं तो क्या पीएम से एजेंसीपूछताछ करेगी किसी का नाम लेना बहुत आसान है। साबित करना उतना ही मुश्किल काम है। ये सब साजिश के तहत किया जा रहा है। ईडी ने यूएई से आए शख्स पर शिकंजाकसा है ईडी के पास खुफिया सूचना है। इस राज्य में 7 और 17 नवंबर 2023 को होने वाले विधानसभा चुनावों के मद्देनजर महादेव ऐप के प्रमोटरों की ओर से बड़ी मात्रा में नकदी ले जाई जा रही है। ये पैसे सत्तारूढ़ के चुनावी खर्चों के लिए बड़ी मात्रा में नकदी पहुंचाने के लिए खास तौर पर संयुक्त अरब अमीरात से भेजे गए एक कैश कूरियर को रायपुर से पकड़ा था। जांच एजेंसी ने दावा किया कि एजेंट को ऐप प्रमोटरों ने यूएई से भेजा था। ईडी ने 5.39 करोड़ रुपये की नकद राशि उनकी कार से बरामद की। जब्त धनराशि पर आरोपी ने स्वीकार किया है कि महादेव ऐप के प्रमोटरों ने राज्य में आगामी चुनाव खर्चों के लिए एक राजनेता को देने की व्यवस्था की गई थी।

ईडी ने महादेव ऐप के कुछ बेनामी बैंक खातों का भी पता लगाया है, जिनमें 15.59 करोड़ रुपये की शेष राशि फ्रीज कर दी गई है। ईडी नेआरोपी को गिरफ्तार कर लिया। दरअसल, महादेव बुक ऐप एक ऑनलाइन सट्टेबाजी का प्लेटफॉर्म है।

शार्ट न्यूज

लखनऊ के बाद अब रामपुर में दरोगा गिरफ्तार

रामपुर। लखनऊ के बाद अब रामपुर में दरोगा को एंटी करप्शन टीम ने गिरफ्तार किया है। दरोगा मुकदमे के वादी को परेशान करते हुए 50 हजार रुपए की मांग कर रहा था। एंटी करप्शन टीम ने 10 हजार की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ दरोगा को गिरफ्तार किया है। जिले के घेर पीपल वाला के रहने वाले अकरम खान ने बताया कि उन पर और उनके भाई पर एक मुकदमा है। इस मुकदमे के विवेचक थाना गंज क्षेत्र की चौकी पाखड़ इंचार्ज सुधीर कुमार हैं। दरोगा सुधीर कुमार अक्सर मुकदमे के वादी को ही उल्टे हड़काते और रिश्वत की मांग करते। ऐसा नहीं करने पर जेल भेजने और धाराएं बढ़ाने की धमकी देते थे। मुकदमा के वादी ने परेशान होकर एंटी करप्शन टीम का सहारा लिया। आज चौकी पर मौजूद दरोगा को जाल बिछाकर 50 हजार की रिश्वत की पेशगी में 10 हजार रुपए देते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया गया। दरोगा को गिरफ्तार कर टीम थाना सिविल लाइंस ले गई। वादी मुकदमा अकरम खान ने बताया कि उन्हें धमकाया जा रहा है। हालांकि धमकाने वालों का उन्होंने नाम नहीं बताया।

आजमगढ़ में फर्जी पुलिस इंस्पेक्टर गिरफ्तार

आजमगढ़। आजमगढ़ जिले की पुलिस ने जिले में फर्जी इंस्पेक्टर बनकर वाहनों से वसूली करने वाले आरोपी को गिरफ्तार किया है। इस मामले में जिले की पुलिस को लगातार सूचना मिल रही थी। इस मामले में पीड़ित अजीत यादव जो कि निजामाबाद थाना क्षेत्र के जगदीशपुर का रहने वाला है ने पुलिस को शिकायती पत्र देकर शिकायत की थी कि पीड़ित जब अपनी ट्रक पर गिट्टी लादकर आ रहा था। उसी समय मोहम्मदपुर फरिहां मार्ग पर एक व्यक्ति सड़क पर पुलिस की वर्दी पहनकर गाड़ी को रूकने का इशारा किया। गाड़ी रोकने पर आरोपी ने डरा धमकाकर जान से मारने की धमकी देते हुए पांच हजार की मांग करने लगा। पीड़ित द्वारा दो हजार रूपया दिया भी गया। पुलिस की वर्दी पर लगी नेम प्लेट पर मुकेश पांडेय लिखा था। पीड़ित को संदेश हुआ कि आरोपी फर्जी है। इस मामले की शिकायत पर निजामाबाद थाने में मुकदमा दर्ज कर लिया गया। इस मामले में मुकदमा दर्ज होते ही जिले के एसपी अनुराग आर्य ने जिले की स्वाट टीम और थाने की टीम को तत्काल आरोपी की गिरफ्तारी के लिए निर्देशित किया।

नशे में छोटे ने की बड़े भाई की हत्या

नोएडा। नोएडा में पीजी में रहने वाले सफाई कर्मी की हत्या उसके छोटे भाई ने की थी। दोनों के बीच पीजी में शराब के नशे में झगड़ा हुआ था। पुलिस सीसीटीवी कैमरे की मदद से आरोपी तक पहुंची। आरोपी को न्यायालय के समक्ष पेश करने के बाद हिरासत में भेज दिया गया। आरोपी के कहने पर ही मृतक के एक अन्य भाई ने इस मामले में पीजी मालिक और उसके भाई के खिलाफ हत्या की धारा में केस दर्ज कराया था। एसीपी पवन गौतम ने बताया कि सेक्टर-70 के बीएस10 में पीजी का संचालन होता है। पीजी में हरदोई के रहने वाला राममूरत कनौजिया (34) सफाई का काम करता था। उसका छोटा भाई भी पीजी में आता जाता था। 30 अक्टूबर को राममूरत बेहोशी की हालत में मिला। पीजी मालिक ने अन्य लोगों की मदद से सफाई कर्मी को नजदीक के अस्पताल में उपचार के लिए भर्ती कराया। यहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इसके बाद मृतक के परिजनों ने शव को पीजी के बाहर रखकर हंगामा करना शुरू कर दिया। सूचना मिलते ही पुलिस की टीमें मौके पर पहुंच गईं। परिजनों का आरोप था कि राममूरत की हत्या गला दबाकर की गई है क्योंकि उसके शरीर पर चोट के निशान है। आरोपियों पर कार्रवाई करने का आश्वासन मिलने के बाद परिजनों ने मृतक का अंतिम संस्कार किया।

नवजात को अस्पताल में छोड़कर गायब हुई मां

आगरा। आगरा के एक अस्पताल में अविवाहित महिला की डिलीवरी हुई और महिला को लड़का पैदा हुआ। लेकिन बच्चा पैदा होने के बाद कुछ अन्य लोग अस्पताल पहुंचे और बच्चे को अपना बताने लगे। इस दौरान काफी देर तक हंगामा होता रहा। इसी बीच जो नर्स प्रसूता को अस्पताल में लेकर आई थी, वह बच्चे और प्रसूता को दूसरे अस्पताल में ले गई। जहां महिला अपने बच्चे को आईसीयू में छोड़कर गायब हो गई। मामले में बच्चे की खरीद फरोख्त की बात भी सामने आई है। बच्चे को जन्म देने वाली मां व दूसरा पक्ष दोनों ही गायब हैं। थाना ट्रांस यमुना क्षेत्र के कालिंदी बिहार में मौजूद रामकृष्ण अस्पताल में सोमवार रात 11: 00 बजे नर्स रेनू एक युवती और युवक को लेकर अस्पताल में पहुंची। जहां बताया गया की युवती गर्भवती है और उसकी डिलीवरी होनी है। अस्पताल के डॉक्टर अभिषेक चौहान ने युवती को अपने अस्पताल में भर्ती कर लिया और सुबह 4: 00 बजे ऑपरेशन से युवती ने नवजात को जन्म दिया। कुछ समय बाद कुछ अन्य लोग अस्पताल में पहुंच गए और वह युवती के नवजात को अपना बताने लगे।

मानसिक दिव्यांग ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

लखनऊ। आगरा के सदरौना गांव में मानसिक दिव्यांग युवती ने मंगलवार सुबह अपने घर के कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। परिजनों ने बिना पुलिस को सूचना दिए अंतिम संस्कार के लिए शमशान घाट लेकर चले गए। जिसकी सूचना एक व्यक्ति ने पुलिस को दी। सूचना पर मौक़े पर पहुंची पारा पुलिस पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। सदरौना निवासी दीपिका रावत (18) मानसिक दिव्यांग थीं। पिछले पांच सालों से उनका इलाज एक निजी अस्पताल से चल रहा था। लेकिन इलाज से आराम नहीं मिलने से तंग आकर उसने आत्महत्या कर ली। दीपिका घर पर अपनी छोटी बहन के साथ थी। अन्य लोग खेत पर काम करने गए, तभी उसने कमरे में जाकर पंखे से दुपट्टे के सहारे फ़ांसी लगा ली। कमरे में गई छोटी बहन ने दीपिका को फांसी के फंदे पर लटकते देखा और चिल्लाई। शोर सुनते ही आस पास के लोग इकट्ठा हो गए और परिवार के लोगों को सूचना दी। सूचना मिलते ही सभी लोग घर वापस आए। परिवार वालों का रो-रो कर बुरा हाल था।

हाईटेंशन-तार की चपेट में आने से ट्रक में लगी आग

सोनभद्र। सोनभद्र के करकोरी गड़िया के मध्य पड़ने वाले जंगल मे मंगलवार को गड़िया गांव से सीमेंट खाली कर लौट रही 14 चक्का ट्रक 11 हजार वोल्ट के लटके तार के चपेट में आ जाने से जलने लगी। जिस कारण गड़िया म्योरपुर मार्ग अवरुद्ध हो गया। ट्रक में इतनी भयावह आग लगी की कुछ ही देर में पूरा ट्रक आग की चपेट में आ गया। आग की लपटें और धुंए के गुब्बार दूर तक दिखाई दे रही थी। मौके पर बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ जमा हो गई। ग्रामीणों ने घटना की सूचना प्रधान प्रेमचंद यादव को दी गयी। वही मौके पर पहुंच ट्रक से कूदने के कारण चोटिल हुए चालक सहित तीन श्रमिकों को सीएचसी म्योरपुर भेजवाया। वही ग्राम प्रधान ने इसकी सूचना पुलिस और फायर ब्रिगेड को दिया गया। पुलिस की सूचना पर अग्निशमन की वाहन 2 घंटे बाद मौके पर पहुंची तब तक ट्रक 80 प्रतिशत से अधिक जल चुकी थी। प्रधान की सूचना पर विद्युत विभाग ने तत्काल विद्युत आपूर्ति रोक दी।जलती ट्रक के कारण विद्यालय से वापस लौट रहे छात्र,छात्राये व बाजार से लौट रहे ग्रामीणों को चार पांच घंटे तक रुकना पड़ा।

हमीरपुर में कंटेनर के अंदर से 50 भैंसे बरामद

हमीरपुर। एक कंटेनर में दो खंडों में भूसे की तरह भरी गई आधा सैकड़ा से अधिक भैंसों को मुस्करा पुलिस ने बरामद किया है। कंटेनर का मालिक औरैया का बताया जा रहा है। इन भैंसों को कटिंग के लिए किसी फैक्ट्री में लेकर जाया जा रहा था। मुखबिर से सूचना मिलने के बाद एक्टिव हुई पुलिस ने इन्हें बरामद कर लिया। ट्रक मालिक और चालक के खिलाफ पशु क्रूरता अधिनियम का मामला दर्ज किया जा रहा है। चालक और क्लीनर को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस के मुताबिक छतरपुर से इन मवेशियों को कंटेनर में लोड किया गया था। कंटेनर को अंदर से दो खंडों में बांट दिया गया था। नीचे-ऊपर दोनों खंडों में भैंसों को बेरहमी से भरा गया था। तमाम मवेशी इस सफर में अधमरी हालत में थे। एसएचओ ब्रजमोहन ने बताया कि मुखबिर की सूचना मिलते ही थाना पुलिस एक्टिव हो गई और मवेशियों से भरे इस कंटेनर को अलरा मोड़ के पास पकड़ लिया गया। चालक और क्लीनर को भी गिरफ्तार किया गया है। करीब पचास के आसपास मवेशी कंटेनर से मिले हैं।

बच्चे नहीं हुए तो पति-पत्नी ने दी जान

रात को बहन से हुआ था झगड़ा; घर के अंदर पड़े मिले दोनों के शव

बांदा। बांदा में पति-पत्नी ने सिर्फ इसीलिए जहर खाकर खुदकुशी कर ली, क्योंकि उनके बच्चे नहीं हो रहे थे। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया।

मृतका शांति के भाई ने बताया कि बहन के बच्चे नहीं हो रहे थे। इसलिए बहन और जीजा परेशान रहते थे। सोमवार रात 9 बजे जीजा वीरेंद्र ने जहर खा लिया था। इसके बाद उन्होंने अपनी बहन को फोन कर बताया कि मैंने और तुम्हारी भाभी शांति ने जहर खा लिया है।

इसके बाद 3 बजे तक ये लोग चिल्लाते-तड़पते रहे। जब सुबह इनकी बहन घर पहुंची, तब दोनों मरे पड़े थे। इन लोगों को अपने पड़ोसियों से कोई लेना-देना नहीं था। ये लोग अपने घर में ज्यादा रहते थे। किसी से कोई बात नहीं करते थे।

मृतक वीरेंद्र सिंह 60 साल के थे, जबकि उनकी पत्नी शांति देवी 50 की थी। शादी के कई साल बाद भी जब उनको बच्चा नहीं हुआ, तो वे लोग बहुत परेशान रहने लगे। वीरेंद्र का एक छोटा भाई राजेंद्र भी है, जो उनसे अलग रहता है। राजेश अविवाहित है। उसके साथ उनकी विधवा बहन कृष्णा भी रहती है।

कृष्णा देवी की शादी कानपुर में हुई थी और विधवा थी। वह अपने छोटे भाई राजेंद्र के साथ पिछले 30 साल से रहती थी। बताया जा रहा है कि हाल ही में वीरेंद्र के नाम 1,10,000 की सरकारी कॉलोनी आवंटित हुई थी। पहली किस्त के 40 हजार रुपए मिल चुके हैं, जिससे कॉलोनी का कुछ निर्माण कराया है।

इसके अलावा वीरेंद्र के पास आठ बीघा खेत भी है। उसने बाकी कॉलोनी निर्माण के लिए अपनी जमीन गिरवी रखने की बात कही थी। यह बात बहन कृष्णा को नागवार गुजरी। उसने गांव में कह दिया कि जो भी खेत लेगा, उसके लिए ठीक नहीं होगा। इसे लेकर वीरेंद्र और उसकी पत्नी का कृष्णा से झगड़ा भी हो गया था।

सोमवार देर शाम भी झगड़ा हुआ था। इसके बाद वीरेंद्र और पत्नी कृष्णा ने जहर खाकर जान दे दी। वीरेंद्र का शव नीचे जमीन पर पड़ा था, जबकि शांति का शव चारपाई पर पड़ा था।

दोनों तनाव में रहते थे

एसपी ने बताया कि दोनों बुजुर्ग दंपती के कोई संतान नहीं थी, जिसको लेकर दोनों तनाव में रहते थे। शादी के कई साल बीत जाने के बाद भी दोनों के कोई संतान नहीं थी। बीती रात इसी को लेकर उनमें आपस में झगड़ा भी हुआ था।

तभी मृतक की बहन उनके घर गई, जिस पर उसने बताया कि हम दोनों ने जहरीला पदार्थ खा लिया है।

पुलिस अधिकारियों ने मौका मुआयना किया। हालांकि एएसपी ने बताया कि किसी भी तरीके की आपराधिक वारदात समझ में नहीं आ रही है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में जो भी तथ्य सामने आएंगे, उस आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

जौनपुर के जिला विद्यालय निरीक्षक निलंबित

एजेंसी

जौनपुर। इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ खंडपीठ के आदेश का अनुपालन न हो पाने के आरोप में जिला विद्यालय निरीक्षक सूर्यभान को शासन ने निलंबित कर दिया है। उन्हें माध्यमिक शिक्षा निदेशालय प्रयागराज से संबद्ध किया गया है।

यह कार्रवाई नगर पालिका इंटर कालेज जौनपुर के अवकाश प्राप्त सहायक अध्यापक स्व. रामप्रकाश के जीपीएफ सहित अन्य सेवानिवृत्त देयों के भुगतान के मामले में की गई।

आधिकारिक सूत्रों के अनुसार विशेष सचिव आलोक कुमार द्वारा छह नवंबर को जारी किए गए अपने आदेश में कहा है कि शिक्षक राम प्रकाश की पत्नी आशा देवी ने न्यायालय के आदेश का अनुपालन न किए जाने का अनुरोध पत्र के माध्यम से किया है। जिला विद्यालय निरीक्षक को मामले का नियमानुसार परीक्षण कर तय समय के अंतर्गत विधिक कार्रवाई करते हुए आख्या शासन को उपलब्ध कराने के लिए 26 अप्रैल, 26 जून व 18 अगस्त को आदेश दिया गया था, लेकिन उन्होंने समय से अंतर्गत आख्या उपलब्ध नहीं कराई। इससे मामले का निस्तारण नहीं हो पाया।

इस मामले में आशा देवी बनाम दीपक कुमार सचिव माध्यमिक शिक्षा विभाग अवमानना याचिका दायर की गई। अवमानना याचिका की भी जिला विद्यालय निरीक्षक ने न तो जानकारी न दी, न ही आख्या प्रस्तुत किया। इसी आरोप में निलंबन की कार्रवाई की गई है।

सहायक अध्यापक के जीपीएफ सहित अन्य देयकों का मामले कई साल पहले का है। इस मामले में उच्चाधिकारियों को कार्रवाई करनी थी। तीन-चार दिन से मेरे निलंबन की चर्चा है, लेकिन अभी तक पत्र नहीं मिला है, जो आदेश होगा उसका अनुपालन किया जाएगा।

देवरिया मे पोते ने की दादा की पीट-पीटकर हत्या

देवरिया। उत्तर प्रदेश में देवरिया जिले के एकौना क्षेत्र में मंगलवार सुबह पानी भरने के विवाद में एक युवक ने अपने बुजुर्ग दादा की पीट पीट कर हत्या कर दी। पुलिस ने आरोपी को हिरासत में ले लिया है।

थाना प्रभारी एकौना ने यहां बताया कि क्षेत्र के बेलवा दुबौली गांव निवासी बलराम निषाद (70) की उसके पोते रामू ने आज सुबह हैण्ड पम्प से पानी भरने को विवाद को लेकर लाठी से पीटकर हत्या कर दी। आरोपी रामू को पुलिस हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। सूत्रों के अनुसार मृतक बलराम निषाद के चार बेटे हैं,जो अलग-अलग रहते हैं। बड़ा बेटा गुड्डू वर्तमान में विदेश में है। उसका बेटा रामू अपनी मां के साथ घर पर ही रहता है जबकि बलराम अपने दूसरे नंबर बेटे अनिल के साथ रहते थे। मंगलवार की सुबह दरवाजे पर लगे हैंडपंप से पानी लेने को विवाद हो गया। इसके बाद बलराम गांव के पास बंधे पर टहलने के लिए निकल गये।

सैफई मेडिकल यूनिवर्सिटी के चिकित्सक पेसमेकर घोटाले में गिरफ्तार

इटावा। उत्तर प्रदेश में इटावा जिले की सैफई मेडिकल यूनिवर्सिटी के कार्डियोलॉजी विभाग में तैनात डॉ.समीर सर्राफ को पेस मेकर घोटाले में गहन जांच के बाद मंगलवार को गिरफ्तार कर लिया गया।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक संजय कुमार ने बताया कि पेस मेकर घोटाले में गिरफ्तार डॉक्टर को भ्रष्टाचार निरोधक अदालत में पेश करने के लिए सैफई के पुलिस उपाधीक्षक नागेंद्र चौबे लखनऊ ले गए हैं। आरोप है कि सैफई मेडिकल यूनिवर्सिटी के हृदय रोगी मरीजों को सस्ती दर के पेसमेकर लगा करके अधिक रकम की वसूली की है जिसकी जांच शासन स्तर पर शुरू की गई थी। इसके बाद में सैफई मेडिकल यूनिवर्सिटी के तत्कालीन मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉक्टर आदेश कुमार ने सैफई थाने में मुकदमा दर्ज कराया। पुलिस सूत्रों ने बताया कि डॉ सर्राफ ने करीब 300 के आसपास मरीजों को फर्जी पेसमेकर लगाकर के तीन करोड रुपए के आसपास वसूली की है। आज समीर सर्राफ को गिरफ्तार करके लखनऊ की भ्रष्टाचार निरोधक अदालत में पेश करने के लिए सैफई के सीओ नागेंद्र चौबे कड़ी सुरक्षा में लेकर के गए हैं। आठ फरवरी 2022 को तत्कालीन चिकित्सा अधीक्षक प्रोफेसर डॉक्टर आदेश कुमार ने सैफई थाने में विश्वविद्यालय के कार्डियोलॉजी विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ समीर सराफ व अन्य पर वित्तीय अनियमितता, पीड़ित मरीजों को वित्तीय हानि पहुंचाने और मरीजों की जान खतरे में डालने के आरोप में मामला दर्ज कराया था। जिसकी जांच क्षेत्राधिकार नागेंद्र चौबे कर रहे थे।

इससे पूर्व विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति प्रोफेसर डॉ राजकुमार ने 20 मार्च 2021 को विश्वविद्यालय में कार्यरत कार्डियोलॉजी डिपार्टमेंट में कार्यरत सहायक प्रोफेसर डॉक्टर समीर सराफ को वित्तीय अनियमितता तथा सत्यनिष्ठा से कर्तव्यों का पालन न करने व नियमों का उल्लंघन करने का दोषी पाये जाने पर उन्हें तत्काल प्रभाव से निलम्बित कर दिया था। इसके अलावा उच्च स्तरीय वाह्य सदस्यों की जॉच कमिटी गठित कर व्यापक जॉच करने के निर्देश दिए थे।

फिरोजाबाद में चिकित्सक के खिलाफ मुकदमा

फिरोजाबाद। उत्तर प्रदेश में फिरोजाबाद जिले के थाना लाइन पार क्षेत्र में मरीज की उपचार के दौरान मौत के मामले में पुलिस ने कथित डॉक्टर के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।

पुलिस सूत्रों ने मंगलवार को बताया कि आजाद नगर निवासी निहाल सिंह (45) की सोमवार शाम तबीयत खराब हो गई थी। उसे सर्दी जुकाम खांसी हो गई थी। परिवार की लोग उसे पड़ोस के ही चिकित्सक उदयवीर सिंह की क्लीनिक पर ले गए। आरोप है चिकित्सक ने मना करने पर भी इंजेक्शन लगा दिया। इंजेक्शन लगते ही निहाल सिंह की मौत हो गई।

मृतक के बेटे अमित का आरोप है कि पिता की मौत होने के बाद चिकित्सक गाली गलौज और धमकी देने के बाद क्लीनिक बंद कर वहां से भाग गया।

अमित ने थाने में चिकित्सक उदयवीर निवासी आजाद नगर के खिलाफ 302 323 504 506 में मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस ने हत्या सहित कई धाराओं में मुकदमा दर्ज कर मामले की तहकीकात शुरू कर दी है। निहाल सिंह की मौत के बाद गुस्साए लोगों ने क्लीनिक के सामने शव को रख करीब चार घंटे तक धरना दिया था। चिकित्सक के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। गुस्साए लोग चिकित्सक के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग कर रहे थे। उनका आरोप था चिकित्सक की लापरवाही के चलते ही निहाल सिंह की मौत हुई है।

सूचना मिलते ही अधिकारियों के साथ कई थाने का पुलिस फोर्स भी मौके पर पहुंच गया जिन्होंने गुस्साए लोगों को समझाने का प्रयास किया। मौत होने की जानकारी मिलते ही एसीएमओ मौके पर पहुंच गए उन्होंने चिकित्सक की दुकान सीज कर दिया। पुलिस ने मृतक के पुत्र अमित द्वारा दी गई तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर मंगलवार को पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों के सौंप दिया है।

रायबरेली में मलबे में दब कर मजदूर की मौत

रायबरेली। उत्तर प्रदेश में रायबरेली जिले के जगतपुर इलाके में मकान के मलवे में दब कर एक मजदूर की मौत हो गयी जबकि दो श्रमिक गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस सूत्रों ने मंगलवार को बताया कि इलाके के एक मकान में निर्माण का काम चल रहा था कि दोपहर करीब तीन बजे शटरिंग खोलते समय भारी बीम गिर गयी जिसके नीचे दबकर अखिलेश कुमार (19) की मौके पर ही मौत हो गयी जबकि उसके साथी उपेंद्र कुमार (20) और प्रदीप (18) गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

सिद्धार्थनगर में बॉर्डर पर युवक गिरफ्तार

सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थनगर में 43वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल की सीमा चौकी अलिगढ़वा चेक पोस्ट पर तैनात जवानों ने अवैध तरीके से भारत से नेपाल लेकर जा रहे 75 हजार इंडियन करेंसी के साथ एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। इंडियन करेंसी और मोटरसाईकल सहित युवक को गिरफ्तार कर सीमा शुल्क कार्यालय ककरहवा के सुपुर्द कर दिया है। कमांडिंग अधिकारी शक्ति सिंह ने बताया कि चेक पोस्ट पर तैनात सहायक उप निरीक्षक सतीश कुमार के नेतृत्व में आरक्षी दीपेन्द्र कुमार, आरक्षी महिला रीना, संध्या और शिवानी के द्वारा चेक पोस्ट के रास्ते आने-जाने वाले लोगों की गहन रूप से तलाशी ली जा रही थी। इसी क्रम में चेक पोस्ट पर तैनात जवानों ने देखा कि एक व्यक्ति मोटरसाईकल पर भारत से नेपाल जाने के लिए चेक पोस्ट के समीप पहुंचा। जवानों द्वारा उस व्यक्ति को रोककर उसकी तलाशी ली गई, जिसमें उसके पास से भारतीय मुद्रा प्राप्त हुआ। व्यक्ति से पूछताछ करने के दौरान उसने अपना नाम सोहेल अहमद (28) जिला सिद्धार्थनगर बताया। पैसो की गिनती की गई तो कुल 75,000 इंडिया। करेंसी प्राप्त हुए। उक्त व्यक्ति के पास से प्राप्त मुद्रा से सम्बंधित कोई कागजात नहीं था और न ही इन पैसों से सम्बंधित कोई संतोषजनक जानकारी दे पाया।

सहारनपुर में भीड़ जुटाने पर होगी कार्रवाई

जिले में 31 दिसंबर तक धारा 144 लागू

सहारनपुर। सहारनपुर में सार्वजनिक स्थानों पर भीड़ जुटाने और चार या चार से अधिक लोगों के खड़े होने पर कार्रवाई होगी। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने 31 दिसंबर तक सीआरपीसी की धारा 144 लागू कर दी है। डीएम डॉ.दिनेश चंद्र ने कहा, कुछ असामाजिक तत्वों द्वार अप्रिय घटना की साजिश की जा सकती है। सार्वजनिक स्थानों, शिक्षण संस्थानों और रेलवे स्टेशन त्योहारों के चलते निगरानी में रहेंगे।

डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट डॉ.दिनेश चंद्र ने कहा, दीपावली, गोवर्धन पूजा, भैया दूज, चित्र गुप्त जयंती, नरक चतुर्दशी, छठ पूजा, चौधरी चरण सिंह जयंती, गुरु नानक जयंती, कार्तिक पूर्णिमा, गुरु तेग बहादुर शहीद दिवस, क्रिसमस डे को लेकर चौकसी बरती जा रही है। वहीं विभिन्न विभागों द्वारा चयन, प्रवेश परीक्षा, औद्योगिक संस्थानों, सार्वजनिक उपक्रमों व शिक्षण संस्थाना के अलावा रेलवे स्टेशन पर असामाजिक तत्व कोई घटना घटित कर सकते हैं। जिसको ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया है।

डीएम ने आदेश जारी करते हुए कहा, किसी भी सार्वजनिक स्थान पर चार या चार से अधिक व्यक्ति बिना सक्षम अधिकारी के आदेश के जुलूस या प्रदर्शन नहीं कर सकता है। न ही किसी को प्रेरित कर सकता है। डीजे बजाने की समय सीमा रहेगी। हाईकोर्ट की गाइडलाइन के अनुसार ही डीजे का प्रयोग कर सकेंगे।

अनियंत्रित ट्रक में बाइक सवारों को मारी टक्कर

मैनपुरी। मैनपुरी के थाना क्षेत्र के गांव में बाइक पर सवार चाचा भतीजी को अनियंत्रित तेज रफ्तार ट्रक ने जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में चाचा गंभीर रूप से घायल हो गया वही बाइक पर सवार भतीजी की घटनास्थल पर दर्दनाक मौत हो गई। जानकारी परिजनों को ही तो परिवार में चीज पुकार मच गई सूचना पर पहुंची पुलिस ने 7 वर्षीय बच्ची की शव को कब्जे में लेकर पंचायत नामा की कार्रवाई कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मामला एलाऊ थाना क्षेत्र के मैनपुरी कुसमरा मार्ग पर स्थित हरचंदपुर गांव के पास का है। जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के गांव भगतपुर निवासी पिंटू अपने 7 वर्षीय भतीजी सेजल बंटू पाल उम्र लगभग 7 वर्ष इलाबांस गाँव से घर का सामान लेने के लिए जा रहा था।

डायल-112 की लड़कियों को पुलिस ने खींच-खींचकर वैन में डाला

खींचतान में कपड़े फटे, कई चोटिल; अखिलेश का तंज- ये भाजपा के नारी वंदन का सच

लखनऊ। लखनऊ में डायल-112 में काम करने वाली लड़कियों को पुलिस ने खींच-खींचकर वैन में डाला। प्रदर्शनकारी लड़कियां सड़क पर बैठ गईं, तो पुलिसकर्मी उनको उठाकर ले जाने लगे। इस दौरान कई लड़कियों के कपड़े फट गए। कई को हल्की चोट लगी। दरअसल, 112 हेडक्वॉर्टर में ये लड़कियां कल यानी सोमवार से अपनी नौकरी से जुड़ी मांगों को लेकर प्रदर्शन कर रही हैं। करीब 14-16 घंटे धरना-प्रदर्शन के बाद जब उनकी मांगों पर बात नहीं बनी, तो मंगलवार सुबह करीब 200 लड़कियां मुख्यमंत्री आवास की तरफ जाने लगीं। इस दौरान थोड़ी ही दूर पर पुलिस ने बैरिकेडिंग लगाकर उन्हें रोक लिया।

फिर प्रदर्शनकारी लड़कियां धरने पर बैठ गईं। इससे वहां ट्रैफिक जाम होने लगा। इसके बाद पुलिस ने लड़कियों को ईको गार्डन जाकर प्रदर्शन करने के लिए कहा। मगर, वे लोग सीएम आवास जाने पर अड़ गईं। लड़कियां बैरिकेडिंग तोड़कर जाने लगीं, तो पुलिस वालों ने उनको पकड़ लिया। खींच-खींचकर वैन में भरना शुरू कर दिया। इस दौरान जमकर हंगामा और खूब बवाल हुआ। कई लड़कियां तो रोने लगीं। प्रदर्शन कर रही एक लड़की प्रतिभा ने चिल्लाते हुए बताया, पुरुष पुलिसकर्मियों ने हमको घसीटा। इसमें हमारी साथियों के कपड़े फट गए। कई लड़कियां तो बेहोश हो गईं।

आकांक्षा दुबे केस में सिंगर समर सिंह को जमानत मिली

सारनाथ के होटल में 26 मार्च को मिला था शव, 7 महीने से जेल में बंद है समर

वाराणसी/प्रयागराज। भोजपुरी अभिनेत्री आकांक्षा दुबे की मौत के मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने आरोपी समर सिंह की जमानत मंजूर कर ली। हाईकोर्ट ने समर सिंह को बॉन्ड पर रिहा करने का आदेश भी दिया है। गायक समर सिंह सात महीने से वाराणसी जेल में बंद है। 2 महीने पहले वाराणसी कोर्ट ने उसकी जमानत याचिका खारिज कर दी थी, जिसके बाद समर ने हाईकोर्ट में गुहार लगाई थी।

मंगलवार को प्रयागराज हाईकोर्ट में

समर सिंह की जमानत याचिका पर न्यायमूर्ति समीर जैन की अदालत में सुनवाई हुई। दोनों पक्षों के वकीलों ने अपनी दलीलें दी। समर सिंह के वकील ने कोर्ट से उनकी जमानत की मांग की और साक्ष्य पेश किए। वहीं आकांक्षा दुबे के वकील ने समर सिंह की जमानत का विरोध किया।

वाराणसी जिला जेल में 7 महीने से बंद हैं समर सिंह

सारनाथ में 26 मार्च को भोजपुरी अभिनेत्री आकांक्षा दुबे का शव होटल के कमरे में लटकता मिला था। सारनाथ पुलिस ने मामले को आत्महत्या बताया था लेकिन आकांक्षा की मां मधु दुबे इसे हत्या बताते हुए समर सिंह और संजय सिंह के खिलाफ केस दर्ज कराया। जिसके बाद पुलिस ने गायक समर सिंह को 6 अप्रैल की देर रात गाजियाबाद से गिरफ्तार किया गया था। समर सिंह के दोस्त संजय सिंह को 12 अप्रैल को गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेजा गया था।

समर सिंह की ओर से जमानत के लिए अदालत में प्रार्थना पत्र दिया गया था। जिला एवं सत्र न्यायाधीश की अदालत ने समर सिंह के जमानत प्रार्थना पत्र पर सुनवाई के लिए आज तलब किया है। जिसके बाद समर की जमानत मंजूर हो गई।

प्रतिबंधित दवाओं के सौदागरों को 20-20 साल की कैद

मुरादाबाद। मुरादाबाद पुलिस ने मजबूत पैरवी के दम पर प्रतिबंधित दवाओं के 4 सौदागरों को महज 7 महीने में सजा दिलाकर रिकॉर्ड बनाया है। मुरादाबाद पुलिस ने प्रतिबंधित दवाओं की खेप के साथ नशे के इन सौदागरों को जनवरी 2023 में अरेस्ट किया था।

मार्च में इनके खिलाफ कोर्ट में आरोप पत्र दाखिल किया गया। मंगलवार को अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश-7 मनीष कुमार प्रथम की कोर्ट ने 4 अभियुक्तों को दोषी करार देते हुए उन्हें 20-20 साल के कठोर कारावास और 2-2 लाख रुपये के अर्थदंड की सजा सुनाई है।

एडीजीसी वैभव अग्रवाल ने बताया कि जिन अभियुक्तों को कोर्ट ने दोषी करार देकर सजा सुनाई है उनमें जितेंद्र पुत्र किशोर कुमार निवासी मोहल्ला कुरैशी अमरोहा देहात, अमरोहा, अजीम पुत्र हनीफ निवासी गांव धीमरी थाना मझोला, मुरादाबाद, सावेज उर्फ आफरीदी पुत्र राबुल हसन निवासी गांव सहसपुर अलीनगर थाना डिडौली अमरोहा और जीशान पुत्र रऊफ निवासी मोहम्मला मियां कालोनी मुरादाबाद शामिल हैं।

शार्ट न्यूज

धानुका एग्रीटेक का मुनाफा 39.4 प्रतिशत बढ़ा

नयी दिल्ली। कृषि रसायन क्षेत्र की कंपनी धानुका एग्रीटेक ने चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में 101.77 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाया है जो पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि के 73.02 करोड़ रुपये की तुलना में 39.4 प्रतिशत अधिक है। कंपनी ने आज निदेशक मंडल की बैठक के बाद जारी वित्तीय लेखा जोखा में कहा कि सितंबर 2023 को समाप्त इस तिमाही में उसका कुल राजस्व 617.92 करोड़ रुपये रहा है जो पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि के 542.90 करोड़ रुपये की तुलना में 13.8 प्रतिशत अधिक है। दूसरी तिमाही के प्रदर्शन पर धानुका एग्रीटेक के प्रबंध निदेशक एम के धानुका ने कहा अनियमित बारिश, गिरती कीमतों और कमजोर निर्यात मांग के बीच चुनौतीपूर्ण समय में कंपनी ने काफी अच्छा प्रदर्शन किया। देश में असमान वर्षा ने भी हमारे राजस्व और आय पर असर डाला। हम अलनीनो स्थितियों और कृषि रसायनों में वैश्विक इन्वेंट्री के बीच वित्तीय वर्ष के शेष महीनों में मांग को लेकर आशावादी हैं। वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में कृषि रसायनों की मांग में सुधार होने की उम्मीद है। सरकार द्वारा रबी फसल के लिए घोषित उच्च एमएसपी और जलाशयों में जल स्तर में वृद्धि की पृष्ठभूमि में, घरेलू बाजार में कृषि रसायनों की मांग में सुधार होने की उम्मीद है।

फोनपे का डिजिटल गोल्ड पर ऑफर

नयी दिल्ली । फोननपे ने धनतेरस और दिवाली के अवसर पर 24 कैरेट सोने पर कैशबैक ऑफर की घोषणा की है। कंपनी ने आज यहां कहा कि उसके प्लेटफॉर्म से कम से कम 1000 रुपये का डिजिटल सोना खरीदने वाले ग्राहक को 3000 रुपये तक की कैशबैक का लाभ उठा सकते हैं। यह ऑफर 9 से 12 नवंबर 2023 तक सभी एक बार लेनदेन (प्रति यूजर एक बार) के लिए मान्य है।भारत में 19,000 से अधिक पिन कोड के 1 करोड़ से अधिक ग्राहकों ने फोनपे प्लेटफॉर्म पर 24 कैरेट सोना खरीदा है। ग्राहक शून्य मेकिंग शुल्क के साथ डिजिटल रूप से प्रमाणित 24 कैरेट सोना खरीद सकते हैं, और निःशुल्क स्टोरेज के लिए बीमाकृत बैंक-ग्रेड गोल्ड लॉकर का उपयोग करके लाभ उठा सकते हैं। ग्राहक अपने स्टोर किये गए सोने को किसी भी समय बेचने का विकल्प चुन सकते हैं, और पैसा 48 घंटों के भीतर उनके बैंक खातों में जमा हो जाएगा। ग्राहकों के पास अपनी पसंद की किसी भी राशि के लिए डिजिटल गोल्ड में निवेश करने की सुविधा भी है।

मध्य-पूर्व संघर्ष का भारतीय अर्थव्यवस्था पर फिलहाल असर नहीं; कच्चे तेल पर क्रिसिल रेटिंग्स का दावा

नई दिल्ली। हमास और इस्राइल के बीच जारी जंग को एक महीना हो गया है। इस लड़ाई के बाद दुनिया दो गुटों में बंटी नजर आ रही है। इस दुनिया के कारण न केवल लोगों की मौतें हो रही हैं वहीं, इसके कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी नकारात्मक प्रभाव दिख रहा है। विश्व बैंक भी इसे लेकर चेतावनी जारी कर चुकी है। इस बीच, भारत के लिए राहत भरी खबर सामने आई है। क्रिसिल रेटिंग्स ने कहा है कि इस जंग का असर अभी तक भारत की अर्थवयवस्था पर नगण्य प्रभाव पड़ा है। इसका साफ संकेत है कि भारतीय कंपनियां फिलहाल निशाने पर नहीं हैं। रेटिंग एजेंसी ने मंगलवार को एक रिपोर्ट में ये दावा किया है। क्रिसिल रेटिंग्स ने कहा कि उर्वरक और हीरे जैसे कुछ क्षेत्रों में प्रबंधनीय प्रभाव देखने को मिल सकता है। वहीं, अधिकांश क्षेत्रों में इस जंग का प्रभाव नगण्य होगा। हालांकि इसके कारण सोने और कच्चे तेल की कीमतों पर असर दिखा है। क्रिसिल की रिपोर्ट में कहा गया है कच्चे तेल को लेकर भारत की आयात पर अत्यधिक निर्भरता को देखते हुए इस पर विशेष रूप से नजर बनी रहेगी। कच्चे तेल की ऊंची कीमतों का कई अन्य क्षेत्रों पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। जो कच्चे तेल पर निर्भर रहते हैं। इसमें कहा गया है कि अन्य देशों से आपूर्ति करने की भारत की क्षमता के कारण ये जोखिम को कम करती है।

बॉम्बे हाईकोर्ट ने जेट एयरवेज के संस्थापक नरेश गोयल की याचिका खारिज की

नई दिल्ली। बंबई उच्च न्यायालय ने जेट एयरवेज के संस्थापक नरेश गोयल की उस याचिका को मंगलवार को खारिज कर दिया जिसमें उन्होंने बैंक ऋण चूक से जुड़े धनशोधन के एक मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा उनकी गिरफ्तारी को अवैध बताते हुए चुनौती दी थी। न्यायमूर्ति रेवती मोहिते डेरे और न्यायमूर्ति गौरी गोडसे की खंडपीठ ने कहा कि याचिका पर विचार नहीं किया जा सकता और इसलिए इसे खारिज किया जाता है। अदालत ने कहा कि गोयल के पास जमानत याचिका जैसे अन्य वैधानिक उपायों का लाभ उठाने का विकल्प खुला है। गोयल ने बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका दायर की थी जिसमें उन्होंने दावा किया था कि ईडी ने मामले में उन्हें अवैध रूप से गिरफ्तार किया है। गोयल ने अपनी याचिका में दावा किया कि उनकी गिरफ्तारी अवैध है क्योंकि यह धनशोधन रोकथाम कानून (पीएमएलए) के प्रावधानों का पालन किए बिना की गई। उन्होंने एक विशेष अदालत के आदेशों को भी चुनौती दी, जिसने उन्हें पहले ईडी की हिरासत में और उसके बाद न्यायिक हिरासत में भेज दिया था। ईडी ने याचिका का विरोध किया और कहा कि कानूनी प्रक्रिया का पालन करने के बाद गिरफ्तारी की गई।

इस साल अब तक स्थापित हुए 30.4 हजार स्टार्टअप, इन शहरों से सबसे ज्यादा आ रहे नए उद्यमी

सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ़ इंडिया की सोमवार को जारी हुई रिपोर्ट में दावा किया गया है कि देश में इस समय 1.14 लाख पंजीकृत स्टार्टअप काम कर रहे हैं। इनमें 30.4 हजार स्टार्टअप केवल इसी कैलेंडर ईयर में (अक्तूबर माह तक) रजिस्टर किए गए हैं। सबसे ज्यादा नए स्टार्टअप दूसरे-तीसरे स्तर के शहरों में स्थापित हो रहे हैं। इसे देखते हुए केंद्र सरकार ने भी इन शहरों में पहुंचकर स्टार्टअप को बढ़ावा देने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इससे इन क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। इंटरनेट सेवाओं के उपयोगकर्ताओं के हिसाब से भारत दुनिया में दूसरे नंबर पर आता है। देश का लगभग 98 फीसदी क्षेत्र इस समय 4त सेवाओं का उपयोग कर रहा है। इंटरनेट सेवाओं के इस विस्तार ने डिजिटल क्षेत्र में काम कर रहे स्टार्टअप को बेहतर क्षेत्र उपलब्ध कराया है। सस्ती इंटरनेट सेवा और सस्ते स्मार्टफोन की उपलब्धता ने भी देश में डिजिटल क्रांति को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई है। यही कारण है कि तकनीक क्षेत्र में स्टार्ट अप की संख्या न केवल लगातार बढ़ रही है, बल्कि डिजिटल सेवा क्षेत्र का लगातार विकास हो रहा है। इससे इन स्टार्टअप कंपनियों को भी भारी लाभ हो रहा है। डिजिटलीकरण का सबसे बड़ा लाभ यह हो रहा है कि तकनीक के कारण अब केवल बड़े मेट्रो शहरों में रहकर कंपनी चलाने की बाध्यता समाप्त हो गई है।

वीवर्क दिवालियापन की ओर बढ़ती रही; दूसरी ओर सह-संस्थापक की संपत्ति में हुआ करोड़ों डॉलर का इजाफा

नई दिल्ली। को-वर्किंग क्षेत्र कीर दिग्गज कंपनी वीवर्क ने अमेरिका के न्यू जर्सी में चैप्टर 11 दिवालियापन के लिए आवेदन दिया है। यह अमेरिका के सबसे मूल्यवान स्टार्टअप में से एक बनने के लिए वीवर्क में एक जबरदस्त वृद्धि के बाद भारी पतन की कहानी है। दिवालियापन के लिए आवेदन देते समय कंपनी का मूल्यांकन पांच साल पहले के लगभग 47 अरब डॉलर के उच्चतम मूल्य की तुलना में गिरकर 45 अरब डॉलर रह गया है। कंपनी के सह-संस्थापक एडम न्यूमैन की नेतृत्व शैली की आलोचना और कोविड-19 महामारी के दौरान को-वर्किंग मॉडल को मिली चुनौतियों के बीच आईपीओ के बाद से कंपनी के शेयरों में 99 प्रतिशत तक की गिरावट आ चुकी है। हालांकि वीवर्क का चाहे जो भी हस्र हुआ हो पर कंपनी पूर्व सीईओ और सह-संस्थापक एडम न्यूमैन की कहानी थोड़ी अलग रही है। कंपनी की परेशानियों के बावजूद न्यूमैन संपत्ति में बड़ा इजाफा हुआ है।

पैसिव आर्बिट्रेज इक्विटी फंड योजनाओं का आकर्षण रहा ऊंचा रहा

मुंबई। मोतीलाल ओसवाल एसेट मैनेजमेंट कंपनी (एमओएएमसी) की एक ताजा रिपोर्ट के अनुसार चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही (जुलाई-सितंबर,2023) के दौरान निवेशकों का सर्वाधिक आकर्षण एक्टिव इक्विटी (सक्रिय शेयर निवेश) केंद्रित म्यूचुअल फंड योजनाओं का आकर्षण और इन योजनाओं में आलोच्य तिमाही तिमाही के दौरान लगभग 74 हजार करोड़ रुपये के शुद्ध पूंजी प्रवाह हुआ।

कंपनी के विश्लेषण से पता चाला है कि आलोच्य अवधि में पैसिव इक्विटी फंड में आर्बिट्रेज फंड का आकर्षण अधिक था क्यों कि निवेशकों की निगाह में ये फंड कर की दृष्टि से लिक्विड फंडों की तुलना में निवेश के अच्छे विकल्प लगे।

आलोच्य तिमाही में सभी वर्गों (शेयर, ऋण पत्र और जिंस वर्ग आदि) की म्युचुअल फंड योजनाओं में शुद्ध पूंजी निवेश 51 हजार करोड़ रुपये का रहा। इस दौरान सक्रिय डेट फंड (ऋण प्रतिभूतियों में निवेश पर केंद्रित कोषों) योजनाओं से 51 हजार करोड़ रुपये की पूंजी की निकासी हुयी।

व्हेयर द मनी फ्लो% शीर्षक इस रिपोर्ट में कहा गया है कि इसके बाद आकर्षण पैसिव इक्विटी योजनाओं का रहा, जिनमें इस अवधि में लगभग 9,000 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश आया।

रिपोर्ट में कहा गया है कि जुलाई-सितंबर, 23 की तिमाही के दौरान इक्विटी फंडों में शुद्ध प्रवाह का बड़ा हिस्सा आर्बिट्रेज और व्यापक आधार वाली श्रेणियों की योजनाओं में गया जो बाजार में 80 प्रतिशत से अधिक रखते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य म्यूचुअल फंड योजनाओं की विभिन्न श्रेणियों के अनुमानित शुद्ध प्रवाह के विस्तृत विश्लेषण के साथ म्यूचुअल फंड उद्योग के भीतर निवेशकों की प्राथमिकताओं में अंतर्दृष्टि प्रदान करना है।

आलोच्य तिमाही में म्यूचुअल फंड (सभी श्रेणियों/संपत्ति वर्गों में) में लगभग 51 हाजर करोड़ रुपये के कुल शुद्ध प्रवाह में से करीब 39 हजार करोड़ सक्रिय फंडों में और 12 हजार करोड़ रुपये निष्क्रिय फंडों आया।

इस अवधि के दौरान 29 नयी निवेश योजनाएं पेश की गयी जिनमें कुल 16 हजार करोड़ रुपये का संग्रह हुआ। अध्ययन के आंकड़ों से पता चलता है कि ब्रॉड-आधारित फंडों में 42 हजार करोड़ रुपये का शुद्ध प्रवाह देखा गया है, जबकि ईएलएसएस और फोकस्ड फंडों से शुद्ध रूप से 2 हजार करोड़ की पूंजी का की निकासी हुई।

मोतीलाल ओसवाल एसेट मैनेजमेंट के पैसिव फंड्स के प्रमुख प्रतीक ओसवाल ने कहा, इस रिपोर्ट के साथ हमारा उद्देश्य पिछली तिमाही में म्यूचुअल फंड उद्योग के भीतर बदलती गतिशीलता और उभरते रुझानों का एक स्नैपशॉट प्रस्तुत करना है।

कंपनी के अनुसंधान प्रमुख (निष्क्रिय फंड) महावीर कासवा ने कहा, हमने म्यूचुअल फंड योजनाओं के लिए अपना खुद का मालिकाना 5-स्तरीय वर्गीकरण मॉडल विकसित किया है, जो निवेश की शैली, परिसंपत्ति वर्ग, संपत्ति के भीतर श्रेणी जैसे पहलुओं पर आधारित है।

सेंसेक्स और निफ्टी सपाट

मुंबई। विदेशी बाजार की गिरावट के दबाव में स्थानीय स्तर पर ऑटो, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, धातु, टेक और रियल्टी समूह में 1.21 प्रतिशत तक को बिकवाली होने से आज शेयर बाजार मामूली गिरावट के साथ सपाट बंद हुआ।

बीएसई का तीस साल शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 16.29 अंक उतरकर 64942.40 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 5.05 अंक फिसलकर 19406.70 अंक पर सपाट रहा। हालांकि दिग्गज कंपनियों के विपरीत मझौली और छोटी कंपनियों में लिवाली हुई, जिससे बीएसई का मिडकैप 0.53 प्रतिशत उछलकर 32190.08 अंक और स्मॉलकैप 0.38 प्रतिशत चढ़कर 38107.62 अंक पर पहुंच गया।

इस दौरान बीएसई में कुल 3813 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 1994 में लिवाली जबकि 1684 में बिकवाली हुई वहीं 135 में कोई बदलाव नहीं हुआ। इसी तरह निफ्टी की 30 कंपनियां हरे जबकि शेष 20 लाल निशान पर बंद हुई।

बीएसई में पांच समूहों में बिकवाली जबकि शेष 15 में लिवाली हुई। इस दौरान कमोडिटीज 0.12, सीडी 0.14, ऊर्जा 0.45, एफएमसीजी 0.16, वित्तीय सेवाएं 0.19, हेल्थकेयर 1.06, इंडस्ट्रियल्स 0.14, आईटी 0.04, यूटिलिटीज 0.51, बैंकिंग 0.49, तेल एवं गैस 1.11, पावर 0.23 और सर्विसेज समूह के शेयर 0.22 प्रतिशत मजबूत रहे।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गिरावट का रुख रहा। इस दौरान ब्रिटेन का एफटीएसई 0.09, जर्मनी का डैक्स 0.17, जापान का निक्केई 1.34, हांगकांग का हैंगसेंग 1.65 और चीन का शंघाई कंपोजिट 0.04 प्रतिशत गिर गया।

कारोबार की शुरुआत में सेंसेक्स 63 अंक बढ़कर 65,021.29 अंक पर खुला और यही इसका दिवस का उच्चतम स्तर रहा।

वहीं, बिकवाली होने से यह दोपहर तक 64,638.10 अंक के निचले स्तर तक लुढ़क गया। इसके बाद हुई लिवाली से इसने संभलने की कोशिश की लेकिन अंत में पिछले दिवस के 64,958.69 अंक के मुकाबले 0.03 प्रतिशत फिसलकर 64,942.40 अंक पर सपाट रहा।

वहीं, निफ्टी आठ अंक फिसलकर 19,404.05 अंक पर खुला और सत्र के दौरान 19,423.50 अंक के उच्चतम जबकि 19,329.10 अंक के निचले स्तर पर रहा। अंत में पिछले सत्र के 19,411.75 अंक की तुलना में 0.03 प्रतिशत कमजोर होकर 19,406.70 अंक पर रहा।

इस दौरान सेंसेक्स की 14 कंपनियों के शेयरों ने नुकसान उठाया। इनमें बजाज फाइनेंस 0.81, जेएसडब्ल्यू स्टील 0.63, रिलायंस 0.63, आईटीसी 0.55, महिंद्रा एंड महिंद्रा 0.52, एलटी 0.50, टीसीएस 0.45, विप्रो 0.43, एचडीएफसी बैंक 0.37, भारती एयरटेल 0.21, मारुति 0.18, टाटा मोटर्स 0.12, पावरग्रिड 0.10 और हिंदुस्तान यूनिलीवर 0.04 प्रतिशत शामिल रही।

वहीं, सन फार्मा 1.92, एनटीपीसी 1.38, एसबीआई 1.11, एक्सिस बैंक 1.06, टेक महिंद्रा 0.50, एशियन पेंट 0.40, आईसीआईसीआई बैंक 0.33, टाटा स्टील 0.29, नेस्ले इंडिया 0.24, एचसीएल टेक 0.18, टाइटन 0.15 और इंफोसिस के शेयरों ने 0.02 प्रतिशत का मुनाफा कमाया।

प्रिस्टिन लॉजिस्टिक्स डीएलआई का करेगी अधिग्रहण

नयी दिल्ली। प्रिस्टिन मालवा लॉजिस्टिक्स पार्क प्राइवेट लिमिटेड (प्रिस्टिन मालवा) और इसकी होल्डिंग कंपनी प्रिस्टिन लॉजिस्टिक्स एंड इंफ्रा प्रोजेक्ट्स लिमिटेड ने डिस्ट्रीब्यूशन लॉजिस्टिक्स इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड और इसकी समूह कंपनियों (डीएलआई इंडिया) के अधिग्रहण के लिए शेयर खरीद और शेयरधारकों के साथ समझौता करने की घोषणा की है। कंपनी ने यहां कहा कि यह समझौता एआईएम में सूचीबद्ध इंफ्रास्ट्रक्चर इंडिया पीएलसी, डीएलआई इंडिया और डीएलआई मॉरीशस की होल्डिंग कंपनी के साथ किया गया है। समझौते के तहत, डीएलआई मॉरीशस डीएलआई इंडिया की 100 प्रतिशत इक्विटी प्रिस्टिन मालवा को बेचेगा। प्रिस्टिन मालवा पहले से ही सूचीबद्ध इकाई सिकल लॉजिस्टिक्स लिमिटेड की होल्डिंग कंपनी है।लेन-देन के पूरा होने पर प्रिस्टिन मालवा की भारत में आईआईपी की सभी लॉजिस्टिक्स फर्मों में 100 प्रतिशत शेयरधारिता होगा। लेनदेन 60 दिनों के भीतर पूरा होने की उम्मीद है, जिसके बाद प्रिस्टिन मालवा सिकल और डीएलआई इंडिया दोनों की होल्डिंग कंपनी होगी।

बीएल एग्रो कृषि-तकनीक व पशु विज्ञान के क्षेत्र में यूनान के साथ साझेदारी की तैयारी में

नयी दिल्ली। देश की प्रमुख एफएमसीजी कंपनी बी एल एग्रो कृषि व्यापार, कृषि तकनीक और पशु विज्ञान के क्षेत्र में अपने कारोबार को गति देने और नयी तकनीक अपनाने के लिए यूनान सरकार के साथ साझेदारी की तैयारी कर रही है। यूनान कृषि प्रौद्योगिकी को अपनाने, कुशल कर्मियों के आदान-प्रदान, कृषि व्यापार,पशु विज्ञान को बढ़ावा देने और जलवायु परिवर्तन को कम करने के कदमों में रणनीतिक साझेदारी की संभावनाएं तलाशने के लिए बी एल एग्रो के साथ बातचीत कर रही है। यूनान के ग्रामीण विकास और खाद्य मंत्री एलीफ थेरियस एवगेनाकिस ने भारत यात्रा के दौरान कंपनी द्वारा आयोजित स्वागत समारोह में भारत में यूनान के राजदूत दिमित्रियोसलो नौने की मौजूदगी में बी एल एग्रो के प्रबंध निदेशक आशीष खंडेलवाल और लीड्स कनेक्ट सर्विसेज के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक नवनीत रविकर से मुलाकात के दौरान इस संबंध में विस्तार से चर्चा की। इस दौरान कृषि, पशुपालन, मत्स्य पालन और खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्रों में भारत-यूनान संबंधों पर चर्चा की गयी। इस मौके पर यूनान के मंत्री ने कहा कि हम भारत के साथ व्यापार संबंधों को गहरा करना चाहते हैं। हम कृषि और पशु विज्ञान के क्षेत्र में भी भारत के साथ गहन संवाद करना चाहते हैं। भारत और यूनान में किसानों की संपूर्ण मूल्य श्रृंखला को इस रणनीतिक साझेदारी से लाभ होना चाहिए। बीएल एग्रो समूह की कंपनी लीड्स कनेक्ट सर्विसेज के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक नवनीत रविकर ने कहा कि उन्होंने यूनानी मंत्री के साथ सार्थक बातचीत की और कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग के अवसरों की संभावनाओं को तलाशा रहे हैं। रविकर ने कहा कि वह यूनान से फेटा चीज, ऑलिव ऑयल और वाइन आयात करने तथा भारत से उच्च गुणवत्ता वाले मिलेट्स, बासमती चावल, मसाले और अन्य कृषि उत्पादों का निर्यात करने के विकल्पों की संभावनाएं तलाश रहे हैं। हाल ही में, बी एल एग्रो ने आपदा ग्रस्त क्षेत्रों में भोजन किट प्रदान करने के लिए यूनान स्थित सलस इंटरनेशनल ग्रुप के साथ एक संयुक्त उद्यम बनाया है। यह यूरोप में सहायता प्रदान करने वाली सबसे बड़ी फर्मों में से एक है। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी स्टार्टअप के लिए भारत में फंड्स लाने के वास्ते लीड्स कनेक्ट ने यूनानी स्टार्ट-अप इनक्यूबेटर जोइस्ट इनोवेशन पार्क के साथ समझौता किया है।

नाबार्ड ने गोवर्धन एस. रावत, डॉ. अजय कुमार सूद को प्रोन्नति दे उप प्रबंध निदेशक बनाया

मुंबई। राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) ने गोवर्धन एस. रावत और डॉ. अजय कुमार सूद को उप प्रबंध निदेशक पद पर नियुक्त करने की मंगलवार को घोषणा की। नाबार्ड ने एक विज्ञप्ति में कहा है कि नेतृत्व टीम में यह बढ़ोतरी समावेशी ग्रामीण विकास और कृषि वित्तपोषण को बढ़ावा देने के लिए नाबार्ड की प्रतिबद्धता को और मजबूत करने के लिए मूल्यवान अनुभव और विशेषज्ञता लाएगी। रावत, संगठन में तीन दशकों से अधिक समय से हैं। वह इससे पुणे में नाबार्ड के महाराष्ट्र क्षेत्रीय कार्यालय में मुख्य महाप्रबंधक थे। श्री रावत की विशेषज्ञता परियोजना मूल्यांकन, बुनियादी ढांचे के वित्तपोषण, ग्रामीण विकास, जिला ऋण योजना, परामर्श सेवाएं, बोर्ड सचिवालय और मानव संसाधन प्रबंधन जैसे विविध क्षेत्रों में फैली है। वह कृषि और पशुपालन में स्नातक की डिग्री, सीएआईआईबी, बैंकिंग और वित्त में स्नातकोत्तर डिप्लोमा और व्यावसायिक नेतृत्व और रणनीति विधा में एमबीए की डिग्री रखते है। डा सूद इससे पहले शिमला में नाबार्ड, हिमाचल प्रदेश क्षेत्रीय कार्यालय के मुख्य महाप्रबंधक थे। ग्रामीण बुनियादी ढांचे के विकास पर मजबूत ध्यान देने के साथ, उन्होंने आरआईडीएफ, माइक्रो इरिगेशन फंड और वेयरहाउस इंफ्रास्ट्रक्चर फंड जैसे फंडों को लागू करने में भूमिका निभाई है। उन्होंने चौधरी सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय (सीएसकेएचपीकेवी) से कृषि में पृष्ठभूमि और भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई), नई दिल्ली से कृषि अर्थशास्त्र में पीएचडी किया है।

इस्पात पर कार्बन उत्सर्जन संबंधी दंडात्मक कार्रवाई का विरोध करेगा भारत : गोयल

नयी दिल्ली। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने मंगलवार को कहा कि भारत इस्पात उद्योग पर कार्बन उत्सर्जन सीमा को लेकर यूरोपीय या अन्य देशों की ओर से अतिरिक्त शुल्क आरोपित करने या इसी प्रकार की दंडात्मक कार्रवाई का विरोध करेगा।

राजधानी में इस्पात उद्योग द्वारा आयोजित सम्मेलन 'आईएसए स्टील कॉन्क्लेव 2023' को संबोधित करते श्री गोयल ने कहा कि अपनी बढ़ती आबादी की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए बुनियादी ढांचे में बड़े पैमाने पर निवेश की ओर बढ़ रहा है और इस क्रम में इस्पात उद्योग का विशेष महत्व है।

इस्पात उद्योग में कार्बन उत्सजन की सीमा के समायोजन तंत्र (सीबीएएम) से संबंधित चिंताओं पर श्री गोयल ने आश्वासन दिया कि भारत सरकार ने इस मुद्दे को यूरोपीय संघ और विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) में उठाया है। उन्होंने भारतीय उत्पादकों और निर्यातकों के लिए उचित व्यवहार के महत्व पर जोर दिया और घरेलू इस्पात उद्योग को नुकसान पहुंचाने वाले अनुचित करों या लेवी का विरोध करने की भारत की प्रतिबद्धता की पुष्टि की।

उन्होंने विकसित देशों के बाजार में भारत के इस्पात उद्योग के लिए प्रवेश की अधिक अच्छी व्यवस्था के लिए मुक्त व्यापार समझौता वार्ताओं के अतंरगत इसका ध्यान रखने और इस तरह के किए जाने वाले प्रयासों पर प्रकाश डाला। वाणिज्य मंत्री ने इस्पात उद्योग को प्रभावित करने वाले सुरक्षा शुल्क और अन्य अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौतों से संबंधित चिंताओं को दूर करने का वादा किया।

गोयल ने कहा कि भारत में इस्पात उद्योग वर्तमान में लगभग 20 लाख लोगों को रोजगार देता है, जो राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान देता है। मंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि इस्पात उद्योग आत्मनिर्भरता में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकता है क्योंकि भारत इस क्षेत्र की बढ़ती मांगों को पूरा करने का प्रयास कर रहा है।

गोयल ने उद्योग से बौद्धिक संपदा और मूल्यवर्धन के महत्व को प्राथमिकता देने पर जोर दिया।कहा कि बुनियादी ढांचे के विकास में इस्पात क्षेत्र की भूमिका महत्वपूर्ण है। उन्होंने इसी संदर्भ में कहा कि भारत ने 2030 तक अपनी इस्पात उत्पादन क्षमता ढाई गुना कर सालाना 30 करोड़ टन तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है। श्री गोयल के पास उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण तथा कपड़ा मंत्रालय का भी दायित्व है।

उन्होंने भारत में एमएसएमई क्षेत्र के लिए इस्पात उद्योग के सहयोग की जरूरत पर भी बल दिया इसके लिए उनकी निरंतर प्रतिबद्धता का आग्रह किया।

गोयल ने गुणवत्ता मानकों के प्रति उद्योग की प्रतिबद्धता और उपभोक्ताओं के लिए उच्च गुणवत्ता वाले इस्पात उत्पाद सुनिश्चित करने के लिए गुणवत्ता नियंत्रण आदेशों का विस्तार करने की आवश्यकता को भी रखांकित किया।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि राष्ट्रीय इस्पात नीति 2017 और उद्योग के हालिया निवेश के साथ-साथ प्रचुर लौह अयस्क संसाधनों और बढ़ती घरेलू और अंतरराष्ट्रीय मांग के साथ, भारत 30 करोड़ टन स्टील उत्पादन क्षमता के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए तैयार है।

भंडारण निगम की 54 जमीनों के मुद्रीकरण के लिए नाइट फ्रैंक इंडिया सलाकार नियुक्त

मुंबई। रियल एस्टेट कन्सलटेंसी फर्म नाइट फ्रैंक इंडिया ने मंगलवार को कहा कि उसे देश भर में 54 प्रमुख स्थानों पर केंद्र सरकार के वेयरहाउसिंग उपक्रम केंद्रीय भंडारण निगम की गोदामों की जमीन के विकास और मार्केटिंग के लिए 'नॉलेज पार्टनर'(विशेज्ञ सलाहकार) के रूप में नियुक्त किया गया है। इन सम्पत्तियों का विकास राष्ट्रीय सम्पत्तियों की मुद्रीकरण योजना के तहत किया जा रहा है। कंपनी ने एक विज्ञप्ति में बताया कि इन जगहों पर भंडारण निगम के उपलब्ध भूखंडों के विकास की लागत 2,152 करोड़ रुपये रहने काअनुमान है। बयान के मुताबिक इन 54 स्थानों पर भंडारण निगम के गोदामों के पास उपलब्ध लगभग 572 एकड़ जमीन में से लगभग 344 एकड़ जमीन पर वेयरहाउस विकसित किये जाये सकते हैं। इन जगहों पर पांच एकड़ से 30 एकड़ तक की जमीन उपलब्ध होगी और इनके विकास की कुल लागत लगभग 2,152 करोड़ रुपये होने का अनुमान है। नाइट फ्रैंक इंडिया ने कहा है कि राष्ट्रीय मुद्रीकरण योजना के तहत, सेंट्रल वेयरहाउसिंग कॉरपोरेशन (सीडब्ल्यूसी) पूरे देश में सीडब्ल्यूसी गोदामों का मुद्रीकरण और आधुनिकीकरण कर रहा है। इस योजना में, सीडब्ल्यूसी 45 साल की अवधि के लिए जमीन के विकास और उस पर काम की छूट का अनुबंध करेगा। ये अनुबंध डिजाइन बिल्ड फाइनेंस ऑपरेट एंड ट्रांसफर (डीबीएफओटी) मॉडल के तहत किए जाएंगे।

विज्ञप्ति में भंडारण निगम के प्रबंध निदेशक अमित कुमार सिंह के हवाले से कहा गया है, निगम की परिसंपत्तियों का आधुनिकीकरण और मुद्रीकरण आठ स्थानों पर और एक जगह सीधी किराये की प्रक्रिया के साथ शुरू हुआ था, अब इसमें 54 भू-खंड शामिल कर इस पहल को विस्तार दिया गया है।

नाइट फ्रैंक इंडिया के वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक - अनुसंधान, सलाहकार, बुनियादी ढांचा और मूल्यांकन, गुलाम जिया ने कहा, देश भर में बड़े डेवलपर्स के लिए वेयरहाउसिंग संपत्तियां एक आकर्षक निवेश अवसर बन गयी हैं। सीडब्ल्यूसी के ये भूखंड डेवलपर फर्मों के लिए देश के सभी भौगोलिक क्षेत्रों में अपने वेयरहाउसिंग पोर्टफोलियो का और विस्तार करने का एक शानदार अवसर खोलते हैं।'

निकट भविष्य में इसका और विस्तार हो कसता है। इस योजना में सीडब्ल्यूसी ठेका लेने वाले से गोदाम की शुद्ध आमदनी में 5 प्रतिशत हिस्सा या राजस्व में न्यूनतम गारंटीशुदा हिस्से के रूप में जो भी अधिक हो, लेता है।

परफॉर्मेंस बढ़ाने वाले डायमेन्सिटी 9300 चिपसेट के लिए ऑल बिग कोर डिजाइन पेश

नयी दिल्ली। मीडियाटेक ने अपनी तरह के अनूठे ऑल बिग कोर डिजाइन के साथ अपना नवीतम मोबाइल चिप डायमेन्सिटी 9300 पेश करने की घोषणा की है। कंपनी ने यहां कहा कि इसकी अनूठी बनावट गेमिंग, वीडियो बनाने और ऑन डिवाइस जेनरेटिव एआई प्रोसेसिंग में यूज़र को बेजोड़ अनुभव प्रदान करती है। मीडियाटेक के अध्यक्ष जोए शेन ने कहा, डायमेन्सिटी 9300 मीडियाटेक का अभी तक का सबसे शक्तिशाली चिप सेट है जो हमारी क्रांतिकारी ऑल बिग कोर डिजाइन के साथ अग्रणी स्मार्टफोन के कंप्यूटिंग पावर को जबरदस्त ढंग से बढ़ाता है। हमारी अपग्रेडेड ऑन-चिप एआई प्रोसेसिंग यूनिट के साथ इसका अनूठा वास्तुशिल्प जेनरेटिव एआई एप्लीकेशंस के एक नये युग की शुरुआत करेगा क्योंकि डेवलपर्स ने एज एआई और हाइब्रिड एआई कंप्यूटिंग क्षमताओं के साथ इन सीमाओं को पार किया है। डायमेन्सिटी 9300 में मीडियाटेक के अगली पीढ़ी के एपीयू 790 एआई प्रोसेसर को एकीकृत किया गया है और अधिक तेज एवं ज्यादा सुरक्षित एज कंप्यूटिंग के लिए जेनरेटिव एआई निष्पादन में उल्लेखनीय सुधार एवं ऊर्जा दक्षता के लिहाज से इसे डिजाइन किया गया है। एपीयू 790 बिजली की खपत 45 प्रतिशत तक घटाते हुए इंटीगर एवं फ्लोटिंग प्वाइंट ऑपरेशंस परफॉर्मेंस को दोगुना करता है। ऑपरेटर को तेज करने के लिए ट्रांसफॉर्मर मॉडल को अपनाकर एपीयू 790 की प्रोसेसिंग स्पीड, पूर्व की पीढ़ी के मुकाबले आठ गुना अधिक है जिसमें स्टेबल डिफ्यूजन का उपयोग कर एक सेकेंड के भीतर इमेज जेनरेशन होता है।

नई दिल्ली
बुधवार 08 नवंबर 2023
Www.gauravshalibharat.com

शार्ट न्यूज

राष्ट्रीय खेल : हरियाणा की महिला, पुरुष हॉकी टीमें पहुंची फाइनल में

चंडीगढ़। गोवा में चल रही राष्ट्रीय खेलों में हरियाणा के खिलाड़ियों का शानदार प्रदर्शन लगातार जारी है। मंगलवार को राज्य की महिला और पुरुष हॉकी टीमों ने इतिहास रचते हुए फाइनल में स्थान बनाया जबकि महिला कबड्डी टीम भी फाइनल पहुंची। सेमीफाइनल मैच में हरियाणा की पुरुष टीम ने उत्तर प्रदेश को 1-0 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया। महिला टीम ने सेमीफाइनल मुकाबले में पंजाब को 4-2 से हराकर फाइनल में जगह बनाई। इससे पहले, वर्ष 2015 में दोनों टीमों ने एक साथ फाइनल और सेमीफाइनल में जगह बनाते हुए पदक जीते थे। पुरुषों की टीम ने कांस्य पदक और महिला टीम ने रतज पदक जीता था। इस बार दोनों टीमों से स्वर्ण पदक की उम्मीद है। हरियाणा महिला कबड्डी टीम ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए सेमीफाइनल मैच में राजस्थान को 32-17 के स्कोर के साथ 15 अंकों के बड़े अंतर से हराते हुए फाइनल में जगह बनायी। हरियाणा महिला बीच हैंडबॉल टीम ने दिल्ली को पराजित कर सेमीफाइनल में स्थान बनाया। मुक्केबाजी मुकाबले में राज्य की स्वीटी बूरा और रिंकू ने अपने-अपने सेमीफाइनल मैच जीतकर फाइनल में प्रवेश किया। निशानेबाजी मुकाबले में नैंसी ने प्रदेश की झोली में रजत पदक डाला। तीरंदाजी मुकाबले में महिला टीम ने स्वर्ण पदक, लड़कों की टीम ने रजत पदक और तीरंदाजी मिश्रित टीम मुकाबले में प्रदेश को रजत पदक दिलाये।

शाकिब अल हसन वर्ल्ड कप से बाहर

श्रीलंका के एंजेलो मैथ्यूज और बांग्लादेश के शाकिब अल हसन से जुड़े टाइम आउट विवाद के ठीक एक दिन बाद, शाकिब को चोट के कारण वर्ल्ड कप से बाहर हो गए है। शाकिब के बाएं हाथ की उंगली में फ्रैक्चर हो गया है। बांग्लादेश का आखिरी वर्ल्ड कप मुकाबला ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 12 नवंबर को पुणे में है। हालांकि बांग्लादेश पहले ही वर्ल्ड कप के सेमीफाइनल की दौड़ से बाहर हो चुका है, फिर भी वे 2025 चैंपियंस ट्रॉफी में जगह बनाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। वर्ल्ड कप में लीग स्टेज खत्म होने के बाद पॉइंट्स टेबल में जो टीमें टॉप-8 में रहेंगी, वह पाकिस्तान की मेजबानी में 2025 चैंपियंस ट्रॉफी खेलेंगी। बांग्लादेश टीम के फिजियो बायजेदुल इस्लाम खान ने मंगलवार को बताया कि, श्रीलंका के खिलाफ सोमवार को शाकिब को उनकी पारी की शुरुआत में उंगली में चोट लगी थी। लेकिन उन्होंने टेपिंग और पेन किलर दवाओं के साथ बल्लेबाजी करना जारी रखा। 82 रन के साथ बांग्लादेश की जीत में उनका अहम योगदान रहा। मैच के बाद शाकिब का दिल्ली में एक्स-रे हुआ जिसमें बाएं पीआईपी जोड़ में फ्रैक्चर की पुष्टि हुई। रिकवरी तीन से चार सप्ताह लगने का अनुमान जताया जा रहा है। वह अपना रिहैब शुरू करने के लिए आज बांग्लादेश रवाना होंगे। बांग्लादेश टीम के कप्तान शाकिब श्रीलंका के खिलाफ सोमवार को हुए वर्ल्ड कप मुकाबले में कॉन्ट्रोवर्सी का शिकार हो गए। श्रीलंका की पारी के 25वें ओवर में सदीरा समरविक्रमा का विकेट गिरने के बाद एंजेलो मैथ्यूज ग्राउंड पर आए।

श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड को बर्खास्त करने का फैसला रद्द हुआ: कोर्ट करेगा मामले की सुनवाई

वर्ल्ड कप में खराब प्रदर्शन के बाद सोमवार को खेल मंत्री रोशन रणसिंघे द्वारा बर्खास्त किए गए श्रीलंकाई क्रिकेट बोर्ड को कोर्ट का दरवाजा खटखटाना पड़ा। श्रीलंका की अपील पर अदालत ने देश के क्रिकेट बोर्ड को बर्खास्त करने के खेल मंत्री के फैसले को रद्द कर दिया और पूरी सुनवाई होने तक मंगलवार को फिर बोर्ड मेंबर्स को उनकी जगह दी। कोर्ट ने सोमवार को बोर्ड अध्यक्ष शम्मी सिल्वा की याचिका स्वीकार कर ली। बोर्ड की बहाली दो सप्ताह के लिए है जब अदालत मामले की दोबारा सुनवाई करेगी। वर्ल्ड कप में निराशाजनक प्रदर्शन के बाद श्रीलंका के खेल मंत्रालय ने सोमवार, 6 नवंबर, को श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड को बर्खास्त कर दिया था।श्रीलंका क्रिकेट के लिए एक अंतरिम बोर्ड का गठन भी किया था। खेल मंत्री रोशन रणसिंघे के कार्यालय ने एक बयान में कहा था कि, देश के 1996 वर्ल्ड कप विजेता कप्तान अर्जुन रणतुंगा को नए अंतरिम बोर्ड का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। बोर्ड पर भ्रष्टाचार के भी आरोप लगे थे। इससे पहले, भारत से मिली हार के बाद खेल मंत्री रोशन रणसिंघे ने शुक्रवार के अपने एक बयान में श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड को देशद्रोही और भ्रष्ट कहा था। उन्होंने बोर्ड के सदस्यों से इस्तीफा देने की मांग की थी। इसके बाद, श्रीलंका क्रिकेट के सचिव मोहन डी सिल्वा ने शनिवार, 4 नवंबर को अपने पद से इस्तीफा दे दिया था।

पाकिस्तान में आतंकवादी हमले में दो पुलिसकर्मियों की मौत, तीन घायल

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के उत्तर पश्चिम खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में मंगलवार को एक तेल ड्रिलिंग कंपनी के संयंत्र पर आतंकवादी हमले में दो पुलिसकर्मियों की मौत हो गयी और तीन अन्य घायल हो गये। द्राजंदा के पुलिस उपाधीक्षक शेर उल्लाह ने बताया कि घटना डेरा इस्माइल खान जिले के द्राजंदा इलाके में सुबह उस समय हुई जब अत्याधुनिक हथियारों से लैस 20 से 22 आतंकवादियों ने संयंत्र में घुसने की कोशिश की। उन्होंने बताया कि संयंत्र के मुख्य द्वार पर मौजूद पुलिसकर्मियों ने तुरंत कार्रवाई की। उन्होंने कहा कि हमले वाली जगह पर एक तेल का कुआं और कर्मचारियों के आवास थे। अगर हमलावर इलाके में घुसने में सफल हो जाते तो हमले की भयावहता और बड़ी हो सकती थी। उन्होंने बताया कि घायल पुलिसकर्मियों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। आतंकवादी पहाड़ी इलाके में भाग गए हैं और पुलिस उनके द्वारा छोड़े गए सबूतों के आधार पर उनकी संबद्धता की पहचान कर रही है। फिलहाल किसी भी समूह ने हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है।

हरियाणा ने लगाया स्वर्ण पदकों का अर्द्धशतक

चंडीगढ़। गोवा में चल रहे 37 वें राष्ट्रीय खेलों में हरियाणा के खिलाड़ियों ने स्वर्ण पदकों अर्द्धशतक लगाते हुये अभी तक कुल 135 पदक राज्य की झोली में डालने का काम किया है। राज्य के खिलाड़ियों ने 50 स्वर्ण, 35 रजत और 50 कांस्य पदक जीते हैं। राष्ट्रीय खेल समाप्त होने को अभी तीन दिन बाकी हैं और राज्य को अभी और पदक मिलने की उम्मीद है। सोमवार को रोइंग एकल मुकाबलों में राज्य की सुमन देवी ने स्वर्ण पदक जीत कर इतिहास रचा जबकि मिश्रित टीम स्पर्द्धा में किरण और हरविंदर चीमा ने राज्य को कांस्य पदक दिलाया। राज्य की कबड्डी टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए महिला और पुरुष वर्ग की टीमों ने सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया है। पुरुषों की टीम ने इस स्पर्धा में गोवा को 56-38 के अंतर से हराया। जबकि महिला टीम ने झारखंड को 43-15 के बड़े अंतर से शिकस्त दी। निशानेबाजी की 25 मीटर रैपिड फायर पिस्टल स्पर्धा में अनीश भनवाला ने रजत पदक और आदर्श सिंह ने कांस्य पदक जीते। सोमवार से योगासन के मुकाबले भी शुरू हो गए। पहले दिन परम्परागत योगासन स्पर्धा में अभिषेक ने राज्य को रजत पदक दिलाया। राष्ट्रीय खेलों में हरियाणा खिलाड़ी दल के प्रभारी और हरियाणा ओलम्पिक संघ के कोषाध्यक्ष एवं पूर्व सहकारिता मंत्री मनीष ग्रोवर ने खिलाड़ियों से मुलाकात की।

राष्ट्रगान और प्रशंसको से मिलती है ऊर्जा : विराट कोहली

मुबंई। अपने आदर्श सचिन तेंदुलकर के एक दिवसीय शतकों की बराबरी कर उत्साह से लबरेज विराट कोहली ने कहा कि मैदान पर हजारों प्रशंसकों की मौजूदगी में मैच से पहले इतने सारे लोगों के सामने राष्ट्रगान गाना अद्भुत ऊर्जा का संचार करता है। स्टार स्पोर्ट्स के साथ विशेष बातचीत में कोहली ने कहा सच कहूं तो विश्वकप शुरु होने से पहले मुझे पहले जैसा कोई दबाव महसूस नहीं हुआ। मुझे केवल इस बात की खुशी थी कि मैं एशिया कप के बाद फिर से ऐसे बड़े अवसर पर भाग ले रहा था। मुझे बहुत सी बातें याद आईं, बीच में कोविड था जिसके कारण स्टेडियम में प्रशंसकों की कमी थी। मुझे लगा कि मैच के दिन से पहले मेरे अंदर भावनाओं का सैलाब उमड़ आया।

भारत और पाकिस्तान के बीच अहमदाबाद में खेले गये मैच का जिक्र करते हुये उन्होने कहा सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रशंसक स्टेडियम में मौजूद हैं। अगर उस दिन वहां इतने सारे लोग नहीं होते, तो मुझे लगता है कि इस पारी का कोई खास महत्व नहीं होता, क्योंकि प्रशंसक जो ऊर्जा लेकर आते हैं, उसके कारण एक खेल एक खेल से कहीं ज्यादा कुछ बन जाता है। विराट कोहली ने खचाखच भरे स्टेडियम में राष्ट्रगान की अनुभूति का अनुभव करने पर कहा, यह अद्भुत है, मैं भारत-पाकिस्तान के साथ विश्व कप या बड़े मंचों पर जितने भी खेलों का हिस्सा रहा हूं, उनमें से यह एक ऐसी चीज है जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। इतने सारे लोगों के सामने राष्ट्रगान गाना और लोग आपके साथ इसे गाते हैं।

मेरे लिए यह बेहद खास है, कि आपके सभी समर्थक और आप एक टीम के रूप में उस खेल में एक साथ मिलकर काम करते हैं। अन्य सभी चीजें, चाहे वह बल्लेबाजी हो, गेंदबाजी हो या क्षेत्ररक्षण हो, यह सब अलग-अलग हो रहा है, यह एक ऐसा क्षण है जहां हर किसी की ऊर्जा एक चीज में व्यवस्थित हो जाती है और उसकी शक्ति बहुत खास होती है। यह महसूस करने लायक चीज़ है, यह ऐसी चीज़ नहीं है जिसे आप शब्दों में बयां कर सकें। किसी को एक पल में उस तरह की ऊर्जा का अनुभव करने और महसूस करने के बहुत कम अवसर मिलते हैं।

गढ़वाल और सीआईएसएफ ने जीते अपने-अपने मुकाबले

नयी दिल्ली। गढ़वाल एफसी और सीआईएसएफ ने मंगलवार को राजधानी दिल्ली स्थित डॉ. अम्बेडकर स्टेडियम में चल रहे शहीद भगत सिंह मेमोरियल फुटबॉल टूर्नामेंट में अपने-अपने मुकाबलों में जीत दर्ज की है। सीआईएसएफ ने दिन के पहले मुकाबले में भारतीय वायुसेना को 2-1 से हराकर अपनी जीत दर्ज की। दिन के दूसरे मैच में गढ़वाल एफसी ने सुदेवा को 2-1 से परास्त किया। सीआईएसएफ की ओर से पवन और राजदीप ने एक-एक गोल दागे। वायुसेना की ओर से जिनीश ने गोल किया। आज की हार के बाद वायुसेना का ग्रुप 'बी' बाहर होना तय हो गया है जबकि सीआईएसएफ और गढ़वाल बेहतर स्थिति में हैं। इस जीत से गढ़वाल एफसी ने सेमीफाइनल में जगह बना ली है। गढ़वाल और सुदेवा के मध्य खेला गया दूसरा मुकाबला रोमांचक रहा। पहले हाफ में गढ़वाल ने जयदीप की फ्री-किक पर शानदार गोल से बढ़त बनाई, जिसे सुदेवा के सेई ने गोल करके बराबर कर दिखाया।

विराट की आलोचना पर हफीज को वॉन का करार जवाब

नयी दिल्ली। भारतीय दिग्गज क्रिकेटर विराट कोहली को अपने जन्मदिन पर एकदिवसीय मुकाबले में सचिन तेंदुलकर के रिकॉर्ड की बराबरी करने पर दुनियाभर से मिली बधाईयों के बीच पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर मोहम्मद हफीज इस महान खिलाड़ी की उपलब्धि पर तिलमिलाते हुए उन्हें स्वार्थी कहने पर इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन ने करारा जवाब दिया है।

सोशल मीडिया मंच एक्स पर हफीज की इस आलोचना पर इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन ने करारा जवाब देते हुए कहा, कमऑन हफीज भारत ने आठ टीमों को पीटा है, उस मुश्किल पिच पर विराट की पारी शानदार थी, उनकी टीम 200 से अधिक रन से जीती, बेवकूफी वाली बातें मत करो। उल्लेखनीय है कि एक वायरल वीडियों में दिखा गया है कि मोहम्मद हफीज ने टॉप क्रिकेट एनेलिसिस के एक शो में कहा कि मैंने विराट कोहली की बल्लेबाजी में स्वार्थ की भावना देखी और इस विश्व कप में ऐसा तीसरी बार हुआ। 49वें ओवर में वह एक रन लेकर अपना शतक पूरा करना चाह रहे थे और उन्होंने टीम को पहले स्थान पर नहीं रखा। उन्होंने 97 रन तक पहुंचने तक अच्छी बल्लेबाजी की।

उन्होंने जो आखिरी एक-एक करके तीन रन लिये, मैं इरादे के बारे में बात कर रहा हूं। वह चौका या छक्का मारने के बजाय एक रन की तलाश में थे। अगर वह 97 या 99 पर आउट जाते तो कौन परवाह करता है।

इगा स्वियटेक ने डब्ल्यूटीए फाइनल्स का खिताब जीता

कैनकन। पोलैंड की टेनिस खिलाड़ी इगा स्वियटेक ने डब्ल्यूटीए फाइनल में अमेरिका की जेसिका पेगुला को 6-1, 6-0 से हराकर टूर का अपना छठा खिताब और साल की 68वीं जीत हासिल की।

स्वियटेक ने कल खेले गये मुकाबले में दुनिया की नंबर तीन महिला टेनिस खिलाड़ी जेसिका पेगुला को हराकर अपने करियर में पहली बार सत्र के आखिरी चैंपियनशिप के खिताब पर कब्जा किया। इस खिताब के साथ ही वह दुनिया की नंबर एक महिला टेनिस खिलाड़ी बन गई है। यह डब्ल्यूटीए फाइनल के इतिहास में सबसे एकतरफा फाइनल था। स्वियटेक ने मुकाबला आसानी से जीत लिया।

मां बनने के बाद जीवन में 360 डिग्री बदलाव आया : दीपिका

एजेंसी

पणजी। पूर्व विश्व नंबर-1 तीरंदाज और अर्जुन अवॉर्डी दीपिका कुमारी ने दिल्ली राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण और एशियाई खेलों में कांस्य पदक जीतने के बाद पिछले एक दशक से अधिक समय तक विश्व मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व किया है। ओलंपियन और दो बार की विश्व चैंपियनशिप की पदक विजेता दीपिका ने दिसंबर 2022 में बेटी वेदिका को जन्म देने के बाद से तीरंदाजी से ब्रेक ले लिया था।

29 वर्षीय खिलाड़ी ने दिखाया कि लंबे अंतराल से उनकी भूख कम नहीं हुई है। उन्होंने हरियाणा की संगीता को 6-2 से हराकर रिकर्व महिला व्यक्तिगत स्वर्ण और निर्मल चौहान के साथ मिश्रित टीम का स्वर्ण पदक जीता।

इसके बाद उन्होंने दीप्ति कुमारी और कोमलिका बारी के साथ मिलकर महिला टीम को रजत पदक दिलाया। दीपिका, कोमलिका और दीप्ति को फाइनल में हरियाणा से शूट-आउट में हार का सामना करना पड़ा था।

फाइनल के बाद दीपिका ने कहा, ईमानदारी से कहूं तो स्वर्ण से ज्यादा से मेरे लिए मेरा प्रदर्शन महत्वपूर्ण था। मेरी मानसिकता जीत या हार के बारे में नहीं थी, बल्कि यह मेरे द्वारा अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के बारे में थी। मैं अपने शॉट्स पर ध्यान केंद्रित करना चाहती थी और अपने मन में चल रहे अन्य विचारों को शांत करना चाहती थी। यह कुछ ऐसा है जो भविष्य में भी मुझे मानसिक रूप से मदद करेगा।

मां बनने के बाद उनकी जिंदगी कितनी बदल गई है, इस बारे में दीपिका ने कहा, यह नई जिंदगी मेरे लिए आसान बदलाव नहीं है। यह बदलाव मेरे लिए 360 डिग्री की तरह है।

मैं अपने आस-पास के लोगों से बात करती हूं ताकि मैं अपनी हताशा को नियंत्रित कर सकूं। मैं अब हर चीज को लेकर शांत रहना चाहती हूं क्योंकि मैंने इस तथ्य को स्वीकार कर लिया है कि यह अब मेरा जीवन है और मुझे दोनों दुनिया के लिए बैलेंस बनाना है।

भारतीय टीम में वापसी को ध्यान में रखते हुए अपनी ट्रेनिंग की गति कम किए बिना अपनी बेटी की देखभाल के बीच अपना समय बांटने से संतुलन बनाने की शुरुआत होती है।

कोलंबिया में समुद्र से निकाला जाएगा 315 साल पुराना जहाज

इसमें 1.66 लाख करोड़ का 200 टन खजाना, इस पर 4 देशों का दावा

कोलंबिया की सरकार ने 315 साल पहले डूबे एक जहाज को कैरेबियन सागर से निकालने का फैसला किया है। माना जाता है कि डूबने से पहले सैन होजे नाम के इस जहाज पर सोने-चांदी सहित 1 लाख 66 हजार करोड़ डॉलर का 200 टन खजाना लदा हुआ था। साल 1708 में ये किंग फिलिप V के बेड़े का हिस्सा था। स्पेन को जीतने के लिए जंग के दौरान ब्रिटिश नेवी के हमले में सैन होजे जहाज डूब गया था। तब इस पर 600 लोग सवार थे, जिनमें से सिर्फ 11 लोग ही जिंदा बच पाए थे। 2015 में कोलंबियाई नेवी के डाइवर्स को जहाज का मलबा पानी में 31 हजार फीट नीचे मिला था। तब इस खोज को कोलंबिया के राष्ट्रपति जुआन मैनुअल सैंटोस ने मानव इतिहास में मिला सबसे कीमती खजाना बताया था। सैन होजे

को जहाज के मलबे की पवित्र कब्र भी कहा जाता है। इस जहाज के मलबे को लेकर स्पेन, कोलंबिया और बोलीविया के कहारा कहारा समुदाय के लोगों में विवाद है। बोलीवियाई समुदाय का दावा है कि उनके लोगों को खजाने के खनन के लिए मजबूर किया गया था। इस वजह से खजाना उनका होना चाहिए।

इसके अलावा ग्लोका मोरा के नाम से पहचाने जाने वाले एक अमेरिकी बचाव संघ ने भी 1981 में जहाज ढूंढने का दावा किया था। ग्लोका मोरा ने बताया कि उसने कोलंबियाई सरकार को इस शर्त पर मलबे की लोकेशन बताई थी कि आधा खजाना संघ के पास रहेगा।

2026 से पहले निकाला जाएगा मलबा

हालांकि, कोलंबिया ने 2015 में बताया कि उनकी नेवी ने अपनी मेहनत से दूसरी लोकेशन पर जहाज का मलबा ढूंढा। राष्ट्रपति गुस्तावो पेट्रो 2026 में अपना कार्यकाल पूरा होने से पहले मलबे को ऊपर लाना चाहते हैं।

पेट्रो सरकार ने कहा कि वो मलबे के लिए एक लैब बनाएगी जहां इसे साफ करने के बाद जहाज पर स्टडी की जा सकेगी। इसके बाद इसे नेशनल म्यूजियम में रखा जाएगा। पिछले साल डाइवर्स ने मलबे से जुड़ी कई तस्वीरें जुटाई थीं।

दर्जनों समुद्री जीवों के बीच जहाज के मलबे के साथ सोने के सिक्के, सिल्लियां, ईंटे और चीनी बर्तन नजर आए। इन सबके बीच में डॉल्फिन की छाप वाली गन्स भी थीं, जिसके जरिए मलबे की पहचान की गई थी।

कब और कैसे डूबा था सैन होजे जहाज

सैन होजे 62-बंदूक, तीन-मस्तूल वाला गैलियन था जो 8 जून 1708 को 600 लोगों के साथ डूब गया था। ये उन जहाजों में शामिल था जो 16-18वीं सदी के दौरान यूरोप और अमेरिका के बीच में आता-जाता था। डूबने से पहले ये जहाज खजाने को अमेरिका से स्पेन लेकर जा रहा था। इस खजाने का इस्तेमाल स्पेन ब्रिटेन के खिलाफ जंग में करने वाला था।

अमेरिका में भारतीयों के साथ हेट क्राइम बढ़ा

पिछले एक साल में 40 फीसदी ज्यादा मामले सामने आए; एक महीने में 4 की मौत

न्यूयॉर्क। अमेरिका में पिछले 2 साल में भारतीयों के साथ हेट क्राइम और हमले तेजी से बढ़े हैं। पिछले 4 हफ्ते में 4 भारतीयों की नस्लवादी हमलों में मौत हुई है, जबकि दो दर्जन से ज्यादा लोग घायल हुए हैं।

इतना ही नहीं, पिछले एक साल में भारतीयों के खिलाफ हेट क्राइम और हमलों के 520 मामले सामने आए हैं, जो पिछले साल के 375 हमलों की तुलना में करीब 40त्न ज्यादा हैं। हाल में न्यूयॉर्क में एक बुजुर्ग की हत्या का मामला सामने आया है। वहीं, इंडियाना में एक भारतीय छात्र को चाकू मार दिया गया था, जो ड्डष्ट में है।

कार्नेगी एंडोमेंट स्टडी के मुताबिक, हर दो में से एक भारतीय ने रंग के आधार

पर भेदभाव की बात स्वीकार की है। हाल ही में 23 साल की भारतीय लड़की जाह्नवी को श्वेत पुलिसकर्मियों ने टक्कर मार दी थी, फिर वे अधिकारी बेशर्मी से मुआवजे को लेकर मजाक बना रहे थे।

अमेरिकी मानते हैं कि भारतीय उन्हें रिप्लेस कर रहे

भारतीयों पर हमलों की वजह यह है कि श्वेत कट्टरपंथी अमेरिकी मानते हैं कि भारतीय उनके आर्थिक अवसर खत्म कर रहे हैं। कई पीड़ित भारतीयों का कहना है कि ट्रम्प की दूसरे कार्यकाल की दावेदारी के साथ ही हमले तेज हुए हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका के 6 राज्यों में से 5 में ट्रम्प अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन से आगे हैं। इसी बीच, भारतीयों के खिलाफ बड़े पैमाने पर दुष्प्रचार भी किया जा रहा है।

फॉक्स न्यूज भारतीयों के खिलाफ ग्रेट रिप्लेसमेंट थ्योरी फैला रहा है। वे मानते हैं कि अमेरिका के जरूरी पदों में भारतीय अमेरिकी लोगों को रिप्लेस कर रहे हैं। चैनल न्यूज होस्ट टुकर कार्लसन इसी पर 400 एपिसोड बना चुके हैं।

गाजा पट्टी में इजरायली हमलों में मरने वालों की संख्या 10,300 से अधिक हुई

गाजा। इजरायल और हमास के बीच जारी युद्ध में अब तक 11,700 से अधिक लोग मारे जा चुके हैं। गाजा पट्टी में इजरायली हमलों में मरने वालों की संख्या 10,300 से अधिक एवं घायल लोगों की संख्या 25,000 से अधिक हो गई है। गाजा स्वास्थ्य मंत्रालय के प्रवक्ता अशरफ अल-कुद्रा ने रविवार को यह जानकारी दी। श्री अल-कुद्रा ने अरब टेलीविजन चैनलों द्वारा प्रसारित एक ब्रीफिंग में यह बात कही। उन्होंने कहा,सात अक्टूबर से अब तक, 10,328 लोग इज़रायली आक्रमण का शिकार बन चुके हैं एवं 25,956 लोग घायल हुए।

गाजा सहायता पर फिलिस्तीन, इजरायल संग संपर्क जारी रखेगा रूस: क्रेमलिन

मॉस्को। रूस गाजा पट्टी में मानवीय सहायता पहुंचाने के मुद्दे पर फिलिस्तीन, इजरायल और मिस्र के साथ संपर्क जारी रखेगा। रुसी राष्ट्रपति भवन क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेसकोव ने इस आशय की जानकारी देते हुए मंगलवार को हालांकि कहा कि स्थिति अभी मुश्किल बनी हुई है। रूसी आपातकालीन स्थिति मंत्रालय ने कहा है कि दो विशेष उड़ानों ने गाजा पट्टी के निवासियों के लिए 60 टन मानवीय सामान पहुंचाया है जिसमें भोजन और व्यक्तिगत देखभाल उत्पाद शामिल हैं। पेसकोव ने संवाददाताओं से कहा कि कई अन्य देश भी फिलिस्तीनियों को मानवीय सहायता प्रदान करते हैं। पेसकोव ने कहा,दुर्भाग्य से अब तक बहुत सीमित मात्रा में सहायता वहां और वह भी केवल मिस्र के क्षेत्र के माध्यम से राफा चेकपॉइंट के माध्यम से पहुंचाई जा सकती है, जो बहुत सीमित मोड में संचालित होती है। दुर्भाग्य से आवश्यक मात्रा में सहायता नहीं की जा सकती है। लेकिन निश्चित रूप से रूसी पक्ष फिलिस्तीनियों, इजरायलियों और मिस्रवासियों के साथ सभी संपर्क जारी रखेगा ताकि इस तरह की सहायता की दिशा सुनिश्चित करने के लिए अवसर की तलाश की जा सके। प्रवक्ता ने कहा कि फिलिस्तीन, इज़रायल और मिस्र के साथ दैनिक आधार पर संपर्क हो रहा है, लेकिन उच्चतम स्तर पर संचार की अभी योजना नहीं बनाई गई है।

अमेरिकी खगोलवैज्ञानिकों ने सबसे पुराना ब्लैक होल खोजा

लॉस एंजल्स (अमेरिका)। अमेरिकी खगोलवैज्ञानिकों की एक टीम ने अंतरिक्ष में एक्स-रे के माध्यम से सबसे पुराना ब्लैक होल खोज निकाला है। नासा ने यह जानकारी देते हुए कहा कि यह खोज उसके दूरबीन की मदद से की गयी है। उसने कहा है कि यह ब्लैक होल अपने विकासक्रम में प्रारंभिक चरण में है और इस तरह की खगोलीय घटना इससे पहले नहीं देखी गयी है। इसका द्रव्यमान उस आकाशगंगा के द्रव्यमान के बराबर है, जिसमें यह ब्लैक होल स्थित है। नासा ने कहा है कि खगोल अनुसंधान कर्ताओं के एक दल ने नासा की चंद्र एक्स-रे वेधशाला और जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप (दूरबीन) से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण कर बिगबैंग (महाविस्फोट) से मात्र 47 करोड़ वर्ष बाद इस बनते ब्लैक होल के साक्ष्य एकत्रित किये हैं। नासा के बयान में कहा गया है कि इस अध्ययन से अंतरिक्ष में पहले-पहले बनने वाले बड़े ब्लैक होल की प्रक्रिया पर कुछ नए प्रकाश पड़ने की उम्मीद है। वैज्ञानिकों ने जिस ब्लैक होल की नयी खोज की है वह यूएचजेड1 आकाशगंगा शंकुल एबेल 2744 की दिशा में है और धरती से इसकी दूरी 3.5 अरब प्रकाश वर्ष है लेकिन वेब की डाटा से अनुमान लगाया जा रहा है कि संबंधित आकाशगंगा शंकुल एबेल 2744 से और भी दूर, और धरती से 13.2 अरब प्रकाश वर्ष की दूरी पर हो सकती है ।

कंबोडिया चीनी पर्यटकों को वापस देखने को उत्सुक

प्रीह सिहानोक, कंबोडिया। कंबोडिया के प्रधानमंत्री हुन मानेट ने मंगलवार को कहा कि कंबोडिया एक सुरक्षित पर्यटन स्थल है और अधिक संख्या में चीनी पर्यटकों की वापसी देखने के लिए उत्सुक है। दक्षिण-पश्चिम प्रीह सिहानोक प्रांत में चीनी निवेश वाले विशेष आर्थिक क्षेत्र में कपड़ा कारखाने के श्रमिकों से बात करते हुए श्री हुन मानेट ने चीनी निवेशकों से कंबोडिया में आने और निवेश करने का भी आह्वान किया। उन्होंने कहा कि चीनी पर्यटकों और निवेशकों ने देश के सामाजिक- आर्थिक विकास और कंबोडियाई लोगों के लिए रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने जोर दिया कि कंबोडिया सुरक्षित है और पर्यटक हर जगह स्वतंत्र रूप से यात्रा कर सकते हैं। गौरतब है कि कोविड-19 महामारी से पहले चीन कंबोडिया में अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों का सबसे बड़ा स्रोत था। कंबोडिया के पर्यटन मंत्रालय के अनुसार 2019 में 20.36 लाख चीनी पर्यटक कंबोडिया आए थे और यह कुल अंतरराष्ट्रीय पर्यटक आगमन का 35.7 प्रतिशत था और इससे लगभग 1.8 अरब अमेरिकी डॉलर का राजस्व प्राप्त हुआ था। इस वर्ष जनवरी-सितंबर की अवधि के दौरान यहां 405,514 चीनी पर्यटक आए, जो साल-दर-साल 549 प्रतिशत की वृद्धि है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं... से मुद्रित एवं , ब्लाक नं 23 मकान नं 399 त्रिलोक पुरी दिल्ली -91 से प्रकाशित
संपादकः प्रवीण कुमार सिंह, आरएनआई नं. ·DELHIN/2011/38334, किसी भी विवाद के लिए पीआरबी एक्ट अंतर्गत उत्तरदायी, टेलीफोन नं.: 011-26700510/11 , ई-मेल : info@gauravshalibharat.com, समस्त विवादो का न्यायलय दिल्ली होगा

सफदरजंग अस्पताल ने राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस मनाने के लिए मैराथन का आयोजन किया

नई दिल्ली। सफदरजंग अस्पताल ने राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस के अवसर पर आज सुबह एक मैराथन की मेजबानी की। इस आयोजन का उद्देश्य कैंसर की शीघ्र पहचान, रोकथाम और उपचार के महत्व के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाना था। मैराथन में भारी संख्या में प्रतिभागी शामिल हुए, जो इस उद्देश्य का समर्थन करने के लिए जोश और उत्साह के साथ दौड़े।

इस कार्यक्रम की शोभा सम्मानित गणमान्य व्यक्तियों ने बढ़ाई जिन्होंने हरी झंडी दिखाने के समारोह में सक्रिय रूप से भाग लिया। डॉ. कपिल सूरी, अतिरिक्त चिकित्सा अधीक्षक, श्री अतुल सिंह, पीआरओ, श्रीमती रेखा रानी, ओएनएस और नर्सिंग कॉलेज की प्रिंसिपल श्रीमती राधा रानी तिवारी ने मैराथन का उद्घाटन किया और प्रतिभागियों को कैंसर जागरूकता में योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

मैराथन में कड़ी प्रतिस्पर्धा देखने को मिली क्योंकि प्रतिभागियों ने अपनी एथलेटिक क्षमताओं का प्रदर्शन किया। मैराथन के विजेताओं को कैंसर के बारे में जागरूकता बढ़ाने और स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देने के उनके प्रयासों की सराहना के प्रतीक के रूप में पदक और पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर सफदरजंग अस्पताल की चिकित्सा अधीक्षक डॉ. वंदना तलवार ने हमारे समाज में कैंसर जागरूकता के महत्व पर जोर देते हुए एक प्रेरक संदेश दिया। डॉ. तलवार के संदेश ने कैंसर से लड़ने की प्रतिबद्धता को मजबूत किया।

मैराथन के अलावा, प्रतिभागियों और दर्शकों के बीच कैंसर की रोकथाम, शीघ्र पता लगाने, समय पर उपचार और उपलब्ध संसाधनों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी वाले पर्चे वितरित किए गए। शैक्षिक सामग्रियों के प्रसार का उद्देश्य व्यक्तियों को ज्ञान के साथ सशक्त बनाना है, जिससे वे अपने स्वास्थ्य और कल्याण के संबंध में निर्णय ले सकें। कर्मचारियों की जबरदस्त प्रतिक्रिया मैराथन में सक्रिय रूप से शामिल होने वाले प्रतिभागियों की बड़ी संख्या से स्पष्ट थी। कार्यक्रम का सफल आयोजन नर्सिंग ऑफिसर श्री साजिद अख्तर, श्री देव रुवाला, श्री दिनेश यादव, श्री सुनील कुमार जाट, श्री फारुक खान, श्री सुंदर लाल जाट और सुश्री हिमांशी की टीम द्वारा किया गया।

सोनभद्र में स्थित जीवाष्म पार्क को यूनेस्को की सूची में दर्ज कराया जायेगा

लखनऊ । उत्तर प्रदेश के पर्यटन विभाग ने सोनभद्र जिले में एशिया का सबसे बड़े एवं प्राचीन सलखन जीवाष्म पार्क के समीप स्थित जीवाष्म पार्क को यूनेस्को की सूची में दर्ज कराने का निर्णय लिया है।

यह फासिल्स पार्क लगभग 1400 मिलियन वर्ष पूराना होने का अनुमान है जिसे देखने के लिए पूरी दुनिया से जीवाष्म वैज्ञानिक एवं पर्यटक वर्ष भर आते रहते हैं। इस स्थान पर पर्यटकों की संख्या बढ़ाने के लिए जरूरी बुनियादी सुविधाएं विकसित करने का फैसला लिया गया है।

प्रदेश के पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह ने मंगलवार को बताया कि सरकार का प्रयास है कि उत्तर प्रदेश को पर्यटन के मामले में विश्व मानचित्र पर स्थापित किया जाए। इसी को देखते हुए जीवाष्म पार्क को दुनिया के सामने पेश करने के लिए यूनेस्को की सूची में स्थान दिलाने का प्रयास किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि हाल में ही विभाग की टीम ने बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट ऑफ पेलियोसाइन्सेज के निदेशक डॉ एमजी ठक्कर के साथ इस पार्क का भ्रमण किया था। सोनभद्र में बहुत-सी प्राकृतिक संरचनाएं मौजूद हैं। पर्यटकों एवं जीवाष्म प्रेमियों को देखने के लिए कई दर्शनीय स्थल भी हैं। इसलिए इसके आसपास पर्यटन विकास किया जायेगा।

पर्यटन मंत्री ने बताया कि पृथ्वी पर किसी समय जीवित रहने वाले अति प्राचीन जीवों के संरक्षित अवशेषों या उनके द्वारा चट्टानों में छोड़ी गई छापों को जो पृथ्वी की सतहों या चट्टानों की परतों में सुरक्षित पाये जाते हैं, उन्हें जीवाष्म या फासिल्स कहते हैं।

उन्होंने बताया कि विभिन्न प्रकार के जीवाश्मों के निरीक्षण से पता चलता है कि पृथ्वी पर अलग-अलग कालखण्ड में भिन्न-भिन्न श्रेणी के जीव-जन्तु हुए हैं। इनसे विभिन्न प्रकार की आकृतियां बनती हैं जो वैज्ञानिकों के लिए आकर्षण का विषय होती हैं। जनपद सोनभद्र जिले में इसके अलावा बहुत सारे दर्शनीय स्थल हैं।

रमणीक एवं मनोरम घाटियों एवं जल प्रपात भी हैं। पर्यटकों की संख्या बढ़ने से स्थानीय लोगो की भी आमदनी होगी।

पर्यटन मंत्री ने बताया कि इस पार्क में पाए जाने वाले जीवाश्म शैवाल और स्ट्रोमेटोलाइट्स प्रकार के जीवाश्म हैं। अनुमान के मुताबिक यह 1400 मिलियन वर्ष पुराना है। इसकी देखरेख वन विभाग करता है। सोनभद्र में इतने पुराने फासिल की जानकारी ज्यादातर लोगों को नहीं है। इसलिए यहां पर्यटकों की संख्या कम है।

शार्ट न्यूज़

एनएचपीसी ने 30 सितंबर, 2023 को समाप्त छमाही के लिए अब तक का सर्वाधिक वित्तीय निष्पादन घोषित किया

भारत की अग्रणी जलविद्युत कंपनी एनएचपीसी ने अब तक का सर्वाधिक अर्धवार्षिक एकल (स्टैंडअलोन) कर पश्चात लाभ (पीएटी) 2500 करोड़ रुपए अर्जित किया है जबकि पिछले वर्ष की इसी छमाही अवधि के लिए यह एकल (स्टैंडअलोन) कर पश्चात लाभ (पीएटी) 2483 करोड़ रुपए था । चालू छमाही के लिए एनएचपीसी का समेकित कर पश्चात लाभ (पीएटी) 2583 करोड़ रुपए है, जबकि पिछले वर्ष की इसी छमाही अवधि के लिए यह समेकित कर पश्चात लाभ (पीएटी) 2575 करोड़ रुपए था। एनएचपीसी के निदेशक मंडल ने दिनांक 6 नवंबर, 2023 को आयोजित अपनी बैठक में 30 सितंबर 2023 को समाप्त तिमाही और छमाही के वित्तीय परिणामों को अनुमोदित किया है। एनएचपीसी लिमिटेड भारत की अग्रणी जलविद्युत कंपनी है। अपने 25 पावर स्टेशनों के माध्यम से एनएचपीसी की कुल नवीकरणीय ऊर्जा (पवन और सौर सहित) की संस्थापित क्षमता 7097.2 मेगावाट है, जिसमें सहायक कंपनी के 1520 मेगावाट शामिल है ।

केंद्र की सौगात से आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश के निर्माण के प्रयासों को मिलेगा संबल: योगी

लखनऊ । त्योहारों के सीजन के मद्देनजर केंद्र सरकार ने नवंबर महीने के लिए टैक्स से हुई आय में राज्यों की हिस्सेदारी की रकम को समय से पहले ही जारी कर दिया है। इसमें उत्तर प्रदेश को सबसे ज्यादा 13088.51 करोड़ रुपए जारी किया गया है। केंद्र सरकार के इस निर्णय को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश को आत्मनिर्भर प्रदेश बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण बताया और इसके लिए पीएम मोदी व केंद्रीय वित्त मंत्री का आभार जताया। सीएम योगी ने अपने ऑफिशियल एक्स हैंडल पर लिखा, %प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन एवं केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के नेतृत्व में कर हस्तांतरण प्रक्रिया में निर्धारित समय से पूर्व उत्तर प्रदेश के लिए जारी ?13088.51 करोड़ की किस्त प्रदेश की विकास परियोजनाओं के सुगम क्रियान्वयन में अत्यंत सहायक सिद्ध होगी। पर्वों के सीजन में इस सौगात से %आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश% के निर्माण के हमारे प्रयासों को संबल प्राप्त होगा। प्रधानमंत्री जी एवं केंद्रीय वित्त मंत्री जी का हार्दिक आभार।

लोकसभा चुनाव में सपा का नहीं खुलेगा खाता

जौनपुर। अपना दल (एस) के राष्ट्रीय सचिव पप्पू माली ने दावा किया कि अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी (सपा) का खाता भी नहीं खुलेगा। वाजिदपुर में पार्टी दफ्तर में आयोजित बैठक में उन्होंने कहा कि सेक्टर स्तर पर बूथ का गठन सर्वोच्च प्राथमिकता है। पार्टी का पूरा जोर लोकसभा चुनाव 2024 पर है। एनडीए गठबंधन के साथ पार्टी प्रदेश में सबसे ज्यादा सीटें जीतकर इतिहास रचेगी। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार सपा ने अपना दल एस के साथ षड्यंत्र किया और उसका नतीजा 2019 के चुनाव में समाजवादी पार्टी को बुरी तरह से भुगतना पड़ा था। आगामी चुनाव 2024 में सपा का खाता ही नहीं खुलने वाला है।कांग्रेस का अस्तित्व पूरी तरह से समाप्त हो चुका है। जिलाध्यक्ष शिवनायक पटेल ने निर्वाचन आयोग द्वारा चलाए जा रहे नाम जोड़ो अभियान में भाग लेकर बूथ स्तर पर मतदाता सूची में नाम जोड़ने के लिए निर्देश दिया। संचालन जिला कोषाध्यक्ष हरिहर प्रसाद पटेल ने किया।

कौशांबी में हत्या के दोषी को उम्रकैद की सजा

कौशांबी। उत्तर प्रदेश में कौशांबी जिले की एक अदालत ने मंगलवार को हत्या के नौ वर्ष पुराने मामले में अभियुक्त को आजीवन कारावास के साथ 10 हजार रूपये जुर्माने की सजा सुनाई है। अभियोजन के अनुसार 23 फरवरी 2014 को वादी मोतीलाल द्वारा करारी थाना में सूचना दर्ज कराई गई थी कि अभियुक्त खिन्नी लाल निवासी बरई बंधवा ने पत्नी से अवैध संबंध के शक को लेकर उनके भाई अंग्रेज की हत्या धारदार हथियार से कर दी थी। पुलिस ने खुन्नीलाल के विरुद्ध हत्या की रिपोर्ट दर्ज कर विवेचना उपरांत आरोप पत्र अदालत में प्रस्तुत किया जिसकी सुनवाई ए डीजे एफटीसी प्रथम की अदालत में शुरू हुई। उभय पक्ष के तर्कों को सुनने एवं पत्रावली में उपलब्ध साक्ष्यों के परिशीलन के उपरांत अदालत ने आरोपी खिन्नी लाल को हत्या का दोषी पाया जिस पर मंगलवार को जज विष्णु देव ने आरोपी को आजीवन कारावास की सजा के साथ 10000 अर्थ दंड की सजा सुनाई है।

प्रदूषण के मुद्दे पर केजरीवाल के पास कोई ठोस कार्ययोजना नहीं: भाजपा

नयी दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने मंगलवार को दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को एक 'दृष्टिहीन' मुख्यमंत्री बताया, जिनके पास प्रदूषण पर अंकुश लगाने के लिए कोई ठोस कार्ययोजना नहीं है। केजरीवाल पर निशाना साधते हुए दिल्ली भाजपा इकाई के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने आरोप लगाया,केजरीवाल एक 'दृष्टिहीन' मुख्यमंत्री हैं जिनके पास प्रदूषण पर कोई ठोस कार्य योजना नहीं है। सार्वजनिक परिवहन सुविधाओं पर उठ रहे सवाल भाजपा ने कहा कि अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली दिल्ली सरकार 13 से 20 नवंबर तक ऑड-ईवन योजना लागू करेगी, लेकिन क्या उनके पास पर्याप्त परिवहन सुविधाएं हैं ताकि लोग बिना किसी समस्या के यात्रा कर सकें। सचदेवा ने यहां आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में आरोप लगाया कि पिछले 15 दिनों से मुख्यमंत्री और दिल्ली के पर्यावरण मंत्री दिल्ली में प्रदूषण का दोष हरियाणा पर मढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। सचदेवा ने कहा,जो मुख्यमंत्री दिल्ली के विकास में अपना हिस्सा नहीं दे रहे हैं, वे पूछ रहे हैं कि केंद्र सरकार क्या कर रही है।

विश्व उर्दू दिवस समारोह की तैयारियां पूरी

नयी दिल्ली। विश्व उर्दू दिवस समारोह की तैयारियों का जायजा लेने के लिये आयोजन समिति की बैठक मंगलवार को यहां वरिष्ठ पत्रकार जलालुद्दीन मोहम्मद असलम की अध्यक्षता में हुई। बैठक में तय किया गया कि प्रोफेसर अब्दुल हक की अध्यक्षता में विश्व उर्दू दिवस समारोह अपराह्न तीन बजे बस्ती हजरत निजामुद्दीन स्थित ग़ालिब एकेडमी में आयोजित किया जाएगा। यह समारोह नौ नवंबर को होगा। बैठक में उर्दू विकास संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं विश्व उर्दू दिवस समारोह आयोजन समिति के संयोजक डॉ सैयद अहमद खान ने बताया कि पिछले 26 वर्षों से विश्व उर्दू दिवस समारोह का आयोजन होता आ रहा है। उन्होंने खेद व्यक्त करते हुए कहा कि आम जनता की तरफ से इसकी सराहना की जा रही है, लेकिन सरकारी स्तर पर उर्दू की स्थिति दिन-प्रतिदिन खराब होती जा रही है। उन्होंने कहा कि वह उम्मीद करते हैं कि केंद्र एवं राज्य सरकारें आम जनमानस की भावनाओं का सम्मान करते हुये इस संबंध में उचित कदम उठायेंगी। गालिब अकादमी में आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के तौर पर पद्म श्री प्रोफ़ेसर अख्तरुल वासे, पूर्व सांसद मोहम्मद अफजल, प्रोफेसर खालिद महमूद, प्रोफेसर शहपर रसूल, प्रोफेसर डॉ सलीम किदवई, डॉ सैयद फारूक, मौलाना मोहम्मद रहमानी, पूर्व विधायक हसन अहमद, वरिष्ठ पत्रकार गौतम लाहिरी और अन्य गणमान्य व्यक्तियों के शामिल होने की संभावना है। इस मौके पर विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली विभिन्न हस्तियों को सम्मानित भी किया जायेगा और एक स्मारिका का विमोचन भी किया जायेगा।

हर पात्र लाभार्थी का आयुष्मान कार्ड बनाने को योगी सरकार ने चलाया विशेष अभियान

लखनऊ। प्रदेश के पात्र लाभार्थियों के शत-प्रतिशत आयुष्मान कार्ड बनाने के उद्देश्य से योगी सरकार ने विशेष अभियान चलाने का निर्णय लिया। इस अभियान की शुरुआत 7 नवंबर से हो चुकी है, जो 31 दिसंबर तक चलेगा। योगी सरकार ने यह निर्णय राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम की पात्रता सूची में सम्मिलित शत-प्रतिशत लाभार्थियों के आयुष्मान कार्ड न बनने पर लिया है। मालूम हो कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम की पात्रता सूची के 3 करोड़ 48 लाख लाभार्थियों के सापेक्ष अब तक 1 करोड़ लाभार्थियों के आयुष्मान कार्ड बनाए जा चुके हैं। ऐसे में शेष करीब 2.5 करोड़ लाभार्थियों के कार्ड बनाने के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत प्रदेश के सभी ग्राम पंचायतों एवं शहरी क्षेत्र के वार्डों में आयुष्मान कार्ड बनाने के लिए विशेष कैप लगाए जाएंगे। प्रमुख सचिव चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण पार्थ सारथी सेन शर्मा ने बताया कि ग्राम पंचायतों एवं वार्डों के शत-प्रतिशत पात्र लाभार्थियों के कार्ड बनाने के लिए निर्धारित डेट से एक दिन पहले आशा और आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों द्वारा कैंप का प्रचार-प्रसार किया जाएगा। साथ ही कैंप में लाभार्थियों को %आयुष्मान ऐप% के माध्यम से स्वयं कार्ड बनाने के लिए प्रेरित किया जाएगा। वहीं प्रत्येक ब्लॉक स्तरीय सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर प्रभारी चिकित्साधिकारी की अध्यक्षता में एक नोडल टीम गठित की जायेगी, जोकि कार्ययोजना के अनुसार अभियान का निरीक्षण करेगी। इसके अलावा अधिक से अधिक लोगों को अभियान में शामिल करने के लिए स्थानीय जनप्रतिनिधियों के साथ स्वयंसेवी संस्थाओं का सहयोग लिया जाएगा। इसके साथ प्रभारी चिकित्साधिकारी द्वारा अन्य विभागों पंचायती राज विभाग एवं खाद्य एवं रसद विभाग से समन्वय स्थापित कर वार्ड, ग्रामवार, ब्लॉकवार माइकोप्लान तैयार किया जायेगा। इन माइकोप्लान तिथियों कैम्प में सम्बधित कार्मिकों की उपस्थिति के लिए प्रभारी चिकित्साधिकारी को उत्तरदायी बनाया गया है।

सीसीएल सीजन दस से बदले मालिक अभय सिन्हा व रमेश नैय्यर हुए भोजपुरी दबंग्स के नए ऑनर .!

सीसीएल सीजन 10 के आगाज़ का ऐलान हो चुका है, सीसीएल में खेलने वाली कुल 8 टीमों के मैच शेड्यूल को जारी कर दिया गया है । कल ही मुम्बई में पिछले साल की रनर्स अप भोजपुरी दबंग टीम के कप्तान मनोज तिवारी , अभय सिन्हा व रमेश नैय्यर ने भोजपुरी दबंग का नया कैलेंडर और सीसीएल 10 का शेड्यूल भी जारी किया । इसबार नए सीजन से भोजपुरी दबंग के टीम ऑनर बदल गए हैं , इस नए सीजन से फ़िल्म अभिनेता सह भाजपा सांसद मनोज तिवारी, मशहूर फिल्म निर्माता सह IMPPA के अध्यक्ष अभय सिन्हा व फ़िल्म निर्माता रमेश नैय्यर संयुक्त रूप से भोजपुरी दबंग के मालिक बने हैं, इसके पहले टीम का मालिकाना हक किसी और के पास था , लेकिन इसबार से नए टीम फॉर्मेट और नए सिरे से टूर्नामेंट का आयोजन भी हो रहा है । ऐसे में

भोजपुरी दबंग इसबार दोगुने उत्साह के साथ टूर्नामेंट में उतरने जा रही है । नए मालिकों ने टीम को और अधिक सुविधाएं देते हुए तैयारी के लिए उचित माहौल और संसाधन उपलब्ध कराने पर फोकस किया हुआ है । मुम्बई में प्रेस से बात करते हुए भोजपुरी दबंग के कप्तान मनोज तिवारी व उपकप्तान दिनेश लाल यादव निरहुआ ने बताया कि इसबार हम सीसीएल को पुन: जीतकर आएंगे, पिछली बार आख़िरी में थोड़ी सी चूक हो जाने से हम ख़िताब जितने से चूक गए थे और हमें रनर्स अप बनकर सन्तोष करना पड़ा था

लेकिन इसबार हम जीतकर ही आएंगे । विदित हो कि भोजपुरी दबंग एकमात्र ऐसी टीम है जिसमें इस इंडस्ट्री में काम करने वाले हर कलाकार को इसमें सहभागिता करने की पूरी छूट मिली हुई है । इसबार टूर्नामेंट में भोजपुरी फ़िल्म इंडस्ट्री का हर कलाकार भोजपुरी दबंग्स का हौसला अफजाई करते हुए नजर आएगा तो वहीं ब्रांड एम्बेसडर के तौर पर सुप्रसिद्ध अभिनेत्री आम्रपाली दुबे और अन्य अभिनेत्रियां भी टीम को प्रोत्साहित करते हुए नजर आएंगी । सीसीएल 10 का आगाज़ इसबार 23 फरवरी 2024 को शारजाह में होगा और पहले सप्ताह के बाद बाकी के सारे मैच पुन: भारत मे आयोजित होंगे । इसबार के वेन्यू शारजाह के अलावा चंडीगढ़, विजाग, चेन्नई , त्रिवेंद्रम और बैंगलुरु हैं । इस सीसीएल का फाइनल मुकाबला विजाग में 17 मार्च 2024 को खेला जाएगा । भोजपुरी दबंग टीम में कप्तान मनोज तिवारी , उपकप्तान दिनेश लाल यादव निरहुआ, प्रवेश लाल यादव , विक्रांत सिंह जैसे सुपस्टार खिलाड़ी शामिल हैं ।

नवंबर महीने का राशिफल

मेष (21 मार्च - 19 अप्रैल) -

इस महीने आपके करियर के मामले में आपको बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, आप में से कुछ लोग अपनी नौकरी खो सकते हैं या काम के अधिक भार के कारण तनावपूर्ण हो सकते हैं लेकिन चिंता न करें क्योंकि यह सब अस्थायी है। वित्त के मामले में आप सुरक्षित महसूस करेंगे और आप एक महत्वपूर्ण बदलाव देखेंगे। यदि आप बीमार हैं, तो निराश होने के बजाय खुद को ठीक करने के लिए कुछ समय देना सुनिश्चित करें। महीने के अंत तक आप कठिनाइयों को दूर कर लेंगे और ट्रैक पर वापस आने के लिए यात्रा भी कर सकते हैं।
शुभ अंक- 3, 6
शुभ रंग- गोल्डन, सिल्वर

वृषभ (20 अप्रैल - 20 मई)

इस महीने अपने करियर के मामले में आप अपने लक्ष्यों को पूरा करेंगे और महसूस करेंगे कि सब कुछ नियंत्रण में है। आप अपने काम के सिलसिले में यात्रा भी कर सकते हैं। वित्त के संदर्भ में, कुछ उज्ज्वल विचार आपके दिमाग में उभर सकते हैं, लेकिन उन विचारों को वास्तविकता में बदलने से पहले किसी से सलाह लेना सुनिश्चित करें। यदि पिछले महीनों में बीमार थे तो अब आप अपने स्वास्थ्य में कुछ सुधार करेंगे, सुनिश्चित करें कि आप उस अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए किसी प्रकार का व्यायाम भी करें। इस महीने के अंत तक आप अपने जीवन में परिवर्तन और कुछ बदलाव और नई शुरुआत देखेंगे लेकिन जो भी बदलाव आप देखेंगे वह आसान नहीं होगा। परिवर्तन का विरोध न करें और इसे पूरे दिल से स्वीकार करें।
शुभ अंक- 6, 8
शुभ रंग- भूरा, चांदी

मिथुन (21 मई - 20 जून)

इस महीने अपने करियर के मामले में आप बहुत रचनात्मक महसूस करेंगे और आपके पास बहुत सारे विचार हैं। लोग आपसे प्रेरणा लेंगे। वित्त के संदर्भ में एक कठिन महीना जिसमें बहुत सारे अनावश्यक खर्च या नुकसान का अनुभव होगा। पैसों के मामले में किसी पर भरोसा न करें। आप में से कुछ लोग सुस्त महसूस कर सकते हैं या किसी प्रकार के तनाव से निपट सकते हैं लेकिन अंतत: महीने के अंत तक चीजों में सुधार होगा। आपसे बड़ा कोई व्यक्ति आपको अपने जीवन को संतुलित करने की सलाह दे सकता है, सुनिश्चित करें कि आप उनकी बात सुनें।
शुभ अंक- 3, 5
शुभ रंग- हरा, भूरा

कर्क (21 जून - 22 जुलाई)

इस महीने आप महसूस करेंगे कि आपका करियर स्थिर हो गया है क्योंकि आप दूसरों से ईर्ष्या करने में बहुत व्यस्त हैं, आपके पास जो कुछ भी है उसके लिए आभारी रहें। आर्थिक मामलों में आपके सभी संघर्ष जल्द ही खत्म हो जाएंगे। किसी के सहयोग से एक नई परियोजना या अवसर आपके करियर और वित्त को स्थिर करेगा। आपके स्वास्थ्य के मामले में, आप एक लंबी बीमारी या चोट से उबर जाएंगे। एक नई शुरुआत का पूर्वाभास हो सकता है, आप सुरक्षित और स्थिर महसूस करेंगे।
शुभ अंक- 1, 3
शुभ रंग- नीला, सुनहरा

सिंह (जुलाई 23 - अगस्त 22)

इस महीने आपके करियर के लिहाज से कोई नई नौकरी या अवसर आपके पास आने की संभावना है और इस वजह से आपके वित्त में सुधार होगा। अप्रत्याशित मात्रा में धन आपके पास आ रहा है। आपके स्वास्थ्य के मामले में आप बीमारी या चोट से लड़ेंगे, आप अपनी बीमारी या
चोट को दूर करने के लिए एक चुनौतीपूर्ण समय देखेंगे। इस महीने आपको कुछ कानूनी मुद्दों का सामना करना पड़ेगा, सुनिश्चित करें कि आप पहले से ही इसके लिए तैयार हैं और धैर्य रखें और किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने की जल्दबाजी न करें। सुनिश्चित करें कि आप बात करने से पहले सोचें अन्यथा स्थिति आपके खिलाफ जाएगी।
शुभ अंक- 1, 7
शुभ रंग- बैंगनी, गुलाबी

कन्या (23 अगस्त - 22 सितंबर)

इस महीने आपको अपने काम और अपने निजी जीवन के बीच संतुलन बनाए रखने की जरूरत है। आर्थिक दृष्टि से आपने अब तक जो भी मेहनत की है, अब उसका लाभ आपको दिखाई देगा। आप अपने वित्त के साथ स्थिर और खुश महसूस कर सकते हैं। यदि आप स्वास्थ्य समस्याओं का सामना कर रहे हैं, तो सुनिश्चित करें कि आप अपना अतिरिक्त ध्यान रखें। महीने के अंत तक कोई नया अवसर या व्यावसायिक संभावना आपके सामने आ सकती है। आप में से कुछ अपने कौशल में महारत हासिल करेंगे और अपने सपनों को पूरा करेंगे। आप जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से आपको सफलता प्राप्त करते हुए देखेंगे। कोई अप्रत्याशित धन आपके पास आएगा।
शुभ अंक- 5, 8
शुभ रंग- बैंगनी, सुनहरा

तुला (23 सितंबर - 22 अक्टूबर)

इस महीने आप अपने काम के लिए काफी यात्राएं करेंगे। चीजें तेजी से आगे बढ़ेंगी। आपके काम का माहौल उच्च ऊर्जा से भरा है। सुनिश्चित करें कि जल्दबाजी में निर्णय न लें। वित्त के मामले में एक महत्वपूर्ण वृद्धि होगी, आपने जो भी निवेश किया है, अब आप उसके परिणाम देखेंगे। अप्रत्याशित धन आपके पास आ सकता है, धैर्य रखें। अपने स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें, आप में से कुछ बीमार पड़ सकते हैं या चोट का सामना कर सकते हैं। आप अभिभूत या थका हुआ महसूस कर सकते हैं, लेकिन उम्मीद न करें कि आप जो कुछ भी चाहते हैं उसे प्राप्त करने के बहुत करीब हैं।
शुभ अंक- 7, 9
शुभ रंग- भूरा, गुलाबी

वृश्चिक (23 अक्टूबर - 21 नवंबर)

इस महीने आपके करियर के मामले में आप थका हुआ महसूस करेंगे, माहौल चुनौतीपूर्ण है। कोई आपको धोखा दे सकता है या आपके पीछे बात कर सकता है लेकिन चीजें बदल जाएंगी इसलिए चिंता न करें। सहकर्मियों के बीच संघर्ष या अहंकार का टकराव हो सकता है।
वित्तीय संदर्भ में आपके पास पैसा बनाने के बहुत सारे अवसर हैं लेकिन निवेश करने से पहले सावधान रहें। यदि आप कुछ स्वास्थ्य समस्या का सामना कर रहे थे, तो अब ठीक होने का समय है। अचानक स्थान परिवर्तन देखा जा सकता है, साझेदारी का कोई प्रस्ताव आपके पास आएगा। आप में से कुछ को जीवन के दो रास्तों के बीच चयन करना पड़ सकता है।
शुभ अंक- 3, 5
शुभ रंग- हरा, पीला

धनु (22 नवंबर - 21 दिसंबर)

करियर के लिहाज से इस महीने आपके सामने दो रास्ते आएंगे। आपके पास वर्तमान नौकरी में बने रहने या एक नया रास्ता अपनाने का विकल्प हो सकता है।
वित्तीय मामलों में आप खुद को फंसा हुआ या प्रतिबंधित महसूस कर सकते हैं। पैसे कमाने के लिए बॉक्स के बाहर सोचें।
अब बहुत लंबी बीमारी या चोट से उबरने का समय है। आप में से कुछ को अस्थायी वित्तीय कठिनाइयों या नुकसान का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन चिंता न करें कि आपके पास संकट से बचने के लिए पर्याप्त पैसा है। अंत में चीजें आपके पक्ष में हो जाएंगी। गर्भावस्था उन लोगों के लिए देखी जा सकती है जो एक बच्चे के लिए तरस रहे हैं।
शुभ अंक- 2, 5
शुभ रंग- हरा, नीला

मकर (22 दिसंबर - 19 जनवरी)

इस महीने आप अपने करियर में रचनात्मक महसूस करेंगे, लोग आपके विचारों और कड़ी मेहनत के लिए आपकी प्रशंसा करते हैं। आपकी सभी वित्तीय कठिनाइयां अब खत्म हो गई हैं, विभिन्न स्रोतों से पैसा आपके पास आएगा।
आपके सभी प्रयास अब फलीभूत हो रहे हैं। किसी भी स्वास्थ्य समस्या से उबरने के लिए अकेले कुछ समय बिताना सुनिश्चित करें। लोग आपसे खौफ में हैं, वे चाहते हैं कि आप नेतृत्व करें, वे आपकी बात सुनेंगे लेकिन अहंकारी मत बनो और सुनिश्चित करो कि आप जमीन से जुड़े रहें। कोई उन्हें जीवन में आगे ले जाने के लिए एक आध्यात्मिक गुरु की तलाश कर सकता है।
शुभ अंक- 2, 3
शुभ रंग- बैंगनी, काला

कुंभ (20 जनवरी - 18 फरवरी)

करियर के मामले में इस महीने आप मूल्यवान महसूस कर सकते हैं। उच्च पद पर बैठा कोई व्यक्ति आपके प्रति उदार है।
वित्त के मामले में आपकी सभी कड़ी मेहनत रंग लाएगी, यदि आपने अतीत में कोई निवेश किया है तो अब आप इसका लाभ उठाएंगे। आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार हो रहा है, प्रकृति में कुछ समय अवश्य व्यतीत करें। सभी असफलताएं कठिनाइयां हैं जिनका आपने अतीत में सामना किया था, इससे सीखें, ताकत इकट्ठा करें और इसके लिए लड़ें क्योंकि अब आप सफलता के बहुत करीब हैं।
शुभ अंक- 3, 9
शुभ रंग- सुनहरा, भूरा

मीन (19 फरवरी - 20 मार्च)

करियर के मामले में इस महीने आप महत्वाकांक्षी, बहादुर महसूस कर सकते हैं और कुछ कार्य कर सकते हैं। यदि आप पदोन्नति की उम्मीद कर रहे थे, तो अब समय है।
पैसों के मामले में कोई आपको धोखा दे सकता है या चोरी या धोखाधड़ी हो सकती है, इसलिए सावधान रहें। अच्छे स्वास्थ्य में रहने के लिए कुछ समय ध्यान या प्रकृति में बिताएं। एक बुजुर्ग पुरुष आपका मार्गदर्शन कर सकता है या आपको कुछ मूल्यवान सलाह दे सकता है, सुनिश्चित करें कि आप उनकी सलाह को गंभीरता से लेते हैं।
शुभ अंक- 2, 7
शुभ रंग- पीला, बैंगनी

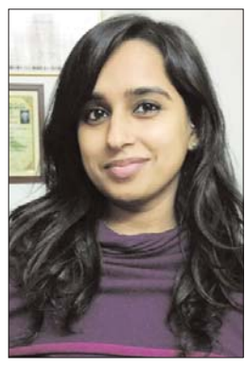

आस्था एम साहनी